अनुवाद की भाषावैज्ञानिक समस्याएँ

ANUVAD KI BHASHAVYGYANIK SAMASYAYEM

Thesis submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

for the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

By

BABU K. VISWANATHAN

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF LANGUAGES

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

KOCHI – 682 022

2000

DECLARATION

I here by declare that the thesis entitled 'ANUVAD KI BHASHA VYGYANIK SAMASYAYEM' has not previously formed the basis of the award of any degree, diploma, associateship, fellowship or other similar title or recognition.

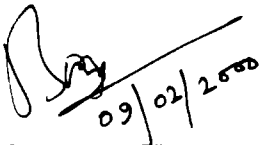

Department of Hindi

School of Languages

BABU K. VISWANATHAN

Cochin University of Science and Technology
Cochin – 682 022

CERIFICATE

This is to certify that this thesis entitled 'ANUVAD KI BHASHA VYGYANIK SAMASYAYEM' is a bona fide record of work carried out by Mr. BABU K. VISWANATHAN under my supervision for the Degree of Ph. D and no part of this has hither to been submitted for a degree in any university.

Department of Hindi

School of Languages

Devaki
07-02-2000
DR. N.G. DEVAKI
Supervising Teacher

Cochin University of Science and Technology
Cochin – 682 022

पुरोवाक्

भाषा मनुष्य की सहचरी है, भावों को अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत क्षमता भाषा में रहती है। शुरु में तो भाषा एक थी, लेकिन मनुष्य जब अनेक समाजों में बँट गए, उनकी भौतिक सुविधाओं का जब विकास होने लगा और उनकी आवश्यकताएँ जब बढती गईं तब उन्हींके अनुरूप भाषा में भी कई प्रकार के परिवर्तन उपस्थित होने लगे। इस प्रकार विकास के कई सोपानों को पारकर फिलहाल भाषा का जो पक्ष, विकास की ओर अधिक उन्मुख है, वह है उसका 'प्रयोजनात्मक पक्ष'-प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी वाणिज्यिक आदि कई संदर्भो में भाषा के प्रयोजनात्मक पक्ष का वर्गीकरण तो हो सकता है और अनुवाद भी इसका एक महत्वपूर्ण पहलू है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अद्यतन समाज में अनुवाद का महत्व काफी बढ़ गया है। सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, राजनीतिक, आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद का महत्व इतना बढता जा रहा है कि अनुवाद खुद अध्ययन का एक आधार बन गया है। हिन्दी - अग्रेज़ी अनुवाद के परिपार्श्व में महत्व इस दृष्टिकोण से भी रहता है कि राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में इससे काफी हद तक सहायता प्राप्त की जा सकती है। दो भाषाओं याने दो भाषाओं के पाठकों के बीच समन्वय स्थापित करनेवाला अनुवाद एक तरफ सामाजिक उन्नति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है तो दूसरी तरफ भाषाओं के विकास के परिपार्श्व में भी इसका अशंदान कम

महत्वपूर्ण नहीं है। भाषा एवं अनुवाद के प्रति शोधार्थी के मन में जो लगाव है वही 'अनुवाद की भाषावैज्ञानिक समस्याएँ' नामक विषय चुनने का आधार है। प्रकारंतर से शोधार्थी यहाँ पर यह भी जोडना चाहेगा कि अनुवाद की सफलता के परिप्रेक्ष्य में भाषावैज्ञानिक तत्वों की भी बहुत बडी भूमिका रहती है। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान से आबद्ध अनुवाद तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी भाषाविज्ञान से सहारा ग्रहण करते हुए अपना स्वरूप निश्चित कर लेता है। इस प्रसंग में यह भी कहा जा सकता है कि भाषाविज्ञान के सभी पक्षों का अनुवाद के साथ उतना सीधा सरोकार या संबंध नहीं है। ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप वाक्य, लिपि आदि भाषाविज्ञान के प्रमुख तत्वों के प्रमुख पक्षों को लेकर अनुवाद की विशिष्टताओं का अध्ययन उनके आलोक में करने का, शोधार्थी ने इस शेध - प्रबंध के माध्यम से प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छः अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय का नाम 'अनुवाद और भाषाविज्ञान' है। अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए, उसके विविध प्रकारों का परिचय देते हुए, भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के संदर्भ में अनुवाद की विशिष्टताओं को समझने का, इस अध्याय में शोधार्थी ने प्रयास किया है।

शोध-प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय है 'अनुवाद की ध्वनिवैज्ञानिक समस्याएँ। अनुवाद के प्रसंग में प्रयुकत की जानेवाली समान ध्वनियों, लगभग समान ध्वनियों,

भिन्न ध्वनियों, नितांत भिन्न ध्वनियों की चर्चा करते हुए लिखित, मौखिक एवं मशीनी अनुवाद के परिपार्श्व में अनुवाद की समस्याओं को विश्लेषित करने का इस अध्याय में शोधार्थी का प्रयास रहा है।

'अनुवाद की शब्दवैज्ञानिक एवं अर्थवैज्ञानिक समस्याएँ नामक तृतीय अध्याय में शब्द एवं अर्थ पर साथ साथ विचार करते हुए शब्द की परिभाषा एवं उसके विविध प्रकार, अनुवाद के प्रसंग में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों की रचना विधियाँ, शब्द-कला एवं अनुवाद, अर्थ एवं उससे संबद्ध विभिन्न सिद्धांत, अनुवाद के प्रसंग में शब्द एवं अर्थ, अर्थ-निर्धारण की विविध प्रणालियाँ, अर्थ के विभिन्न प्रकार एवं अनुवाद आदि विभिन्न मुद्दों पर रोशनी बिखेर दी गई है।

शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय का नाम 'अनुवाद की रूपवैज्ञानिक समस्याएँ' हैं। अर्थ-तत्व एवं संबंध- तत्व पर विचार करते हुए, भाषा में संबंधतत्वो की महत्वपूर्ण भूमिका की तरफ नज़र डालते हुए काल, पुरुष, लिंग, वचन एवं कारक-विभक्तियों के संदर्भ में अनुवाद की समस्याओं को समझने की, इस अध्याय में शोधार्थी ने कोशिश की है।

'अनुवाद की वाक्यवैज्ञानिक समस्याएँ' नामक पंचम अध्याय में शोधार्थी की कोशिश वाक्य-भेद एवं संरचना, वाक्य-निर्माण की विविध पद्धतियाँ, वाक्य - रचना के प्रकार, वाक्य के अवयव, बाहरी एवं भीतरी संरचना आदि विभिन्न मुद्दों पर

दृष्टिनिक्षेप करते हुए, उनके संदर्भ में अनुवाद की रामस्याओं को समझना रही है।

'अनुवाद एवं लिपिविज्ञान' नामक अध्याय में लिपि की दृष्टि से हिन्दी, अंग्रेज़ी भाषाओं की विशिष्टताओं को समझने का प्रयास करते हुए, रोमन एवं नागरी लिपि की पारस्परिक तुलना करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रबन्ध के अंत में उपसंहार प्रस्तुत किया गया है और शोध की नवीन वैज्ञानिक प्रणाली पंचसूत्री कार्यक्रम के अनुसार सहायक ग्रथ सूची भी प्रस्तुत की गई है।

शोधार्थी ऐसा कोई दावा नहीं पेश करता कि उसका काम पूर्णतः सफल बन गया है। जितना उससे हो पाया है, उसका सुधिजनों की प्रेरणा से काफी संबंध है। शोधार्थी इस अवसर का उपयोग उन व्यक्तियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने केलिए भी कर रहा है जिन्होने आवश्यक पुस्तकों के अभाव में उसे समय समय पर जानकारी दी है, सुझाव दिया है। अपनी शोध - निदेशिका डॉ. एन. जी देवकी के उचित निर्देश एवं सह्योग के प्रति अपनी कृतज्ञता, भव्यता एवं एहसान को शब्दबद्ध करने की विधि शोधार्थी नहीं जानता, अत: यह कहना उचित समझता है कि "मूकं करोति वाचालं"।

शोध प्रबंध में आयी हुई त्रुटियों केलिए शोधार्थी क्षमा प्रार्थी है।

अस्तु!

बाबू. के विश्वनाथन
कोच्चिन विज्ञान व
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्चिन - 682 022

विषयानुक्रमणिका

विषय अनुवाद की भाषावैज्ञानिक समस्याएँ

भूमिका — पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय : अनुवाद और भाषाविज्ञान — 1-18

अनुवाद से तात्पर्य - अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ-अनुवाद के प्रकार - भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का महत्व - भाषाविज्ञान के प्रकार - अनुवाद एवं भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन - अनुवाद की सीमाएँ - निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - अनुवाद की ध्वनिवैज्ञानिक समस्याएँ — 19-48

ध्वनि की परिभाषा - अनुवाद में प्रयुक्त ध्वनियों के प्रकार - अनुवाद के प्रकार एवं ध्वनि - लिखित अनुवाद एवं ध्वनि - मौखिक अनुवाद एवं ध्वनि - मशीनी अनुवाद एवं ध्वनि - ध्वनिग्राम, संध्वनि एवं अनुवाद - निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - अनुवाद की शब्दवैज्ञानिक एवं अर्थवैज्ञानिक समस्याएँ — 49-87

शब्द की परिभाषा, उसके विविध प्रकार-अनुवाद के प्रसंग में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों की रचना विधियाँ - शब्द, कला, एवं अनुवाद - अर्थ एवं उससे सबद्ध सिद्धांत - अनुवाद के प्रसंग में शब्द एवं अर्थ - अर्थ निर्धारण की विविध प्रणालियाँ - अर्थ के विभिन्न प्रकार एवं अनुवाद - शब्द एवं अर्थविज्ञान के संदर्भ में अनुवाद संबंधी कुछ विशिष्ट बातें - निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : अनुवाद की रूपवैज्ञानिक समस्याएँ 88-131

रूप क्या है ? - अनुवाद के प्रसंग में रूपरचना का महत्व - संबधतचों के अनुवाद के संदर्भ में काल, पुरुष, लिंग, वचन, एवं कारक - विभक्तियाँ - रूपविज्ञान के संदर्भ में शब्दों के प्रकार एवं अनुवाद (संज्ञा - सर्वनाम - विशेषण - क्रिया क्रियाविशेषण आदि) - रूपरचना एवं अनुवाद के संदर्भ में कुछ उल्लेख्य बातें- निष्कर्ष

पंचम अध्याय - अनुवाद की वाक्यवैज्ञानिक समस्याएँ 132-163

वाक्य की परिभाषा एवं विशिष्टताएँ - वाक्य - भेद एवं संरचना - वाक्य निर्माण की विविध पद्धतियाँ और अनुवाद - वाक्य रचना के प्रकार एवं अनुवाद - वाक्य के अवयव तथा अनुवाद - अनुवाद में वाक्य की बाहरी एवं भीतरी संरचना - वाक्य विज्ञान के परिपार्श्व में अनुवाद की कुछ विशिष्ट बातें - निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : अनुवाद एवं लिपिविज्ञान 164-174

अनुवाद के प्रकार एवं लिपि - रोमन लिपि - देवनागरी लिपि- हिन्दी, अग्रेज़ी भाषाएँ व लिपि - रोमन एवं नागरी लिपि की पारस्परिक तुलना - परिवर्तन एवं परिवर्द्धन की दृष्टि से नागरी लिपि - निष्कर्ष

उपसंहार 175-177

सहायक - ग्रंथ - सूची 178-181

प्रथम अध्याय

अनुवाद और भाषाविज्ञान

अलग अलग व्यक्ति जब एक ही विषय पर सोचते हैं तो लक्ष्य एक होने के बावजूद भी सोचने की दिशाएँ अलग अलग रहती हैं, अर्थात् दृष्टिकोण भिन्न भिन्न रहता है। अनुवाद के संदर्भ में भी यह सर्वथा सही एंव सार्थक है। प्रत्येक अनुवादक यद्यपि यह जानता है और समझता है कि अनुवाद मूलत: एक प्रक्रिया है जिसका स्रोत - भाषा, लक्ष्य -भाषा एवं विषय की जानकारी से सीधा संबंध है, फिर भी अनुवाद को परिभाषित करने की जब भी उन्होंने कोशिश की, इसके किसी न किसी पक्ष पर ज़्यादा बल पड गया जिस कारण अनुवाद की परिभाषाएँ या तो एकपक्षीय बन गईं या व्याख्याएँ बन गईं।

ज़रा हम यह देख लें कि अनुवाद की प्रचलित परिभाषाएँ क्या हैं और अनुवाद के स्वरूप के संबंध में विद्वानों की धारणाएँ क्या हैं? सर्वप्रथम हम भारतीय अनुवाद - शास्त्रियों के विचारों पर गौर करें।

वैसे तो हम यह जानते हैं कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनुवाद की परंपरा पुराने ज़माने से ही चली आ रही है, मगर एक विषय - विशेष के रूप में इस पर चिंतन की शुरुआत अद्यतन समय में ही हुई है। अद्यतन युग में अनुवाद की विचार - चिंतन-विश्लेषण पद्धति पर जिन्होंने ज्यादा बल दिया, वे हैं, 'डॉ. भोलानाथ तिवारी'। उन्होंने अनुवाद को श्रमसाध्य कला मानते हुए उसकी प्रक्रिया पर ज्यादा बल दिया है और कहा है कि अनुवाद एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान एंव सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में उतारने का प्रयास है।[1]

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी - अनुवाद विज्ञान - पृ 28

उक्त परिभाषा में भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद को 'प्रयास' मानना पसंद किया है और इस प्रयास को सर्वाधिक व्यावहारिक बनाने के लिए उन्होंने 'यथासंभव' शब्द पर भी बल दिया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद की प्रक्रिया कुछ ऐसी है जिसे उतनी सरल नहीं कही जा सकती। इसके लिए एक भाषा में व्यक्त विचारों को उसके सारे संदर्भों में पहचानने की दक्षता के साथ साथ अभिव्यक्ति-कुशलता भी अनुवादक के पास होनी चाहिए। मतलब, आस्वादक के साथ साथ अनुवादक में लेखक के भी गुण सम्मिलित रहने चाहिए।

'डॉ. प्रभाकर माचवे' ने अनुवाद के वैज्ञानिक पक्ष पर बल देते हुए इसको एक बौद्धक व्यायाम माना है और इस व्यायाम का साधारण और असाधारण प्रतिभा से उन्होंने संबंद्ध जोडा है।[1]

इस लेख में उनका यह विचार झलकता है कि अनुवाद कोई भी कर सकता है, मगर उसमें सूक्ष्मता व सौंदर्य तभी आ सकते हैं जब करनेवाला व्यक्ति संक्षम हो। प्रकारांतर से यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने अनुवाद को मस्तिष्क या बुद्धि की वस्तु मानना अधिक उचित समझा है। भावना, कल्पना, अभिव्यंजना से अनुवाद का संबंध तो उन्होंने मान लिया है, परंतु इनकी दृष्टि में इन तीनों की संगति विशेषत: मस्तिष्क से संबद्ध है।

'डॉ. हरिवंशराय बच्चन' ने अनुवाद को हृदय-पक्ष से संबद्ध करते हुए उसमें मूल

(1) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 68

रचनाकार के भावों, भावनाओं पर बल देने की बात कही है। [1] इससे स्पष्ट है कि वे कलापक्ष को उतना महत्व नहीं देते हैं जितने कि भावपक्ष को। उनकी राय में विचारों का प्रभाव (impact) ही मुख्य है।

'जैनेंद्र कुमार' की दृष्टि में एक ओर अनुवाद 'मस्तिष्क पर अनुशासन' लाने का 'अभ्यास' है तो दूसरी ओर वह मूल कृति का, उसके पाठक पर जो प्रभाव पडता है उस प्रभाव को, अन्दित कृति के पाठक तक उसी रूप में लाने की एक क्रिया भी है।[2] इन धारणाओं को परस्पर संबद्ध करते हुए यह तो बताया जा सकता है कि 'जैनेंद्रकुमार' की दृष्टि में अनुवाद 'मस्तिष्क की कला' है।

'महादेवी वर्मा' ने अनुवाद को दुष्कर कार्य बताया है,[3] क्योंकि प्रत्येक भाषा की विशेषताएँ उसकी अपनी होती हैं और जब वे विशेषताएँ दूसरी भाषा में आती हैं, तब वे उस भाषा के लिए अपरिचित रहती हैं और समस्याएँ तब कुछ ऐसी उत्पन्न होती हैं कि अपने संस्कार के लिए अनुचित पोशाक पहनते समय एक व्यक्ति अपने भीतर महसूस करता है। ऐसी पोशाक या तो उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को आच्छादित करती है या उसे कौतुक का पात्र बना देती है।

---

(1) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 69

(2) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 70

(3) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 70

रचनाकार के भावों, भावनाओं पर बल देने की बात कही है। [1] इससे स्पष्ट है कि वे कलापक्ष को उतना महत्व नहीं देते हैं जितने कि भावपक्ष को। उनकी राय में विचारों का प्रभाव (impact) ही मुख्य है।

'जैनेंद्र कुमार' की दृष्टि में एक ओर अनुवाद 'मस्तिष्क पर अनुशासन' लाने का 'अभ्यास' है तो दूसरी ओर वह मूल कृति का, उसके पाठक पर जो प्रभाव पडता है उस प्रभाव को, अन्दित कृति के पाठक तक उसी रूप में लाने की एक क्रिया भी है।[2] इन धारणाओं को परस्पर संबद्ध करते हुए यह तो बताया जा सकता है कि 'जैनेंद्रकुमार' की दृष्टि में अनुवाद 'मस्तिष्क की कला' है।

'महादेवी वर्मा' ने अनुवाद को दुष्कर कार्य बताया है,[3] क्योंकि प्रत्येक भाषा की विशेषताएँ उसकी अपनी होती हैं और जब वे विशेषताएँ दूसरी भाषा में आती हैं, तब वे उस भाषा के लिए अपरिचित रहती हैं और समस्याएँ तब कुछ ऐसी उत्पन्न होती हैं कि अपने संस्कार के लिए अनुचित पोशाक पहनते समय एक व्यक्ति अपने भीतर महसूस करता है। ऐसी पोशाक या तो उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को आच्छादित करती है या उसे कौतुक का पात्र बना देती है।

---

(1) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 69

(2) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 70

(3) अनुवाद कला कुछ विचार - आनन्द प्रकाश खेमणी तथा वेद प्रकाश - लेख सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - पृ 70

पंरतु, महादेवी की इस धारणा को पूर्णत: सही नही कहा जा सकता, क्योंकि विभिन्न भाषाओं के बीच जो लेन-देन की प्रक्रिया चलती है, वही भाषाओं के विकास का आधार है और एक भाषा की विशेषताओं से दूसरी भाषा को अलग रखने का मतलब है उस भाषा की प्रगति के पथ में एक हद तक बाधा उपस्थित करना। हाँ। प्रत्येक भाषा की अपनी एक संस्कृति हो सकती है और उस संस्कृति को अनुवाद में लाना मुश्किल भी हो सकता है। लेकिन, यहाँ यह संगत है कि कोई भी भाषा संस्कार से शून्य नहीं है और एक भाषा की सांस्कृतिक विशेषताओं को, दूसरी भाषा की सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप ढालने की क्रिया ही अनुवादक की प्रतिभा का निकष है।

अब ज़रा हम पाश्चात्य चिंतकों के विचारों पर दृष्टिनिक्षेप करें। भारतीय विचारकों की अपेक्षा पाश्चात्य विचारकों ने अनुवाद पर अधिक गंभीरता से सोचा है। इसका कारण यह हो सकता है कि अनुवाद कार्य और इसपर चिंतन प्रथमत: पश्चिम में हुआ है।

अंग्रेज़ी शब्द 'Translation' लैटिन भाषा के 'Trans' और 'Lation' शब्दों के योग से निर्मित है। 'Trans' का मतलब है 'पार' और 'Lation' का आशय है 'नयन'। यों Translation का अर्थ हुआ 'एक पार से दूसरे पार ले जाने कि क्रिया'। (The removal, transfer or conveyance from one place or condition to another)

'यूजिन. ए. निडा' ने अनुवाद को परिभाषित करते हुए बताया है कि अनुवाद स्रोतभाषा के किसी सन्देश के लिए लक्ष्यभाषा में सबसे निकट, सहज समानता की

सृष्टि करना है।[1] यह समानता प्रथमत : अर्थ की होती है और द्वितीयत: शैली की।

'निडा' की उक्त परिभाषा से उनका यह विचार स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद में 'अर्थ' की अतिरिक्त प्रधानता है। मगर इसका मतलब कदापि यह नहीं समझना चाहिए कि 'शैली' कोई गौण चीज़ है, क्योंकि सबसे निकट, सहज समानता की जो बात उन्होंने कही है, उसका शैली से भी सीधा संबंध निकलता है।

'कार्टड' ने किसी एक भाषा की पाठ्य सामग्री का, दूसरी भाषा की पाठ्य सामग्री में प्रतिस्थापन को अनुवाद कहा है।[2] यहाँ अर्थ, भाव, शैली के अंतरण की बात स्पष्टत: न करते हुए भी उनकी परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसकी अन्विति पर इन्होंने कहाँ तक बल दिया है।

'एडवर्ड फिटज़ेराल्ड' ने व्यावहारिक धरातल पर अनुवाद के बारे में सोचने की कोशिश की है।[3] उनकी दृष्टि में अनुवादक को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग अनुवाद-प्रक्रिया में करना चाहिए और सफलता की बात तो उनकी राय में दूसरी है। 'भूस-भरित बान से जीवित गोरैया भली'-यही उनका सिद्धांत है।

अनुवाद की प्रक्रिया, परंपरा तथा उद्देश्य पर ज़ोर देते हुए उनमें से प्रत्येक पक्ष की, तथा उन सबकी समन्वित पृष्ठभूमि में अनुवाद को परिभाषित करने की कोशिश और भी अनेक मनीषियों ने की है। ऊपर जितनी भी परिभाषाएँ बताई गई हैं और

---

(1) प्रयोजनमूलक हिन्दी डॉ. दगल झाल्टे - पृ 73

(2) प्रयोजनमूलक हिन्दी डॉ. दगल झाल्ट - पृ 72

(3) प्रयोजनमूलक हिन्दी डॉ. दगल झाल्टे - पृ 72

जो नहीं बताई गई है, उन सबके परिदृश्य में अनुवाद पर विचार करते समय कुछ तथ्य हमारे सामने उपस्थित हो जाते हैं जिनका ब्योरा शोधार्थी यहाँ उचित समझता है।

1. अनुवाद के लिए लक्ष्यभाषा एवं स्रोतभाषा की आवश्यकता है और इन दोनों भाषाओं की उचित जानकारी अनुवादक के लिए अनिवार्यतः अपेक्षित है।

2. अनुवादक की दृष्टि व्यावहारिक तथा ईमानदारी से युक्त होनी चाहिए।

3. मूल रचना पढ़ते समय अनुवादक के मन में उस रचना का जो प्रभाव पडता है, उस प्रभाव को अनुवाद में लाना, अनुवादक को अपना कर्तव्य मान लेना चाहिए।

4. अनुवाद में प्रभाव लाने के लिए जिस शैली की अपेक्षा है, वही शैली अनुवादक को अपनानी चाहिए।

5. विषय की सही तथा उचित जानकारी अनुवादक के लिए अनिवार्य है।

6. अनुवाद करते समय अनुवादक के मन में यह बात रहनी चाहिए कि उसकी प्रतिबद्धता प्रथमतः मूल रचनाकार से है और द्वितीयतः पाठक वर्ग से।

7. मूल रचनाकार के लेखन-आदर्श से अनुवादक के लेखन - आदर्श की समानता साहित्यिक अनुवाद को सार्थक बनाने में सहायक बन सकती है।

8. अनुवादक जिस विधा का अनुवाद करता है, उस विधा की विशेषताओं, संभावनाओं की जानकारी उसके लिए अपेक्षित है।

9. अनुवाद के सिद्धांतों का व्यावहारिक ज्ञान तो अनुवादक को होना ही चाहिए।

इस प्रकार सारी परिभाषाओं के परिपार्श्व में विचार करने के उपरांत यह बताया जा सकता है कि अनुवाद किसी एक भाषा में अभिव्यक्त किसी लेखक के भावों, विचारों, अनुभवों, अनुभूतियों को उस भाषा की विशिष्टताओं के साथ, किसी दूसरी भाषा के लेखक द्वारा अपनी भाषा में उतारने की साधना है, साथ ही साथ यह तथ्यों के उलझन से समाज को सुलझाने का एक उपक्रम भी है।

अनुवाद के प्रकार

दो भाषाओं को परस्पर एक दूसरे के निकट लाकर, एक में वर्णित विचारों को, दर्पण की भाँति दूसरे में उतारने का प्रयास ही 'अनुवाद' कहा जाता है। यद्यपि अनुवाद के प्रकारों को निर्धारित करना थोडा मुश्किल कार्य है, फिर भी विवेचन-विश्लेषण की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए उसके कुछ प्रकारों को निर्धारित करना, अनुवाद के स्वरूप को समझने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

I प्रयोजन के आधार पर

1. लिखित अनुवाद

2. मौखिक अनुवाद

3. मशीनी अनुवाद

II. सामग्री के आधार पर

1. साहित्यिक विषयों का अनुवाद (जितनी भी विधाएँ है, उतने ही ऽ

(क) काव्यानुवाद

(ख) नाटकानुवाद

(ग) कथानुवाद

2. साहित्येतर विषयों का अनुवाद

(क) वैज्ञानिक

(ख) कार्यालयी, आदि।

3. साहित्यिक और साहित्येतर विषयों का समन्वित रूप।

(क) दर्शन

(ख) राजनीति, आदि।

III. प्रकृति के आधार पर

(i) (क) कथ्यबद्ध

(ख) कथ्यशैलीबद्ध

(ii) (क) शब्दानुवाद (साहित्येतर विषयों के संदर्भ में शैली महत्वपूर्ण नहीं है)

(ख) भावानुवाद (साहित्यिक, साहित्येतर (मिश्रित) विषयों का अनुवाद)

(ग) छायानुवाद (प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों के अनुवाद के संदर्भ में, विशेषत; एक ही कृति में दो भाषाओं का प्रयोग हो तो)

(घ) सारानुवाद (मौखिक अनुवाद, पत्रकारिता)

(ड़) व्याख्यानुवाद (मिश्रित विषयों का अनुवाद)

(च) रूपांतरण (विशेष संदर्भ में, परिवेश एकदम बदल दिया जाता है)

(छ) आशु अनुवाद - (मौखिक अनुवाद) (वार्तानुवाद)

(ज) लिप्यंतरण - (साहित्येतर विषयों के विशेष संदर्भ में)

(झ) आदर्श अनुवाद।

देश्य के आधार पर

1. अन्त : प्रेरित अनुवाद (स्वांत सुखाय)

2. परप्रेरित अनुवाद

भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का महत्व

यह तो हमने समझ लिया कि व्यापक अर्थ में भाषा, भावों, विचारों, अनुभवों, अनुभूतियों के संप्रेषण का एक विशिष्ट एवं सशक्त माध्यम है जिसका मुख्य उद्देश्य रहता है वक्ता या बोलनेवाले के मन की शांति या तुष्टि। अगर आप यह मानते हैं कि भाषा के बिना मनुष्य से संबद्ध किसी भी क्षेत्र की उन्नति लगभग असंभव-सी है तो यह स्वीकार करने में उतनी बडी दिक्कत नहीं होगी कि 'भाषाविज्ञान' का भी आधुनिक समाज में महत्व कुछ कम नहीं है।

विज्ञान तो 'विशिष्ट ज्ञान' है। विशिष्ट ज्ञान का मतलब है किसी भी वस्तु के, क्षेत्र के गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन से प्राप्त ज्ञान। इस दृष्टि से 'भाषाविज्ञान' पर विचार करें तो यह भाषा के सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन से प्राप्त ज्ञान निकलता है और भाषा का संसार के सभी व्यक्तियों से संबंध रहने के कारण यों मानने में भी कोई आपत्ति नहीं है कि यह संसार के प्रत्येक व्यक्ति से संबद्ध एक वैज्ञानिक प्रकार है।

भाषा की शुरुआत से लेकर, उसके अद्यतन विकास तक के जितने भी पहलुएँ हैं, उन सभी पहलुओं का, भाषाविज्ञान से संबंध रहा है।वस्तुत: यह कहने में भी हमें कोई हिचक नहीं होती कि भाषाविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसका प्रयोग, उपयोग प्रत्येक व्यक्ति जाने-अनजाने करता है। बच्चों की चेष्टाओं को समझते समय, उन्हें भाषा सिखाते समय, मन्दबुद्धियों की भाषा समझने की कोशिश करते समय और भाषा का अध्ययन करते समय वास्तव में भाषाविज्ञान का ही उपयोग किया जा रहा है।

यह रहा, भाषाविज्ञान का सामान्य अथवा स्थूल पक्ष। अब हम उसेक विशिष्ट या सूक्ष्म पक्ष पर थोडा विचार करें।

भाषाविज्ञान भाषा के इतिहास को भविष्य से मिलाने का प्रयास है जिसमें भाषा की संभावनाओं, विशेषताओं, व प्रवृत्तियों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया जा रहा है।

भाषा की संभावनाओं, विशेषताओं, व प्रवृत्तियों पर विचार करने की बात से ही यह स्पष्ट हो गया कि भाषाविज्ञान का अध्ययन कितना महत्वपूर्ण है। भाषा के ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप, वाक्य, लिपि आदि अलग अलग इकाइयों पर विस्तार से विचार करते हुए भाषाविज्ञान ने भाषा के विकास के लिए अनेक मार्ग खोल दिए और उन मार्गों से चलकर भाषा ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट भूमिका अदा की, जिसका एक सुपरिणाम है 'अनुवाद'। इसपर आगे हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

भाषाविज्ञान का ज्ञान की विविध शाखाओं से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष संबंध रहा है और इस संबंध ने ज्ञान की प्रत्येक शाखा में भाषा के शुद्ध एवं समुचित प्रयोग को कामयाब साबित किया है।

यह तो एक निर्विवाद तथ्य है कि किसी भी समाज एवं संस्कृति के अध्ययन के लिए भाषा से सहायता ली जा सकती है और यह सहायता जो है उसका आधार भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन ही है।

वाक् चिकित्सा के क्षेत्र में भाषाविज्ञान से विशेष उपयोग लिया जा रहा है क्योंकि चिकित्साशास्त्र के संदर्भ में, भाषावैज्ञानिक तत्वों का प्रयोग करने से वाक्-चिकित्सा की

अनेक गुत्थियाँ सुलझी जा सकती हैं। मन्दबुद्धियों को, प्रतिदिन चलनेवाले विभिन्न कार्यों से वाकिफ कराते समय भाषावैज्ञानिक तत्वों का ही सहारा लिया जा रहा है।

फिलहाल भाषा से संबद्ध, उसके आधार पर जितने भी 'मैशीनस्' विकसित हो गए हैं, उन सबके निर्माण के पीछे भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी हाथ रहा है और सबसे ध्यातव्य बात यह है कि भाषा की वैज्ञानिक प्रगति की दिशा में ही इनका उपयोग हो रहा है। किसी भी व्यक्ति के लिखने का ढंग या लिखावट देखकर, उसकी मानसिक विशेषताओं के बारे में बताने की जो पद्धति विकसित हो उठी है उसका भी भाषाविज्ञान से, विशेषतः उसकी शाखा 'लिपिविज्ञान' से विशेष संबंध है।

साहित्य के क्षेत्र में भाषाविज्ञान के महत्व के बारे में विशेष रूप से कुछ कहने की आवश्यकता शोधार्थी नहीं महसूस करता, क्योंकि स्पष्ट रूप से न तो सही, प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि भाषाविज्ञान का साहित्य से, सिर्फ साहित्य से नहीं, बल्कि सिनेमा, नाटक आदि विधाओं से कितना संबंध ठहरता है। इस संबंध से अवगत होने के कारण ही साहित्य में, नाटक में, सिनेमा में साधारण मुसलमान व्यक्ति का संस्कृतनिष्ठ वार्तालाप और ब्राह्मण परिवार के व्यक्ति का अरबी- फारसी पर अधिष्ठित वार्तालाप वह पसन्द नहीं करता, बल्कि उसपर कटाक्ष करता है।

इस प्रकार भाषाविज्ञान के प्रयोजनों पर विंहगम दृष्टि तो हम डाल चुके हैं, अब हम यह देखें कि भाषाविज्ञान के इतने सारे संदर्भ या पहलुएँ होने के बावजूद भी भाषावैज्ञानिक क्षेत्र में 'अनुवाद' का इतना महत्व क्यों है ?

इसका शीघ्र एवं स्पष्ट उत्तर यह होगा कि 'अनुवाद में दो भाषाओं पर विचार

होता है। स्रोत तथा लक्ष्य-यों कही जानेवाली दो भाषाओं की विशेषताओं को पहचानकर, उन्हें नहीं तो उनमें वर्णित विचारों को परस्पर एक दूसरे के निकट लाना ही अनुवाद का मुख्य उद्देश्य रहता है। इससे यह स्पष्ट विदित है कि 'अनुवाद' को सार्थक एवं सफल बनाने के लिए, अनुवादक के लिए यह अनिवार्य है कि वह दोनों भाषाओं की वैज्ञानिक विशेषताओं को अच्छी तरह पहचान तथा समझ लें। यह उतना आसान कार्य नहीं है, क्योंकि तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से ही नहीं बल्कि व्यतिरेकी दृष्टिकोण से भी इसपर विचार करना पडता है। दूसरे शब्दों में कह दिया जाय तो भाषावैज्ञानिक तथ्यों की नींव पर ही अनुवाद अधिष्ठित रहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे कि कहानी, उपन्यास और नाटक के तचों के आधार पर कहानी, उपन्यास और नाटक। हाँ, शोधार्थी तो यह कहेगा कि अनुवाद के तत्वों याने भाषावैज्ञानिक तत्वों से गुज़रना और अधिक मुश्किल है क्योंकि प्रत्येक भाषा की वैज्ञानिक विशेषताएँ उसकी अपनी रहती है। यह तो सही है कि एक ही परिवार के अंतर्गत आनेवाली भाषाओं के अनुवाद के संदर्भ में कठिनाई कुछ कम हो सकती है, लेकिन भिन्न भिन्न परिवारों में आनेवाली भाषाओं के बीच अनुवाद तो थोडा दुष्कर कार्य है। फिर भी, भाषाओं के वैज्ञानिक तत्वों को, उनकी विशेषताओं को जानने में रुचि रखनेवाला, उनके व्यावहारिक प्रयोग पर विशेष दृष्टिकोण रखनेवाला एक अनुवादक सचमुच सफल बन सकता है। शोधार्थी तो यह कहेगा कि उसकी सफलता सिर्फ एक अनुवादक की हैसियत से नहीं, बल्कि एक भाषावैज्ञानिक की हैसियत से भी आँक लेनी चाहिए।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अनुवाद की सीमाएँ

अमुक व्यक्ति द्वारा स्रोतभाषा में बताई हुई बात को दूसरे व्यक्ति द्वारा, लक्ष्यभाषा में उतारने का प्रयास ही सामान्यत: अनुवाद कहा जाता है। परंतु इसका आशय कदापि यह नहीं कि 'अनुवाद' के लिए हमेशा दो व्यक्तियों की ज़रूरत रहती है। किसी भी कृति का मूल रचनाकार, उस कृति का अनुवाद भी कर सकता है, लेकिन ऐसे अनुवादकों की संख्या परिमाण की दृष्टि से बहुत कम हैं और यही कारण है कि शोधार्थी ने मोटे तौर पर 'अनुवाद' के लिए दो व्यक्तियों की आवश्यकता पर दृष्टि डाली।

खैर, इस प्रकार अनुवाद करते और होते समय, मूल कृति के साथ साथ उस कृति का, उसके रचनाकार के व्यक्तित्व से जो संबध है, उस संबंध को भी अनुवादक को अनूदित करना पडता है। अर्थात् भाषा, कृति और रचनाकार के व्यक्तित्व के माध्यम से किसी कृति का, किसी समाज पर जो प्रभाव पडता है, उस प्रभाव को भी दूसरी भाषा और दूसरे रचनाकार के व्यक्तित्व के माध्यम से दूसरे समाज में अनुवादक को उतारना पड रहा है। थोडा सोचे तो यह व्यक्त हो जाता है कि कृति (यहाँ कृति से मतलब 'अक्षरबद्ध आशय' से है) ही दोनों में अन्तत: रह जाती है। तात्पर्य यह कि कृति को छोडकर भाषा, रचनात्मक व्यक्तित्व, समाज तीनों 'अनुवाद' के संदर्भ में भिन्न रहते हैं। इसे और भी स्पष्ट किया जाय तो यों बताया जा सकता है:-

1. स्रोतभाषा + कृतिकार का व्यक्तित्व + मूल कृति (अक्षरवद्ध आशय) -> समन्वित -> प्रभाव -> स्रोत भाषा भाषियों का समाज

2. लक्ष्यभाषा + कृतिकार का व्यक्तित्व + अक्षरबद्ध आशय -> समन्वित प्रभाव -> लक्ष्यभाषा भाषियों का समाज

यहाँ बात यह है कि भाषा के साथ कृतिकार के व्यक्तित्व और कृति का सही समन्वय होने पर ही समाज पर उसका असर पडता है। अनुवादक के पास अपनी भाषा और अपने व्यक्तित्व का प्रयोग, करने की आज़ादी नहीं है तो उसका अपने समाज पर क्या प्रभाव पड सकते हैं ? शायद इस ओर इंगित करके ही यों बताया गया है कि "असफल साहित्यकार ही अनुवादक बन जाता है।' मगर यह बात सही एवं निरापद नहीं है। ऐसा आरोप लगानेवालों को पहले यह जान लेना चाहिए कि 'अनुवाद' विज्ञान, शिल्प होने के साथ साथ एक 'कला' भी है। शोधार्थी इसे 'अपने आपको बाँधने की कला' कहना चाहेगा, क्योंकि यहाँ अनुवादक को अपनी भाषिक विशिष्टताओं यहाँ तक कि अपने व्यक्तित्व से भी दूर रहना पडता है और यह भी स्वीकार कर लें कि अपने आपको बाँधने का कार्य उतना आसान भी नहीं है। आप रस्सी लेकर अपने आपको बाँधने की जितनी भी कोशिश कीजिए, ठीक तरह से बाँध नहीं पाएँगे। अनुवादक की स्थिति किसी तस्वीर को देखकर, वहीं तस्वीर बनाने को उद्यत चित्रकार और किसी नृत्य को देखकर, वही नृत्य सीखने में मग्न नर्तक की जैसी है जिनमें मूल तस्वीर और मूल नृत्य के गुणों को ठीक उसी तरह देखने की हम उम्मीद नहीं कर सकते। उनकी क्षमता, उस श्रेणी के अन्य कलाकारों के साथ परखनी चाहिए, हाँ। 'अनुवाद' को एक विशिष्ट विधा के रूप में स्वीकृति मिल जानी चाहिए। यह तो सर्वथा स्वीकृत तथ्य है कि साहित्यिक (सर्जनात्मक साहित्य) के अनुवाद की तुलना में सूचनात्मक (तथ्यपरक) साहित्य का अनुवाद अधिक आसान है। इसका कारण यही हो

सकता है कि सूचनात्मक साहित्य में रचनाकार के व्यक्तित्व का कोई महत्व नहीं रहता और 'अर्थ' की गहराइयों में डुबकियाँ लगाने की भी वहाँ कोई आवश्यकता नहीं है।

'अनुवाद' को एक असफल कार्य मानकर उसके प्रतिकूल अनेक धारणाएँ प्रचलित हो चुकी है, जैसे कि, अनुवाद पाप है (शांवर मैन) अनुवाद असाध्य को साध्य बनाने की मात्र एक कोशिश है (विल्स्म) आदि।[1] लेकिन शोधार्थी की राय यह है कि 'अनुवाद' को कभी भी एक असफल कार्य नहीं मान लेना चाहिए। उसकी सफलता 'एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान एवं सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में उतारने के प्रयास की दृष्टि से है और इस परिदृश्य में ही उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। कम से कम यह तो नहीं भूलाया जा सकता कि 'अनुवाद' ने विश्व को एक कर दिया है। बहरहाल, प्रत्येक क्षेत्र में हम जो प्रगति देखते हैं, उसका 'अनुवाद' से प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध रहता तो है ही।

अनुवाद के संदर्भ में ध्यातव्य एक अन्य बात यह भी है कि 'प्रयोग की मात्रा' की दृष्टि से अविकसित या कम विकसित भाषा से विकसित भाषा में अनुवाद करना थोडा आसान हो जाता है, जबकि इस ख्याल से विकसित भाषा से अविकसित भाषा में अनुवाद करना थोडा मुश्किल है। इसका कारण यह है कि विकसित समझी जानेवाली भाषाओं में संकल्पनाएँ, धारणाएँ आदि अधिक विकसित रहती है, अतः अविकसित समझी जानेवाली भाषाओं से अनुवाद के संदर्भ में यहाँ कोई विशेष आपत्ति नहीं रहती। पूर्णतः सही शब्द न मिलने पर भी अनुवादक यहाँ कुछ कर सकता है। लेकिन इसके विपरीत, विकसित भाषा से, अविकसित भाषा में अनुवाद करते समय

(1) डॉ. विश्वनाथ अय्यर - अनुवाद कला (पृ - 47)

अनुवादक के मार्ग में अडचनें काफी रहती हैं। विकसित भाषा में जितनी भी बातें बताई गई हैं, उन सबको अविकसित भाषा में उतारना काफी कठिन रहता है। डॉ. एन.ई. विश्वनाथय्यर जी ने इस बात को छोटे-बडे वर्तनों और उनमें भरी वस्तुओं के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की है।[1]

यह तो सही है कि 'पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन, मूल से तुलना- अनवाद प्रक्रिया के इन पाँच सोपानों से गुज़रते समय अनुवादक को समस्याओं का सामना करना पडता है और कई समस्याओं का समाधान वह ढूढ भी नहीं पाता। लेकिन इसे पूर्णत: अनुवादक की असफलता नहीं मान लेनी चाहिए। यह तो 'अनुवाद' की विडंबना कही जा सकती है।

निष्कर्ष

अनुवाद के स्वरूप तथा विभिन्न पक्षों पर विचार करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ इसके विकास के विविध पहलुओं की तरफ प्रकाश डालने की कोशिश कर रही हैं। भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के परिपार्श्व में सोचने पर अनुवादक की विडंबनाओं का आभास मिलता है और भाषा के वैज्ञानिक तत्वों से अनुवाद का जो सीधा सरोकार है, वह भी मालूम हो जाता है। भाषा के वैज्ञानिक तत्वों के प्रति विशेष ध्यान देकर अनुवाद किया जाय तो निस्सन्देह वह सफल हो जाएगा, लेकिन यह सरल कार्य नहीं क्योंकि भाषा के वैज्ञानिक पक्ष का विकास प्रत्येक भाषा में, प्रत्मक संदर्भ में होता है और आधारभूत तत्व एक होने के बाबजूद

---

(1) डॉ भोलानाथ तिवारी - अनुवाद विज्ञान (पृ - 39)

भी एकरूपता का यहाँ नितांत अभाव है। यथासाध्य प्रयास ही यहाँ अनुवाद को सफल बनाने में सहायक हो सकता है।

द्वितीय अध्याय

अनुवाद की ध्वनिवैज्ञानिक समस्याएँ

यद्यपि किसी भी वस्तु से निकलनेवाली आवाज़ को, जो हम सुन सके, ध्वनि कह सकते हैं, फिर भी विशिष्ट संदर्भ में ध्वनि का कुछ विशिष्ट अर्थ ही निकलता है। वैज्ञानिक दृष्टि से ध्वनि 'वायुमंडलीय दबाव में परिवर्तन या उतार चदाव है'[1] तो भाषावैज्ञानिक दृष्टि से वह 'भाषा की वह लघुतम इकाई है जिसका उच्चारण और श्रोतव्यता की दृष्टि से स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है।[2] इसका मतलब यह है कि भाषाविज्ञान के संदर्भ में उस आवाज़ को हम ध्वनि नहीं कह सकते, जिसे हम सुन और लिख सकते हैं, मगर जिसका कोई अर्थ न हो। उदा: डंडा मारने से या पानी गिरने से निकलनेवाली आवाज़। जो भी हो, प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ध्वनि को अनुवाद के संदर्भ में लिया जा रहा है और इसी संदर्भ ध्वनि में होनेवाले परिवर्तनों तथा उनसे संबद्ध समस्याओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया जा रहा है।

ध्वनियों के मुख्यत: दो भेद निर्धारित किए गए हैं।

1. स्वर

2. व्यंजन

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी - भाषाविज्ञान - पृ 241

(2) डॉ भोलानाथ तिवारी - भाषाविज्ञान - पृ 241

कई आधारों पर, कई दृष्टियों से इनके भेद, उपभेद तो अनेक हो सकते हैं, पंरतु अनुवाद के संदर्भ में ये भेद, उपभेद उतने महत्व नहीं रखते। अतः इसपर विस्तार से विचार करने की आवश्यकता शोधार्थी महसूस नहीं करता। मोटे तौर पर यह समझना इस प्रसंग में काफी है कि 'स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख विवर से निकल जाती है और व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा आवाध गीत से निकल नहीं पाती।'[1] प्रकारांतर से यह भी कहना संगत है कि स्वर जहाँ स्वतंत्र रूप से उच्चरित होते हैं वहाँ व्यंजन स्वरों की सहायता से उच्चरित किए जाते हैं।

ध्वनियों के उच्चारण में अनेक चल-अचल अवयव काम आते हैं, जिनपर विचार करना भी इस अवसर पर आवश्यक नहीं लगता।

ध्वनि एवं अनुवाद के परिपार्श्व में विचार करते समय यह जानना ज़रूरी है कि 'ध्वनि' भाषा का आधार है और अनुवाद का आधार है 'भाषा'। इस तरह ध्वनि-अनुवाद के बीच माँ-बेटी का संबंध ठहरता है। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच उच्चारण में जो भिन्नता रहती है, उस भिन्नता को अनुवाद में लाने के लिए भी अनुवादक को ध्वनिविज्ञान से सहायता माँगनी पडेगी।

---

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी - भाषाविज्ञान - पृ 247

स्रोतभाषा की ध्वनि एवं लक्ष्यभाषा की ध्वनि

यद्यपि प्रत्येक भाषा की ध्वनि का अपना महत्व है फिर भी अनुवाद के प्रसंग में स्रोतभाषा की ध्वनि का, लक्ष्यभाषा की ध्वनि से थोडा अधिक महत्व ठहरता है क्योंकि लक्ष्यभाषा की ध्वनि, स्रोतभाषा की ध्वनि के आधार पर ही निर्मित की जाति है, विशेषत: लिप्यंतरण एवं अनुलेखन के संदर्भ में। स्रोतभाषा की ध्वनियों का, लक्ष्यभाषा में लिप्यंतरण या अनुलेखन करने के पश्चात्, इन दोनों भाषाओं के क्रम को थोडा परिवर्तित कर अर्थात् लक्ष्यभाषा को स्रोतभाषा और स्रोतभाषा को लक्ष्यभाषा के रूप में परिवर्तित करने के पश्चात्, पुनः ध्वनियों का लिप्यंतरण या अनुलेखन किया जाने पर यह बात और भी स्पंष्ट हो जाएगी।

उदाहरण के लिए स्रोतभाषा अग्रेज़ी के 'Court' शब्द को लें। लक्ष्यभाषा हिन्दी में इसका प्रतिलेखन इस तरह से किया जाता है कि 'कोर्ट'। लकिन स्रोतभाषा हिन्दी से 'कविता' शब्द को, लक्ष्यभाषा अंग्रेज़ी में लिखा जाता है 'Kavita'. स्पष्ट है कि प्रथम संदर्भ में स्रोतभाषा अंग्रेज़ी पर बल है, और द्वितीय में स्रोतभाषा हिन्दी पर।

अनुवाद में प्रयुक्त ध्वनियों के प्रकार

अनुवाद में प्रयुक्त ध्वनियों के अंतर्गत स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा की उन ध्वनियों की बात आती है जिनमें समानताएँ एवं असमानताएँ होती हैं। इस दृष्टि से ध्वनियों

स्रोतभाषा की ध्वनि एवं लक्ष्यभाषा की ध्वनि

यद्यपि प्रत्येक भाषा की ध्वनि का अपना महत्व है फिर भी अनुवाद के प्रसंग में स्रोतभाषा की ध्वनि का, लक्ष्यभाषा की ध्वनि से थोडा अधिक महत्व ठहरता है क्योंकि लक्ष्यभाषा की ध्वनि, स्रोतभाषा की ध्वनि के आधार पर ही निर्मित की जाति है, विशेषत: लिप्यंतरण एवं अनुलेखन के संदर्भ में। स्रोतभाषा की ध्वनियों का, लक्ष्यभाषा में लिप्यंतरण या अनुलेखन करने के पश्चात्, इन दोनों भाषाओं के क्रम को थोडा परिवर्तित कर अर्थात् लक्ष्यभाषा को स्रोतभाषा और स्रोतभाषा को लक्ष्यभाषा के रूप में परिवर्तित करने के पश्चात्, पुनः ध्वनियों का लिप्यंतरण या अनुलेखन किया जाने पर यह बात और भी स्पंष्ट हो जाएगी।

उदाहरण के लिए स्रोतभाषा अग्रेज़ी के 'Court' शब्द को लें। लक्ष्यभाषा हिन्दी में इसका प्रतिलेखन इस तरह से किया जाता है कि 'कोर्ट'। लकिन स्रोतभाषा हिन्दी से 'कविता' शब्द को, लक्ष्यभाषा अंग्रेज़ी में लिखा जाता है 'Kavita'. स्पष्ट है कि प्रथम संदर्भ में स्रोतभाषा अंग्रेज़ी पर बल है, और द्वितीय में स्रोतभाषा हिन्दी पर।

अनुवाद में प्रयुक्त ध्वनियों के प्रकार

अनुवाद में प्रयुक्त ध्वनियों के अंतर्गत स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभापा की उन ध्वनियों की बात आती है जिनमें समानताएँ एवं असमानताएँ होती हैं। इस दृष्टि से ध्वनियों

के चार प्रकार होते हैं।

1. समान ध्वनियाँ

2. लगभग समान ध्वनियाँ

3. भिन्न ध्वनियाँ

4. एकदम भिन्न ध्वनियाँ

समान ध्वनियाँ

समान ध्वनियों के अंतर्गत स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की, मोटे तौर पर समान ध्वनियों की बात आती है, जैसे अंग्रेज़ी G, B, M और हिन्दी ग्, ब्, म्। इन ध्वनियों के प्रयोग में, अनुवाद के संदर्भ में कोई कठिनाई नहीं होंती है और अपनी इच्छानुसार ऐसी ध्वनियों का प्रयोग अनुवादक कर सकते हैं।

लगभग समान ध्वनियाँ

इन ध्वनियों की तहत ऐसी ध्वनियाँ आती हैं जो कुछ बातों में समान होती हैं और कुछ बातों में असमान। जैस 'ल' और 'ळ' ध्वनियाँ.

भिन्न ध्वनियाँ

उच्चारण तथा श्रवण के स्तर पर भिन्न ध्वनियाँ इन ध्वनियों के अंतर्गत आती हैं। जैसे 'रमज़ान' के संदर्भ में प्रयुक्त की जानेवाली 'ज़' ध्वनि। यह वस्तुत: 'स' भी नहीं

है और 'ज़' भी नहीं। अत: इनका लिप्यंतरण या प्रतिलेखन करना मुश्किल सा हो जाता है। लेकिन मोटे तौर पर 'रमज़ान' के ही रूप में काम चलावे तो भी वैसी कोई बात उपस्थित नहीं होती। अनुवादक की सूझबूझ ही यहाँ काम आती है।

एकदम भिन्न ध्वनियाँ

एकदम भिन्न ध्वनियों से मतलब एक दूसरे से सर्वथा अलग ध्वनियों से है। जैसे 'प' के स्थान पर 'फ' या 'भ' का प्रयोग। ऐसी ध्वनियों से तो अनुवादक का संबंध रहता है और थोडी सावधानी बरत ले तो वह ऐसी ध्वनियों के प्रयोग से बच सकता है।

अनुवाद के प्रकार एवं ध्वनि

यद्यपि अनुवाद के बहुत सारे प्रकार हो सकते हैं, फिर भी ध्वनिविज्ञान के परिदृश्य में अनुवाद की समस्याओं पर विचार करते समय इसके मुख्यत: तीन प्रकार हमारे समक्ष आते हैं।

1. लिखित अनुवाद
2. मौखिक अनुवाद
3. मशीनी अनुवाद

लिखित अनुवाद

लिखित अनुवाद के संदर्भ में ध्वनिविज्ञान से संबद्ध समस्याओं का आधार

मुख्यत: पारिभाषिक शब्द है, इस बात को दूसरे शब्दों में कहा जाय तो अनुवाद में ध्वनिवाज्ञान की माँग सर्वाधिक करनेवाला क्षेत्र है, पारिभाषिक शब्दावली का क्षेत्र। पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद के संदर्भ में लिप्यंतरण, प्रतिलेखन की जो अतिरिक्त प्रमुखता रहती है, उसका ध्वनिविज्ञान से सीधा संबंध रहता है।

लिप्यंतरण की आवश्यकता निम्नलिखित स्थितियों में अनिवार्यत: हो जाती है।

1. जब कोई लिखित भाषा किसी दूसरी लिपि को सामाजिक, राजनीतिक तथा भाषिक कारणों से अपनाती है।

2. जब एक भाषा दूसरी भाषा में प्रयुक्त व्यक्तिवाचक अथवा स्थानवाचक शब्दों को अपनी लिपि में लिखती है।

3. जब किसी भाषा का कोई उद्दरण ज्यों-का त्यों किसी अन्य भाषा की अपनी लिपि में लिखा जाए।

4. जब किसी भाषा में अन्य भाषा के आगत शब्दों तभा मिश्र आगत शब्दों को लिखा जाए।"[1]

(1) अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग - डॉ. जी गोपीनाथन पृ 40

अब लिप्यंतरण क्या है - इस तरफ ध्यान दें। लिप्यंतरण का मतलब है स्रोतभाषा की वर्तनी में प्रयुक्त अक्षरों के समान अक्षर लक्ष्यभाषा में न होने पर लगभग समध्वनीय अक्षरों, निकट ध्वनीय अक्षरों या कुछ विशेष तथ्यों के आधार पर विशिष्ट अक्षरों का प्रयोग करना। स्रोतभाषा में वर्तनी तथा उच्चारण में कोई अंतर न हो तो, इस तरह लिप्यंतरण किया जा सकता है।

उदा - Academy - अकादमी

Report - रिपॉर्ट

स्रोतभाषा की वर्तनी पर ध्यान न देकर, उच्चारण को आधार बनाकर, लक्ष्यभाषा में उसके अनुरूप लिखने की पद्धति को प्रतिलेखन कहते हैं। जैसे 'Rousseau' को उसके उच्चारण के आधार पर 'रूसों' लिखना।

इन दोनों पद्धतियों पर नज़र डालने के पश्चात् एक बात हमारी समझ में आती है कि लिप्यंतरण, प्रतिलेखन-दोनों का आधार प्रमुखत: उच्चारण ही है। बात तो यह है कि लिप्यंतरण में वर्तनी पर भी बल दिया जाता है, लेकिन वर्तनी एवं उच्चारण में भिन्नता हो तो लिप्यंतरण नहीं किया जा सकता। यह स्वयं सबित करता है कि उच्चारण ही लिप्यंतरण में भी प्रमुख है। जो भी हो, अनुवादक अपनी सुविधा के अनुसार इनमें से किसी भी पद्धति का अनुसरण कर सकता है, मगर ध्यान में रखना चाहिए कि किसी शब्द स्रोतभाषा के सर्वथा निकट हो।

अब समस्या यह आती है कि स्रोतभाषा के किसी शब्द के यथार्थ उच्चारण से भिन्न कोई उच्चारण लक्ष्यभाषा में प्रचलित हो तो अनुवादक क्या करें। इस स्थिति में अनुवादक प्रचलित उच्चारण का ही प्रयोग कर सकता है क्योंकि अनुवादक का कर्तव्य स्रोतभाषा में बताई हुई बात को लक्ष्यभाषा-भाषियों तक पहुँचाना होता है और इस कार्य में लक्ष्य भाषाभाषी को कम प्रयास करना पडे तो वह अनुवादक की विजय मानी जाती है।

स्रोतभाषा के किसी शब्द के लिए लक्ष्यभाषा में एक से अधिक उच्चारण प्रचलित हो तो अनुवादक उन उच्चारणों में से सर्वाधिक प्रयुक्त उच्चारण को अपना सकता है जैसे रेस्टोरैंट, रेस्तोराँ, रेस्त्राँ आदि में से वह 'रेस्त्राँ' का प्रयोग कर सकता है। लक्ष्यभाषा के सभी उच्चारण बहुप्रयुक्त हों तो अनुवादक को जो उच्चारण स्रोतभाषा के सर्वाधिक निकट लगे, उसीका वह प्रयोग कर सकता है। जैसे, रिपोर्ट, रिपॉर्ट, इनमें से ' रिपॉर्ट' का प्रयोग। ऐसा भी हो सकता है कि लक्ष्यभाषा के ये सभी उच्चारण समानतः प्रचलित हो और समानतः स्वीकृत भी हो। इस संदर्भ में इन उच्चारणों में से किसी भी उच्चारण को वह अपना सकता है और प्रयोग कर सकता है। डेराडून, देहरादून की यही स्थिति है।

इस संदर्भ में ध्यातव्य एक बात यह है कि स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा की ध्वनि-व्यवस्था से अनुवादक को भली-भाँति परिचित होना चाहिए।

हिन्दी -अग्रेज़ी अनुवाद करते व्यंमय कुछ ऐसी बातें भी हैं जिनकी जानकारी अनुवादक के लिए अनिवार्यत: अपेक्षित है। अब हम उन बातों की चर्चा करें।

हिन्दी में दो स्वरों से या दो व्यंजनों से संयुक्त स्वर या संयुक्त व्यंजन बनाने की परिपाटी प्रचलित है और वह कुछ इस तरह से लिखा भी जाता है।

संयुक्तस्वर } (अ + ए) = ऐ (ऐनक)
(अ + ओ) = औ (औरत)

दीर्ध या दित्व व्यंजन (क् + क = क्क (पक्का)

संयुक्त व्यजन (र् + द् = र्द (सर्द)

अग्रेज़ी में इस तरह से अर्ध एवं पूर्ण ध्वनियों को मिलाने की पद्धति नहीं पाई जाती।

हिन्दी में अनुनासिक व्यंजन अलग से मिल जाते हैं तो अग्रेज़ी में इस तरह के व्यंजन अलग से प्राप्त नहीं होते। हिन्दी के अनुनासिक व्यंजन है, ङ, ञ, ण, न, म।

Report, Pension, Rate, Gathe - इन शब्दों को ले लीजिए। इन शब्दों में 'e' की स्थिति पर नज़र डालने से पता चलता है कि इसका उच्चारण प्रत्येक शब्द में भिन्न है। Report में इसका उच्चारण 'इ' की तरह है तो Pension में 'ए' की तरह। Rate में वह ठीक तरह से उच्चरित भी नहीं होती है तो Gathe में उसका उचारण

'ए' की तरह है जो कुछ दीर्घ लिया हुआ है। लेकिन हिन्दी में इस तरह से नहीं है। मोटे तौर पर प्रत्येक ध्वनि का उच्चारण वहाँ हमेशा समान रूप से रहता है।

उदा : खिडकी, दही, मोती, पानी

अंग्रेज़ी में व्यंजनों की भी स्थिति यही है।

Cash, Cheap, Coir - इन शब्दों को लीजिएगा। इनमें से Cash में c 'क' की तरह उच्चरित की जाती है तो cheap में उसका उच्चारण 'च' की भाँति है। 'Coir' में वह 'q' (क्वो) की तरह हो जाता है। इन्हें यथाक्रम स्वारानुक्रम और व्यंजनानुक्रम के अंतर्गत रखा जाता है।

ध्वनियों को उच्चरित करते समय कभी कभी कुछ ध्वनियों पर ज्यादा बल दिया जाता है, नहीं तो अर्थ में भी परिवर्तन आ सकता है। अंग्रेज़ी में Hour, Prize इन शब्दों को ले लीजिए। इनमें से प्रथम शब्द में 'H' पर थोडा अधिक ध्यान देना आवश्यक हो जाता है क्योंकि नहीं तो इसका उचारण 'our' जैसा हो जाएगा जो अर्थ में भी भिन्न है। Prize की भी यही स्थिति है। 'Z' पर ज़्यादा ध्यान देना यहाँ आवश्यक है, नहीं तो 'c' का उचारण 's' का जैसा हो जाएगा जिससे अर्थ में भी गडबडी आएगी। हिन्दी के संदर्भ में यह विशिष्टता उतनी स्पष्ट रूप से नहीं दिखाई देती।

शब्दों का उच्चारण करते समय, हम एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वानि पर साधारणत: चले जाते हैं। इस प्रकार एक द्वनि से दूसरी ध्वनि पर जाते समय कभी कभी हमें इन ध्वनियों के बीच थोडा अवकाश प्राप्त होता है तो कभी ऐसा अवकाश प्राप्त नहीं होता। यह कभी समस्या पैदा करता है। 'लडना' शब्द को ले लीजिए। इस शब्द का उच्चारण करते समय 'ड्' के तुरंत बाद हम 'ना' पर आ जाते हैं जिससे 'लडना' इस शब्द का अर्थबोध हमें हो जाता है। लेकिन 'ड्' के उच्चारण के बाद हम थोडा अवकाश ले तब उच्चारण इस तरह से हों जाता है कि 'लड ना'। यह अर्थ-संप्रेषण में बाधा पैदा करता है। 'लडना' का अर्थ है to struggle और 'लड ना' का अर्थ है Don't Struggle. अनुवादक को ऐसी बातों पर ध्यान देना ही चाहिए।

शब्द की ध्वनियों को उच्चरित करते समय ध्वनियों के उच्चारण के ढंग अर्थात् सुर के आधार पर कभी कभी अर्थ में भी परिवर्तन आ जाता है। 'मिला?' इस शब्द के उच्चारण में जो आकांक्षा छिपी रहती है, वह इस शब्द के सामान्य अग्रंज़ी अनुवाद 'Got' में नहीं आ सकती और ऐसा अनुवाद भी सही नहीं समझा जाएगा। अनुवादक को प्रत्येक भाषा की अभिव्यक्ति-प्रणालियों से परिचित होना चाहिए, तभी अनुवाद सार्थक एवं आकर्षक हो सकता है।

मौखिक अनुवाद

किसी व्यक्ति द्वारा कही हुई बात का दूसरे व्यक्ति द्वारा जिसे हम दुभाषिया कहते हैं, पुनःकथन मौखिक अनुवाद है। लिखित अनुवाद की अपेक्षा मौखिक अनुवाद में कठिनाई ज्यादा है क्योंकि मैखिक अनुवादक को अनुवाद करने के लिए उतना समय नहीं मिलता, यही नहीं मूल वक्ता के उच्चारण की विशिष्टताओं को समझना भी उसके मार्ग में मुश्किल पैदा कर देता है। मौखिक अनुवाद के इस संदर्भ में ध्वनि का विशेष महत्व है।

अब हम देख लें कि मौखिक अनुवाद के संदर्भ में होनेवाले इस प्रकार के ध्वनि-परिवर्तन के कारण क्या हैं और इसकी दिशाएँ कहाँ तक व्याप्त है?

1. शिक्षा

इस दृष्टि से होनेवाले ध्वनि परिर्तन का एक मुख्य कारण शिक्षा है। शिक्षित एवं अशिक्षित व्यक्ति के उच्चारण में जो भिन्नता होती है, इसे अनुवाद में लाना काफी मुश्किल है। शिक्षित व्यक्ति की बातो का अल्पशिक्षित व्यक्ति अगर अनुवाद करें या अशिक्षित या अल्पशिक्षित व्यक्ति की बातों का शिक्षित व्यक्ति अनुवाद करें, तब समस्याएँ होती है। यह न केवल मौखिक अनुवाद से संवद्ध एव समस्या है, बल्कि लिखित अनुवाद के संदर्भ में भी इससे संबध समस्याएँ होती है। स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभापा की अत्यधिक, पर्याप्त एवं अल्प जानकारी के परिदृश्य में इस तथ्य को समझ

लिया जा सकता है।

अनुवादक या दुभाषिया मूलभाषी की मानसिक स्थिति को भी समझने में सक्षम हो, तभी यह समस्या एक हद तक सुलझी जा सकती है।

2. भौगोलिक प्रभाव

भौगोलिक प्रभाव के कारण उच्चारण में जो विशेषताएँ होती है, उन्हें समझना और उनका (ध्वनि के संदर्भ में) अनुवाद करना कठिन हों जाता है। उदाहरण स्वरूप पश्चिमी प्रदेशों की भौगोलिक विशेषताओं के कारण वहाँ अग्रेज़ी भाषा बोलनेवालों के उच्चारण में वे सारी ध्वनियाँ नहीं आतीं जो हमारे उच्चारण में आती है। ऐसे संदर्भ में अग्रेज़ी ध्वनियों का अनुवाद करते समय अनुवादक या वहुभाषिए को सतर्कता बरतनी पडती है क्योंकि उसकी समझ में यह नहीं आता कि कौन-सी ध्वनि का उच्चारण हुआ है और उसका हिन्दी में किस तरह से प्रयोग होना चाहिए। अग्रेजी में सघोप ध्वनियों का उच्चारण नहीं है और मूर्धन्य ध्वनियाँ भी वहाँ उच्चरित नहीं होतीं। अनुवादक का अनुभव ही इस प्रसंग में सहायक बन सकता है।

3. मातृभाषा का प्रभाव

मातृभाषा के प्रभाव के कारण कभी कभी हम कुछ ध्वनियों का गलत उच्चारण करते हैं जो बाद में समस्या का कारण बन जाता है। उदाहरण के तौर पर मलयालम

के एक फिल्म का नाम है 'कडवॅ' जिसका लिप्यंतरण इस ढंग से दिया जा सकता है कि Kadavu। इस kadavu का उच्चारग कई ढंग से किया जा सकता है जैसे कि कडवॅ, कडवु, काडवॅ, कडाव, कडावु आदि। समस्या यहाँ यह है कि इनमें से कौन-सा शब्द अपनाया जाए? भारत में सभी लोग kadavu की सभी ध्वनियों से परिचित होने के कारण अपने अपने हिसाब से इसका उच्चारण करते हैं तो बाद में मूल मलयालम शब्द से वह काफी दूर हो जाता है। दूरदर्शन से संप्रेषित विविध भाषाओं के फिल्मों के नामों के अनुवाद के संदर्भ में यह बात समझी जा सकती है। कभी कभी उच्चारण, मूल शब्द से इतना दूर हो जाता है कि, परिचित शब्द भी हमें अनपाने से लगते हैं। अनुवादक की सतर्कता के सिवा इस समस्या का कोई और समाधान नज़र नहीं आता।

4. अवस्था या उम्र का प्रभाव

उम्र या अवस्था के अनुसार व्यक्तियों के उच्चारण में भिन्नता आती है, जिसमें कोई तर्क नहीं है। चार साल का बच्चा, पन्द्रह वर्ष का लड़का सत्तर वर्ष का व्यक्ति अगर एक ही ध्वनियों का उच्चारण करें तो भिन्नता नज़र आती है, यद्यपि इसमें अपवाद भी प्राप्त हो जाते हैं। अनुवादक को इन ध्वनियों को समझने में तो मुश्किल होती है, साथ ही साथ इनमें उच्चारण वैविध्य को अनुवाद में लाना भी एकदम कठिन हो जाता है। मान लीजिए कि किसी कहानी में एक बच्चे के साथ बूढे का वार्तालाप चित्रित किया गया है और अनुवादक को अनुवाद में उसे उतारना है। बच्चे और बूढे के उच्चारण

की ध्वन्यात्मक विशेषताओं को, और उनके वार्तालाप में ध्वनियों के उच्चारण की दृष्टि से जो अंतर होता है, उसको अनुवाद में उतारने में, उसे एकदम कठिनाई होगी ही। इसका कारण तो भाषा की वह स्थिति है जो एक ओर भाषा सीखने से संबद्ध है तो दूसरी ओर भाषा पूर्णत: सीखने के पश्चात् उसे सही ढंग से अभिव्यक्त न कर पाने की शारीरिक अक्षमता से आबद्ध है। ये स्थितियाँ तो प्रत्येक भाषा की अपनी होती हैं जिन्हें अनुवाद में लाना दुष्कर है।

5. मानसिक स्थिति

बोलनेवालों की मानसिक स्थिति का असर उनके उच्चारण पर भी पडता है। एक ही विषय से संबद्ध प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया प्रत्येक ढंग से होती है और प्रयुक्त किए जानेवाले शब्द, ध्वनियाँ भी अलग अलग से होते हैं। मृदभाषी ध्वनियों का उच्चारण मन्द गति से करते हैं तो कर्कश भाषी मृदु ध्वनियों का भी उच्चारण थोडी कर्कशता के साथ करते हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा अलग संदर्भ में उच्चरित की जानेवाली ध्वनियों में भी भिन्नता नज़र आती है। इस परिदृश्य में अनुवाद की कठिनाई ध्वनियों की मधुरता एवं कर्कशता को अभिव्यक्त करने से आबद्ध है। यहाँ इसपर ध्यान देना चाहिए कि कर्कशता से बोल दी जानेवाली मृदु ध्वनि भी बात को नीरस बना सकती है, अर्थ की अनर्थ बना सकती है। अनुवादक को इसपर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए।

6. पुरुष एवं स्त्री भाषा में अंतर

यद्यपि पुरुषों एवं स्त्रियों की भाषा में आम तौर पर कोई अंतर नहीं होता, फिर भी उच्चारण को अकर्षक बनाने के लिए जिन तरीकों को अपनाया जाता है, उनके ख्याल से देखें तो थोडा अंतर नज़र आता ही है। यह विशेषता अंग्रेज़ी भाषा के संदर्भ में विशेषत: आँकी जा सकती है। अनुवादक के लिए इस प्रसंग में कठिनाई यह है कि वह इस विशेषता को किस ढंग से स्पष्ट करें जबकि दोनों द्वारा प्रयुक्त ध्वनियों में कोई अंतर नहीं है। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि मूल भाषी अगर पुरुष हो तो अनुवादक भी पुरुष होना अच्छा रहेगा और मूल भाषी स्त्री हो, तो अनुवादक का स्त्री होना वाँछनीय समझा जाएगा। इससे उच्चारण की बारीकियों को पकडने में सहायता अवश्य प्राप्त हो सकती है।

7. प्रयत्नलाघव

मुखसुख या उच्चारण को सरल बनाने के लिए कभी कभी कुछ ध्वनियों को छोड दिया जाता है या जोड दिया जाता है।

उदा : स्कूल के लिए उस्कूल स्त्री के लिए इस्त्री जैसा उच्चारण।

साधारणत : यह अज्ञान के कारण होता है, लेकिन कभी कभी शिक्षित व्यक्ति भी मुखसुख का सहारा लेते हैं। भाषण के संदर्भ में अगर मुखसुख का सहारा लिया जाए

तो उतनी बडी समस्या नहीं होती क्योंकि अनुवादक चाहें तो सही ढंग से इसका उच्चारण कर सकता है या कोई और मार्ग अपना सकता है। लेकिन किसी साहित्यिक विधा में किसी आदमी के व्यक्तित्व की विशिष्टताओं को स्पष्ट करने के संदर्भ में ऐसे शब्दों का, ध्वनियों का प्रयोग किया गया है, तो वह निश्चय ही अनुवादक के लिए समस्या पैदा करेगी। इस हालात में अनुवादक को, या तो अनुदित शब्द में इस तरह का कोई परिवर्तन करना पडेगा नहीं तो उस व्यक्ति से व्यक्तित्व की विशिष्टताओं को किसी और ढंग में स्पष्ट करना पडेगा। जो भी हो अनुवादक के लिए यह एक समस्या है ही।

8) सामाजिक धार्मिक, संदर्भ

सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों का प्रभाव भाषा एवं ध्वनियों पर कभी कभी पडता ही है, किसी विशेष समाज में जीनेवाले लोगों की भाषा, दूसरे समाज के लोगों की भाषा से भिन्न लगने में कोई असाधारणता या अस्वाभाविकता नहीं है। ध्वनियों के संदर्भ में भी यह बात लागू हो सकती है। मुसलमानों का एक विशेष त्योहार है 'रमसान्' जिसका उच्चारण वस्तुत: 'रमसान्' नहीं कुछ और है, लेकिन इसका उच्चारण करना साधारण लोगों के लिए मुश्किल ही है। जो अरबी जानते हैं, वहीं इसका उच्चारण सहीं ढंग से कर पाते हैं और ऐसे शब्द अनुवाद के मार्ग में कठिनाई पैदा कर देते हैं। किसी समाज की विशेषताओं को भाषिक संदर्भ में स्पष्ट करने की स्थिति में

भी अनुवादक को इस तरह की कठिनाई हो सकती है। समाज एवं धर्म की तह में जाकर जानकारी हासिल करने के पशचात् ही इस तरह की समस्याएँ सुलझी जा सकती है।

9. शारीरिक क्षमता

शारीरिक क्षमता का प्रभाव उच्चारण पर भी पडता है। बीमारियाँ, वागिन्द्रिय की स्थिति आदि व्यक्ति के उच्चारण को प्रभावित करती हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। ऐसी स्थिति में किसी व्यक्ति जो इस तरह की किसी बीमारी से पीडित है, से उच्चरित ध्वनियों को समझना और उन ध्वनियों को उनकी विशिष्टताओं के साथ प्रस्तुत करना अनुवादक के लिए कठिनाई पैदा करते हैं। यह समस्या मौखिक अनुवाद के संदर्भ में उनकी नहीं होती जितनी कि लिखित अनुवाद के संदर्भ में किसी व्यक्ति की चारित्रिक विशिष्टताओं को स्पष्ट करने के संदर्भ में होती है।

10. अभिज्ञता

कभी कभी अभिज्ञता भी ध्वनिविज्ञान के संदर्भ में अनुवाद की एक समस्या बन जाती है। हाल ही में प्रकाशित एक फिल्म का नाम है 'Daud। हिन्दी भाषा की सीमित जानकारी रखनेवाले एक व्यक्ति ने इसका लिप्यांतरण इस तरह से किया था कि 'दाऊद'। इसमें उस व्यक्ति को गलत नहीं कहा जा सकता क्योंकि D, A, U, D

इन ध्वनियों से वह परिचित है और उसका लिप्यंतरण इस ढंग से भी किया जा सकता है। समस्या यहाँ तभी होती है जब कोई अनुवादक इस फिल्म के बारे में बिना जाने, उस आदमी के मुँह से यह नाम सुनने के पशचात् उसका प्रयोग करने लगता है।

11. व्यंग्य एवं ध्वनि

वक्ता कभी कभी कुछ ध्वनियों का उच्चारण व्यंग्य के संदर्भ में करता है, जिसकी जानकारी अनुवादक के लिए सर्वथा आवश्यक है।

He is too good. इस वाक्य में too जो शब्द आया है, इसका साधारण संदर्भ में अर्थ है 'बहुत'

'वह बहुत अध्वा है'। लेकिन व्यंग्य के संदर्भ में इसका उच्चारण करना हो तो 'too' को थोडी दीर्घता के साथ उच्चरिता किया जाता है, तब अर्थ भी एकदम विपरीत हो जाता है। ऐसे प्रयोग से, अनुवादक अनभिज्ञ हो तो, अनुवादक की समझ में यह बात नहीं आ गई हो तो कठिनाई पैदा होती है।

मशीनी अनुवाद

मशीनी अनुवाद के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि, इस क्षेत्र में ध्वनि से संबद्ध समस्याएँ उतनी जटिल नहीं हैं। 'इसका कारण यह है कि यहाँ मानक लिपि सिद्धांत के आधार पर स्रोतभाषा की प्रत्येक ध्वनि के लिए लक्ष्यभाषा में ध्वनि

निर्धारित की गई है।

लिखित, मौखिक एवं मशीनी अनुवाद की समस्याओं पर, आम तौर पर विचार करने के पश्चात् यह भी कहा जा सकता है कि इनमें से प्रत्येक क्षेत्र की अपनी समस्याएँ है, साथ ही साथ कुछ समस्याएँ ऐसी भी हैं जिनका इन सभी क्षेत्रों से संबंध रहता है।

लिखित अनुवाद के ख्याल से कहें तो इस अनुवाद से जुडे व्यक्तियों को हम तीन वर्गों में बाँट सकते हैं।

1. स्रोत एवं लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार रखनेवाला

2. स्रोतभाषा की सामान्य एवं लक्ष्यभाषा की पर्याप्त जानकारी रखनेवाला

3. सिर्फ लक्ष्यभाषा की जानकारी रखनेवाला

कहने का मतलब यह है कि लिखित अनुवाद से संबद्ध व्यक्ति या तो समीक्षक होता है नहीं तो सहृदय। इस प्रकार समीक्षकों, सहृदयों के बीच विकसित लिखित अनुवाद से मौखिक अनुवाद भिन्न होता है। मौखिक अनुवाद सुनकर इसकी विस्तृत समीक्षा करने की बात साधारणत: कोई नहीं सोचता। मौखिक अनुवाद में तथ्यों के संप्रेपण पर ज्यादा बल दिया जाता हैं और इस आधार पर इसका आस्वादन भी होता है। मौखिक अनुवाद का फायदा साधारण जनता भी उठा सकता है। लेकिन इस अनुवाद में अर्थ को अनर्थ न कर देने में अनुवादक का विशेप ध्यान रहना चाहिए।

मशीनी अनुवाद का संबंध इने गिने व्यक्तियों से है और इस अनुवाद में कोई किसीको दोष भी नहीं देता। अनुवाद के इन तोनों क्षेत्रों की समस्याओं पर विचार करते समय उपर्युक्त तथ्यों पर भी नज़र डालना अच्छा रहेगा।

इस प्रसंग में ध्यातव्य एक और बात अनुवाद के क्षेत्र में अधिकाधिक उपयोग में आनेवाले ध्वनिविज्ञान के पक्षों से संबंधित है। इस संदर्भ में ध्वनिविज्ञान के मुख्यत: दो प्रकारों का नाम लिया जा सकता है।

1. वर्णनात्मक ध्वनिविज्ञान

2. तुलनात्मक ध्वनिविज्ञान

यह तो सर्वविदित है कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच होता है और दोनों भाषाओं की ध्वनियों को समझना अनुवाद का आधारभूत पहलू है। इस प्रकार स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की ध्वनियों को, उनकी सारी विशेषताओं के आलोक में पहचानना और उनमें से सर्वाधिक उचित ध्वनि को अनुवाद में लाना-यह वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक ध्वनिविज्ञान का ही कार्य है और अनुवादक एवं ध्वनिविज्ञान के पारस्परिक संबंध का आधार भी वस्तुत: यही तथ्य है।

अब शोधार्थी ध्वनिविज्ञान के संदर्भ में अनुवाद में दिखाई देनेवाले कुछ विशेष मुद्दों की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहेगा। यहाँ इसपर ध्यान देना चाहिए

कि ये साधारणतः लिप्यंतरण, अनुलेखन के संदर्भ में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्द नही हैं, लेकिन अगर कभी इनका लिप्यंतरण या अनुलेखन करना भी पड जाए तो इस तरह की समस्याएँ हो सकती हैं।

1. poor - पुवर (प + उ + व)

door - डोर (ड + ओ)

roof - रूफ (र + ऊ)

यहाँ अंग्रेज़ी के तीनों शब्दों में '0' ध्वनि का, दो बार प्रयोग हुआ है। लेकिन तीनों शब्दों में इनका उत्तारण अलग अलग ढंग से है। पहले शब्द में 'प' के साथ 'उ' एवं 'व' ध्वनियों का सम्मिश्रण हो गया है और वहाँ 'पुवर' के रूप में इसका उच्चारण है। दूसरे में 'ड' के साथ इन ध्वनियों का मिश्रण हुआ है, लेकिन उच्चारण में वह 'ओ' जैसा हो जाता है 'डोर'। 'रूफ' शब्द में इन ध्वनियों का उच्चारण 'ऊ' जैसा हो गया है। यहाँ समस्या यह है कि किसी अनुवादक के पास अगर 'Poor' शब्द लिप्यंतरण के लिए आता है तो वो कर देता है 'पुवर' और इसके पश्चात् अगर उसके सामने 'Door' अब आ जाए तो वह इसका लिप्यंतरण 'डुवर' के रूप में कर सकता है। कहने का मतलव यह है कि एक ही ध्वनि का अलग अलग उच्चारण अनुवाद के मार्ग में अवश्य कठिनाई पैदा कर देता है।

Present	Present
(पुरस्कार)	(उपस्थित होना)
Please	Please
(कुपया)	(खुश करना)
Light	Light
(हल्का)	(प्रकाश)
Bank	Bank
(बैंक)	(किनारा)
Watch	Watch
(घडी)	(निरीक्षण करना)

उपरोक्त ये ध्वनियाँ लेखन की दृष्टि से पूर्णत: एवं उच्चारण की दृष्टि से सामान्यत: एक ही प्रकार की हैं। ऐसी ध्वनियों से बने हुए शब्द अनुवादक के पास आते हैं तो अनुवादक को गडबडी होती है। विभिन्न अर्थ देनेवाले, समान ध्वनियों से बने इन शब्दों के किसी एक पक्ष से वह अच्छी तरह से परिचित हो तो, उसकें मन में यह समस्या अचानक उठने लगती है कि उस शब्द की ध्वनियों के दूसरे पक्ष को, किस तरह से अलग ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है। इसे और भी व्यक्त किया जाय तो (Please) दो अर्थ देनेवाला अंग्रेज़ी का एक शब्द है जिसके अंतर्गत (प् P + ल् L +

इE + एA + सS + इE) इतनी ध्वनियाँ आती है। संदर्भ के अनुसार अनुवाद में 'Please' का लिप्यंतरण 'प्लीज' - इस प्रकार से किया है। अगर अनुवादक के पास 'खुश करना' इस अर्थ में इस शब्द का लिप्यंतरण करने की नौबत आ जाए, तो वह परेशान होने लगता है। इस प्रकार के अन्य शब्दों के संदर्भ में भी ऐसी समस्या उठ सकती है।

Check		Cheque
won		one
I		eye
Coat		Cot
Own		on
Dear		deer
सास	-	साँस
सवार	-	सँवार

ये लेखन की दृष्टि से भिन्न, किंतु उच्चारण के ख्याल से समान ध्वनियाँ हैं, जो भिन्न भिन्न अर्थ देती हैं। ऐसे शब्दों का अनुवाद यानि लिप्यंतरण भी अनुवादक के आगे समस्या पैदा कर देता है। इन शब्दों के अर्थ-अंतर को, ध्वनियों के माध्यम से स्पष्ट करने का दायित्व अनुवादक के मार्ग में अवश्य एक बाधा है।

(मैन्यूट) Minute Minute (मिनिट)

(विन्ट्) Wind wind (बैन्ट्)

ये लेखन की दृष्टि से समान, परंतु उच्चारण की दृष्टि से भिन्न ध्वनियाँ है, जो अलग अर्थ देती हैं। इन शब्दों के प्रतिलेखन के विषय में वैसे कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होती, बस अनुवादक को यह जानना चाहिए कि यह अमुक शब्द है और अमुक संदर्भ में इसका प्रयोग हुआ है।

Technic - Technique

organise - organize

ये अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से एक ही रूप में प्रयुक्त की जानेवाली विभिन्न ध्वनियाँ है (nic, que) (ise, ize)। इनके प्रयोग को ले करके कोई परेशानी उपस्थित नहीं होती क्योंकि इनमें से किसीका भी प्रयोग करे तो कहीं कोई भिन्नता नज़र नहीं आएगी।

Honour (ओनर)

Psychology (सैकोलजी)

इन शब्दों पर, इनके उच्चारण पर नज़र डालने से पता चलता है कि इनमें से प्रथम में 'H' का और द्वितीय में 'P' का उचारण होता नहीं है। ऊपर से देखने पर ऐसा भी लगता है कि इन शब्दों में से, अगर उन ध्वनियों को निकाल भी दिया जाय तो कोई

परिवर्तन नहीं होता। अनुवादक को ऐसे शब्दों के प्रयोग की अच्छी खासी जानकारी होनी चाहिए, नहीं तो अनुवाद अटपटा एवं हास्यास्पद लेगेगा। Know, knife, Neighbour - आदि शब्दों की भी यही स्थिति है।

हिन्दी एवं अंग्रेज़ी शब्दों में प्रयुक्त ध्वनियों की एक विशेषता यह भी है कि हिन्दी में ध्वनियाँ जिस तरह से लिखी जाती है, उस तरह से उनका उच्चारण भी होता है। प्रयत्नलाघव की दृष्टि से देखें तो इस बात का खंडन किया जा सकता है, लेकिन मोटे तौर पर इसमें वास्तविकता बहुत है।

उदा : लडका, मन्दिर, पानी, बेटा इन शब्दों का उच्चारण।

लेकिन अंग्रेज़ी में स्थिति इससे भिन्न है। वहाँ ध्वनियों को एक तरह से लिखा जाता है और उनका उच्चारण दूसरे ढंग से होता है। मतलब यह कि लेखन एवं उच्चारण के बीच वहाँ कोई तालमेल नहीं है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि अग्रेज़ी की अपेक्षा हिन्दी में ध्वनियों की या ध्वनि चिह्नों की संख्या ज्यादा है।

ध्वनिग्राम, संध्वनि एवं अनुवाद

इस अवसर पर ध्वनिग्राम एवं संध्वनियों को भी अनुवाद के संदर्भ में समझना उचित होगा। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने बताया है कि स्वनिम या ध्वनिग्राम की सत्ता मानसिक होती है तथा उपस्वन की सत्ता भौतिक। इस वात को थोडा और स्पष्ट कर लें तो,

दो, दूसरा, दासी, दीन, देन - इन शब्दों में समान रुप से दिखाई देनेवाला 'द्' ध्वनि जो है, उसे हम ध्वनिग्राम कहते हैं। लेकिन भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें तो इस 'द्' ध्वनि का उच्चारण प्रत्येक शब्द में भिन्न है। प्रत्येक शब्द में उत्रारण की इन विविध अवस्थाओं को हम 'संध्वनियाँ' कहेंगे अनुवाद पर इस दृष्टिकोण से विचार करें तो पता चलता है कि अनुदित ध्वनियाँ या लिप्यंतरित, अनुलेखित ध्वनियाँ वास्तव में ध्वनिग्राम नहीं है बल्कि संध्वनियाँ हैं। इसे और भी स्पष्ट किया जाय तो

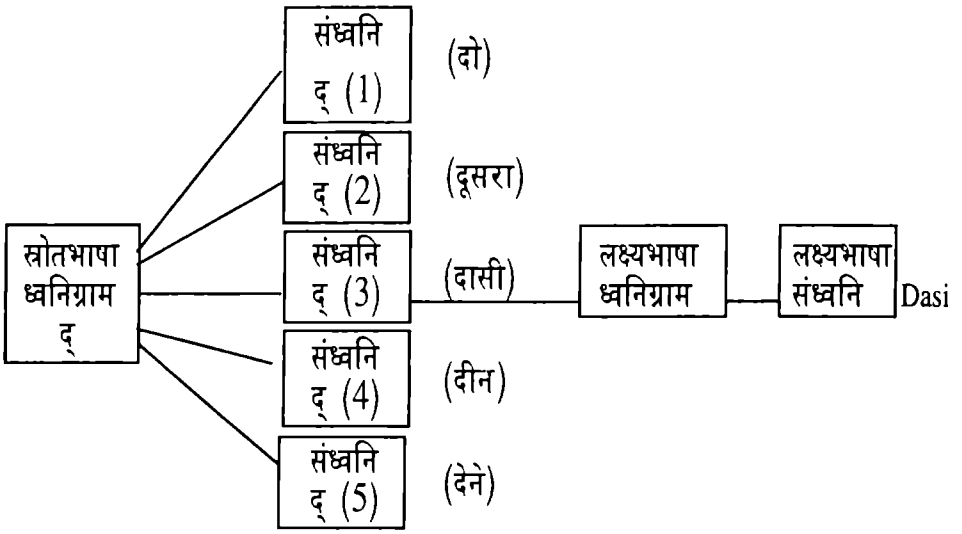

यहाँ स्रोतभाषा ध्वनिग्राम 'द्' की संध्वनि 'द्(3)' का वस्तुत : लिप्यंतरण हुआ है और लिप्यंतरण के समय वह संध्वनि पहले लक्ष्यभापा ध्वनिग्राम 'D' में परिवर्तित होती है, फिर वह लक्ष्यभाषा की संध्वनि 'Da' में लिप्यंतरित की जाती है। कहने का मतलब यह कि अनुवाद वस्तुत: संध्वनियों के वीच होता है, न कि ध्वनिग्रामों के वीच।

यहाँ अनुवाद शब्द को लिप्यंतरण या प्रतिलेखन के परिपार्श्व में समझना भी उचित होगा।

हिन्दी एवं अग्रेजी ध्वनियों की विशिष्टताओं या इन दोनों के बीच के लिप्यंतरण पर दृष्टिनिक्षेप करने पर एक बात हमें यह भी नज़र आती है कि हिन्दी के व्यजंनांत शब्द लिप्यंतरण के बाद अग्रेज़ी में स्वरांत हो जाते हैं, विशेषत: कुछ जाति-नामों के संदर्भ में। उदाहरण के तौर पर हिन्दी के 'गुप्त, सिंह आदि शब्दों के लिप्यंतरण पर ध्यान दीजिए। अंग्रेज़ी में वे क्रमश: 'Gupta' एवं 'Sinha' बन जाते हैं। इस प्रसंग में धातव्य एक और बात यह है कि हिन्दी में जहाँ अर्धध्वनियों का प्रयोग होता है अर्थात् (ल् + ल् = ल्ल क् + क् = क्क) ऐसी ध्वनियों का प्रयोग होता है, वहां अंग्रेज़ी में ऐसी ध्वनियों का प्रयोग नहीं किया जाता, 'ल्ल' इसे सूचित करने के लिए अग्रेज़ी में 'LLA' ही लिखा जाता है।

यह हिन्दी की एक खासियत कही जा सकती है कि यहाँ लिंग का निर्णय कभी ध्वनियों के आधार पर भी किया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि अमुक स्वर या व्यंजन में समाप्त होनेवाले शब्दों को स्त्रीलिंग या पुल्लिंग समझे जाने की पद्धति या प्रवृत्ति यहाँ प्रचलित है। अनुवादक अगर इस प्रवृत्ति से परिचित है तो उसे इस ओर से सहायता भी प्राप्त हो सकती है। 'रूपविज्ञान' के संदर्भ में भी इस बात को समझा जा सकता है। यही नहीं एक ध्वनि के बदलने से भी भाषाओं में काल लिंग, वचन की

दृष्टि से परिवर्तन आ सकता है।

	अग्रेज़ी		हिन्दी	
	Sit	Sat	पढ	- पढा
काल	(वर्तमान काल)	(भूतकाल)	(विधिरूप)	(भूतकाल)
वचन -	Man	- Men	बेटा	- बेटे
	(एकवचन)	(बहुवचन)	(एकवचन)	(बहुवचन)

हिन्दी में लिंग की दृष्टि से भी ऐसा परिवर्तन दृष्टव्य है। यथा

लडका	-	लडकी
(पु)		(स्त्री)

निष्कर्ष

ध्वनि भाषा का आधार होती है और इस कारण से अनुवाद के प्रसंग में ध्वनिविज्ञान का विशेष महत्व भी रहता है। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि ध्वनियों को अभिव्यक्त करने की दृष्टि से अग्रेज़ी की तुलना में, हिन्दी भाषा सशक्त होने के बावजूद भी हिन्दी की ध्वनियों पर अग्रेज़ी ध्वनियों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। लेखन व उच्चारण की दृष्टि से अनुवाद में ध्वनियों का विशेष महत्व रहने के कारण अनुवाद का ऐसा कोई भी पक्ष वस्तुतः नहीं है जो ध्वनिविज्ञान से अंसपृक्त हो। ध्वनि

की विशिष्टताओं को अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में समझने की सही कोशिश की जाय तो इससे संबद्ध समस्याएँ एक हद तक बशंवद हो सकती हैं।

तृतीय अध्याय

अनुवाद की शब्दवैज्ञानिक एवं अर्थवैज्ञानिक समस्याएँ

अनुवाद एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा के शब्दों में समान अर्थ के धरातल पर आरोप है। अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थ की समानता पर बल देते हुए, शब्दों के यथासाध्य सादृश्य पर बल दिया जाता है। यथासाध्य सादृस्य से मतलव यह नहीं कि अर्थ को छोडकर ध्वनि की दृष्टि से समान शब्दों पर वल दें। 'अर्थ' ही अनुवाद की जान है और 'अर्थ' शब्दों में छिपा रहता है, इस कारण से अनुवाद के संदर्भ में अर्थ को शब्द से और शब्द को अर्थ से अलग नहीं किया जा सकता। अनुवाद पर विचार करते समय शब्दविज्ञान एवं अर्थविज्ञान के परस्पर एक दूसरे के पूरक होने का और इन दोनों पर साथ साथ विचार करने का कारण भी वस्तुत: यही है।

इसका एक अन्य पक्ष यह भी है कि शब्द-रचना की जितनी भी प्रणालियाँ है, उन सवकी उन्मुखता अर्थ की तरफ़ है। अर्थात् अर्थ को केन्द्र में रखकर ही शब्द बनाने की विविध विधियाँ निर्मीत की जाती हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो भाषा में नए शब्द तव गढ़े जाते हैं जब पुराने शब्दों में अर्थ वाहन की शक्ति कम हो या पुराने शब्द नए अर्थों को स्पष्ट करने में असमर्थ हो।

जो भी हो, समवेतत: यह कहा जा सकता है कि शब्दविज्ञान एवं अर्थविज्ञान - दोनों भापाविज्ञान की अलग अलग शाखाएँ होने के बावजूद भी अनुवाद के क्षेत्र में दोनों एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं और इसी दृष्टिकोण से इसपर विचार करना

भी उचित रहेगा।

शब्द की परिभाषा एवं उसके विविध प्रकार

'भाषाविज्ञान' में डॉ. भोलानाथ तिवारी ने शब्द की परिभाषा यों दी है- 'शब्द अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई है।' [1]

इतिहास, रचना एवं प्रयोग के आधार पर शब्दों के कुछ भेद निर्धारित किए गए हैं जिनकी जानकारी इस संदर्भ में सहायक सिद्ध होगी। इतिहास के परिदृश्य में शब्दों के भेद हैं।

1. तत्सम
2. तत्भव
3. विदेशी या आगत
4. देशी

संस्कृत के ही रूप में हिन्दी में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों को 'तत्सम' शब्द कहते हैं जैसे, विद्या, ग्रन्थ, आदि। 'तत्भव' शब्द वे हैं जो संस्कृत से निकले हैं और हिन्दी की प्रकृति के अनुसार जिनमें परिवर्तन किया गया है। उदा: -अग्नि से

1. भाषा विज्ञान डॉ भोलानाथ तिवारी - पृ 397

'आग', कर्ण से कान' आदि। विदेशी या आगत शब्द किसी दूसरी भाषा के होते हैं और हिन्दी में, उसी रूप में उनका प्रयोग किया जाता है। उदा: अंग्रेज़ी के बल्ब, स्टेशन आदि शब्द और अरबी के किताब, राहत आदि शब्द। देशज या देशी शब्द देश ही में उत्पन्न या विकसित शब्द होते हैं।

रचना के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार हो सकते हैं।

1. रूढ़
2. यौगिक
3. योगरूढ़

रूढ़ शब्द वे हैं जिनके सार्थक टुकटे न हो सके। उदा - बैल, घर आदि। 'यौगिक' दो शब्दों या दो सार्थक लघुतम भाषिक इकाइयों के योग से बने हुए शब्द होते हैं जिसके उदाहरण हैं 'सुन्दरता, धनपति' आदि। 'योगरुढ़' शब्द तो दो से बने होते हैं, लेकिन इनका अर्थ विशेष अर्थ में संकुचित हो जाता है। जैसे, 'पंकज' शब्द का विशेष अर्थ है 'कमल'।

प्रयोग के आधार पर शब्दों के तीन भेद हो सकते हैं।

1. समान्य
2. अर्धपारिभाषिक
3. पारिभाषिक

सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों को समान्य शब्द कहते हैं। बातचीत में प्रयुक्त हर सामान्य शब्द इसकें अंतर्गत आते हैं। सामान्य संदर्भ में सामान्य एवं विशिष्ट संदर्भ में विशिष्ट अर्थ देनेवाले शब्दों को अर्धपारिभाषिक शब्द कहते हैं। जैसे 'धातु' शब्द। वैज्ञानिक संदर्भ में इसका विशिष्ट अर्थ निकलता है तो सामान्य क्षेत्र में वह 'Metal' का समानार्थी हो जाता है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में, विशिष्ट अर्थ में या निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। जैसे तकनीक (Technic), निदेशक (Director) आदि।

अनेक आधारों पर शब्दों के और भी कई प्रकार हो सकते हैं, लेकिन अनुवाद के परिपार्श्व में ये सारे प्रकार उतना महत्व नहीं रखते। अतः इनपर विस्तार से विचार करने की आवश्यकता शोधार्थी महसूस नहीं करता। हाँ! उपयुक्त सभी प्रकारों पर अर्थ की दृष्टि से विचार किया जाय तो शब्द का एक और प्रकार भी हो सकता है।

1. एकार्थी शब्द
2. अनेकार्थी शव्द

एकार्थी शब्द वह है जिसका एक ही अर्थ होता है और अनेकार्थी शब्द के तो अनेक अर्थ होते हैं। उदाहरणार्थ 'मिट्टी' एकार्थी शब्द है जिसका एक ही अर्थ

होता है 'Soil' 'आम' एक अनेकार्थी शब्द है जिसके दो अर्थ हैं, एक अर्थ है 'साधारण' (General) और दूसरा 'अर्थ' है एक प्रकार का फल (a kind of fruit)

एकार्थी शब्दों के अनुवाद में अनुवादक को कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि वहाँ अर्थ निश्चित रहता है। अनेकार्थी शब्दों के अनुवाद में कठिनाई यही है कि अर्थ वहाँ निश्चित नहीं रहता। प्रचलित अर्थों में से किसी एक अर्थ को सन्दर्भ के अनुसार वहाँ चुन लेना पडता है। लेकिन सक्षम एवं अनुभवी अनुवादक के लिए यह भी कोई कठिन काम नहीं है। हाँ! इस संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि इतिहास, रचना, प्रयोग एवं अर्थ की दृष्टि से शब्दों से तादात्मय स्थापित किए जाने पर अनुवाद एवं अनुवादक के बीच का तादात्मय भी बढ़ता जाएगा।

अनुवाद के प्रसंग में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों की रचना - विधियाँ

वैसे तो शब्द तत्सम, तत्भव, विदेशी, देशी इनमें से किसीके अंतर्गत आते हैं, लेकिन कभी कभी, विशेष रूप से पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करते समय कुछ विशेष विधियों को भी अपनाना पडता है जिसका परिचय नीचे दिया जा रहा है।

प्राचीन भाषाओं से संबद्ध शब्दों को लेकर नए रूप में उन्हें अभिव्यक्त करने की प्रणाली कभी कभी, विशेष रूप से परिभाषित शब्दों का निर्माण करते समय कुछ विशेष विधियों को भी अपनाना पडता है जिसका परिचय नीचे दिया जा रहा है।

प्राचीन भाषाओं से संबद्ध शब्दों को लेकर नए रूप में उन्हें अभिव्यक्ति करने की प्रणली कभी कभी दिखाई देती है। उदा

हिन्दी	अंग्रेज़ी
(संस्कृत से) तस्कर	- smuggler
(संस्कृत से) मंत्री	- Minister

कभी कभी तो पुराने शब्दों में नया अर्थ भर दिया जाता है जैसे 'All India Radio' के अर्थ में 'आकाशवाणी' का प्रयोग। मगर इस संदर्भ में या ऐसे प्रसंग में अर्थ विस्तार, अर्थ संकोच, अर्थादेश से संबद्ध समस्याएँ भी हो सकती हैं जिनपर आगे विस्तार से विचार किया जाएगा।

बोलचाल की भाषा में प्रचलित शब्दों को कभी नए रूप में अपनाया जाता है, जैसे

हिन्दी	अंग्रेज़ी
दलबदलू	- Dettector
घुसपैठिया	- Intruder

प्रांतीय भाषाओं से या विदेशी भाषाओं से भी इस प्रकार शब्द ग्रहीत किए जा रहे हैं।

'राजगृह' बंगला का एक शब्द है जिसका 'Green Room' के अर्थ में प्रयोग मिलता है। 'प्रतिष्ठान' कन्नड का शब्द है जिसका अर्थ मिलता है 'Establishment'.

वाट, वॉल्ट, मीटर, बॉनस आदि विदेशी भाषाओं से ग्रहीत शब्द हैं और कभी कभी तो अपनी भाषा के संदर्भ में अनुकूलन करके ऐसे शब्दों को अपनाने की प्रवृत्ति भी मिल जाती है।

अंग्रेज़ी	हिन्दी
Tragedy	- त्रासदी
Academy	- अकादमी (आदि)

ध्वनिविज्ञान के संदर्भ में शोधार्थी इसपर विस्तृत : विचार कर चुका है।

उपसर्ग, प्रत्यय, समास एवं संधी के आधार पर भी नए शब्दों को बनाने की प्रवृत्ति मिल जाती है जिनकी तरफ थोडा ध्यान देना भी इस संदर्भ में उचित रहेगा।

(1) उपसर्ग

शब्दरचना के संदर्भ में कहा जाय तो अनेक तत्सम, तत्भव, विदेशी उपसर्गों का प्रयोग इस अवसर पर होता है।

तत्सम उपसर्ग — अदृश्य (अ)

अध्याात्म (अधि)

अनुरूप (अनु)

तत्भव उपसर्ग - दुराज (दु)

निहत्था (नि)

परवर्ती (पर)

विदेशी उपसर्ग - बखूबी (ब)

बाकायदा (बा)

बरकरार (बर)

2. प्रत्यय

प्रत्यय वह भाषिक इकाई है जिसका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है, किसी भाषिक इकाई के अंत में जोडकर इससे शब्द-रचना की जाती है। तत्भम, तत्भव, विदेशी, देशी प्रत्ययों का प्रयोग हिन्दी में किया जाता है।

तत्सम - सुन्दरता (ता)

लडकी (ई)

तइभव - लज्जालु (आलु)

घबराहट (आहट)

देशी - घुमक्कट (अक्कट)

विदेशी - अक्कलमंद (मंद)

घराना (आना)

3. समास

दो या अधिक शब्दों को उनके बीच के संबध सूचक शब्द को छोडकर, मिलाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं। हिन्दी में मुख्यत: चार प्रकार के समास माने जाते हैं।

1. अव्ययीभाव
2. तत्पुरुष
3. द्वंद्व
4. बहुब्रीही

इन सबके बारे में विस्तार से जानने की आवश्यकता इस प्रसंग में नहीं है, अत: शब्दरचना की दृष्टि से एकाध उदाहरणों पर ही हम नज़र डालेंगे।

अव्ययीभाव - रातोंरात, हाथोंहाथ, यथाासंभव

तत्पुरुष - स्वर्गगत, हस्तलिखित, दानवीर

द्वंद्व - सुख - दुःख, पाप-पुण्य

बहुब्रीही - पीतांबर, चतुर्भुज, अनन्त

उपसर्ग, प्रत्यय एवं समास का प्रयोग करते समय जाने अनजाने हम संधि का भी आश्रय लेते हैं। अत: इसको भी शब्द रचना का एक आधार मान लिया जाय तो इसमें कोई दोष नज़र नहीं आता।

शब्द, कला एवं अनुवाद

शब्दों के संदर्भ में यह जान लेना सर्वथा ज़रूरी है कि इनमें बहुत सारी संभावनाएँ छिपी रहती हैं। प्रत्येक शब्द सार्थक इसलिए कहा गया है कि इसका प्रत्येक संदर्भ में विशेष अर्थ निकलता है। शब्दों की इस विशिष्टता को इस मुहावरे, लोकोक्ति, बिंब, प्रतीक, तुक, छन्द, अलंकार, शब्द-शक्ति आदि के परिपार्श्व में समझने की कोशिश करेंगे।

लोकोक्ति एवं मुहावरे के परिदृश्य में यह कहा जा सकता है कि इनका मनुष्य की जीवन प्रणालियों से काफी संबंध रहता है। मनुष्य को अपनी परंपरा से प्राप्त मुहावरें एवं लोकोक्तियों की जानकारी, उनके शब्द - गठन से भी पर्याप्त मात्रा में संबद्ध है। इनमें प्रयुक्त हर एक शब्द मनुष्य के दिल में पैठ गया है, अतः इनका अनुवाद करते समय अनुवादक को काफी ध्यान इस बात की तरफ देना चाहिए। मान लीजिए कि कोई अनुवादक अग्रेज़ी के मुहावरे 'white lie' का अनुवाद कर रहा, है उसे इसका अनुवाद 'सफेद झूठ' मिल गया है और वह नयेपन के लिए 'सफेद' के स्थान पर 'श्वेत' का प्रयोग कर रहा है तो यह 'श्वेत' शब्द पाठक के दिल पर 'सफेद' शब्द का

प्रभाव नहीं डाल पाएगा और इस संदर्भ में आशंका की भी गुंजाइश रहती है। लोकोक्तियों के संदर्भ में भी बात इस तरह की है। 'खाली' दिमाग शौतान का घर' इस लोकोक्ति के प्रसंग में अगर 'शून्य मस्तिष्क राक्षस का मकान' का प्रयोग किया जाए तो गडबडी यहाँ भी पैदा हो सकती है।

बिंब एवं प्रतीक - विधान में शब्दों की अहम भूमिका रहती है क्योंकि समानर्थी शब्दों में से प्रत्येक से मन में जो चित्र उपजता है, भिन्न होता है। इस भिन्नता को दर्शाने के लिए उपयुक्त शब्द का चयन अनुवादक को करना पडता है जो प्रयत्नसाध्य ही है।

तुक अनुवादक के मार्ग में कठिनाई अवश्य पैदा कर देता है क्योंकि तुक में शब्दों के सादृश्य पर बल दिया जाता है और इस तरह के समान शब्दों को ढूँढ निकालना अनुवादक के लिए कठिन बात तो है ही। ऐसा भी हो सकता है कि एक भाषा में तुक के प्रति जो धारणा है, दूसरी भाषा में वह धारणा उससे एकदम विपरीत हो। अनुवादक को ऐसे संदर्भ में सावधानी बरतते हुए शब्दों का प्रयोग कर लेना चाहिए।

छन्द के विषय में कठिनाई यही है कि कभी कभी शब्दों में परिवर्तन इस आधार पर किया जाता है। दीर्घ को ह्रस्व करना ह्रस्व को दीर्घ बनाना, शब्द में से किसी अक्षर (Syllable) (ध्वनि) को छोड देना - यह सब इस प्रसंग में अक्सर होता है। हिन्दी -अग्रेज़ी अनुवाद के संदर्भ में यह समस्या उतनी जटिल नहीं है क्योंकि छदं-संबधी विचारों में इन दोनों भाषाओं में कोई तालमेल नहीं है। स्रोत एवं लक्ष्यभाषा में समान

छन्द प्रचलित हो, तभी यह समस्या गंभीर रूप ले सकती है। 'तुक' की भी स्थिति यही है।

अलंकार चाहे शब्दालंकार हो या अर्थालंकार, अनुवाद के प्रसंग में इससे कई परेशानियाँ पैदा होती है। इसका प्रमुख कारण तो यह होता है कि प्रत्येक भाषा की अलंकार - संबंधी धारणाएँ भिन्न रहती हैं। ऐसे अवसर पर आलंकारिक विशिष्टताओं पर यथासाध्य बल देते हुए, अनुवादक को अर्थ को सुरक्षित रखने की तरफ ज्यादा ध्यान देना पडेगा। बात जितनी भी कर दी जाय, अलंकार की समस्या, अनुवाद के प्रसंग में एक समस्या भी बनी रहती है, रहेगी।

'कंकण किंकिण नूपुर सुन धुनि'

'चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही है' - आदि का अनुवाद करते समय अनुवादक को कितनी परेशानियों का सामना करना पडेगा यह तो विस्तार से कहने की आवश्यकता ही नहीं महसूस होती।

'अर्थ' क्या है ?

इस संबंध में विस्तार से कहने की आवश्यकता ही नहीं है कि भाषा में अर्थ का क्या महत्व है? सच कहा जाय तो भाषा का संप्रेपण अर्थ का ही संप्रेपण है। मोटे तौर पर अर्थ के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि करनेवाले का कोई शब्द अगर

सुननेवाले पर कोई प्रभाव डाल रहा है तो समझ लेना चाहिए कि उस शब्द का अपना अर्थ है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अर्थ की परिभाषा यों दी है:-

"किसी भी भाषिक इकाई (वाक्य, वाक्यांश, रूप, शब्द, मुहावरा आदि) को किसी भी इन्द्रिय (प्रमुखत: कान, आँख) से ग्रहण करने पर जो मानसिक प्रतीति होती है, वही अर्थ है।" [1]

जो भी हो, इससे यह स्पष्ट है कि 'अर्थ के संप्रेषण के संदर्भ में एक वक्ता और एक श्रोता होते हैं। हाँ! कभी कभी श्रोता के बिना भी अर्थ का संप्रेषण होता है। लेकिन याद रखनी चाहिए कि 'वक्ता' ही ऐसे अवसर पर 'श्रोता' का काम करता है। आगे इसपर रोश्नी विखेर जाएगी। फिलहाल तो यही मानकर चलते हैं कि क्ता एवं श्रोता की मानसिकता से अर्थ का संबंध रहता है। यों कहने का कारण यह है कि वक्ता की किसी बात का, श्रोता के मन पर, उसकी मानसिकता के अनुसार प्रभाव पडता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो यह आवश्यक नहीं कि वक्ता की बात को श्रोता उसी संदर्भ में स्वीकार करें। किसी समारोह में वक्ता की किसी बात का, अलग अलग व्यक्ति पर अलग अलग दृष्टि से प्रभाव पडने के संदर्भ में भी इस तथ्य को समझा जा सकता है। जैसे भी हो यह कहा जा सकता है अर्थ की प्रतीति 'प्रभाव' के रूप में होती है और इस संदर्भ में देखा जाय तो अर्थ का उद्देश्य भी प्रभाव उत्पन्न करना होता है।

1. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी - पृ 75

'आधुनिक भाषाशास्त्रम' नामक ग्रंथ में अर्थ के कुछ सिद्धांतों के बारे में बताया गया है, उस ओर प्रकाश डालना भी इस अवसर पर गलत नहीं होगा।[1] वे सिद्धांत निम्नलिखित हैं।

1. वस्तु सिद्धांत

2. आशय सिद्धांत

3. मनोंभावात्मक सिद्धांत

'वस्तु सिद्धांत' में यह बताया गया है कि 'अर्थ' किसी भाषाचिह्न के साथ किसी वस्तु का संबंध है। इसे थोडा स्पष्ट किया जाय तो 'किताब' कहने से हमारे मन में बाइन्ट किए गए, अनेक पन्नों के समूह का जो बोध होता है उसीसे हम उसका मतलब निकालते हैं, या 'किताब' उसीका अर्थ द्योतक इकाई बनकर हमारे समक्ष आता है। लिखित एवं मौखिक अनुवाद के संदर्भ में 'वस्तु सिद्धांत' से सहायता प्राप्त की जा सकती है।

प्रत्येक भाषाचिह्न को देखकर, अलग अलग व्यक्ति के मन में जो आशय निकलता है, उस आशथ का भाषाचिह्न के साथ जो संबंध है, वहीं आशय सिद्धात का आधार है। मान लीजिए कि कोई 'वह' सर्वनाम का प्रयोग कर रहा है, सुननेवाले सभी व्यक्तियों के मन में इससे एक ही आशय नहीं उभरेगा तो कहना ही पडेगा कि उस

(1) के. एम. प्रभाकर वारियर - शांता अगस्टिन आधुनिक भाषाशास्त्रम पृ 39

सर्वनाम के कई अर्थ हैं। सिर्फ लिखित अनुवाद के संदर्भ में यह सहायक सबित हो सकता है।

मनोभावात्मक सिद्धांत यह मानकर चलता है कि किसी भाषाचिह्न के साथ, उसकी प्रतिचेष्टाओं का जो संबंध है, वहीं अर्थ है। 'मौखिक अनुवाद' के संदर्भ में यह सार्थक भी हो सकता है।

अनुवाद के संदर्भ में शब्द एवं अर्थ

शब्द एवं अर्थ के पारस्परिक संबंध के बारे में अध्याय के प्रारंभ में विस्तृत: विचार प्रस्तुत किया जा चुका है। अब हम थोडी और बातें इस परिदृश्य में समझने की कोशिश करेंगे।

अनुवाद स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में किया जाता है और स्रोत एवं लक्ष्यभाषा के शब्दों का अपना अपना अर्थ होता है और इन अर्थों की अपनी परिधि भी रहती है। स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की अर्थ - परिधियाँ अलग अलग रहने के कारण अनुवाद में कठिनाई उपस्थित होती है। इस कठिनाई के दो आयाम भी हो सकते हैं। इनमें से पहला आयाम स्वाभाविक होता है अर्थात् स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की अर्थ-परिधि में यहाँ जो अंतर रहता है, वह स्वाभाविक होता है, जैसे अग्रेज़ी के 'Uncle' शब्द के लिए हिन्दी में प्राप्त होनेवाले 'ताऊ, मौसा, फूफा, मामा, चाया' आदि प्रतिशब्द। अनुवादक के पास यहाँ सावधानी बरतने के सिवाय और कोई चारा नहीं है। अपनी सुझबूझ के

आधार पर अनुवादक को यहाँ सही शब्द ढूँढ निकालना पडता है। लेकिन इस कठिनाई का दूसरा आयाम अनभिज्ञता से आबद्ध है। प्रकारांतर से असावधानी से भी। कभी कभी ऐसा होता है कि स्रोतभाषा में प्रयुक्त किसी शब्द के पूरे अर्थ को समझने में अनुवादक नाकायाब होता है और अभिज्ञ अर्थ के आधार पर वह अनुवाद करने लगता है तो निश्चय ही अनुवाद में अटपटापन आ जाएगा। इस बात को निम्नस्थ तरीकें से और भी स्पष्ट किया जा सकता है।

मान लिजिए कि स्रोतभाषा के किसी शब्द की वास्तविक अर्थ-परिधि [1] इतनी है और अनुवादक द्वारा समझ लिए गए अर्थ की परिधि [2] इतनी है। निश्चय है कि वह अपने, समझ लिए गए अर्थ के आधार पर समानार्थी शब्द ढूँढेगा। समानार्थी शब्द ढूँढ निकालते समय अर्थ की परिधि और भी कम हो जा सकती है। ऐसी स्थिति में अनुवाद, वास्तविक पाठ से कितना दूर हो जाएगा, इसका खुद अन्दाज़ा लगा दिया जा सकता है।

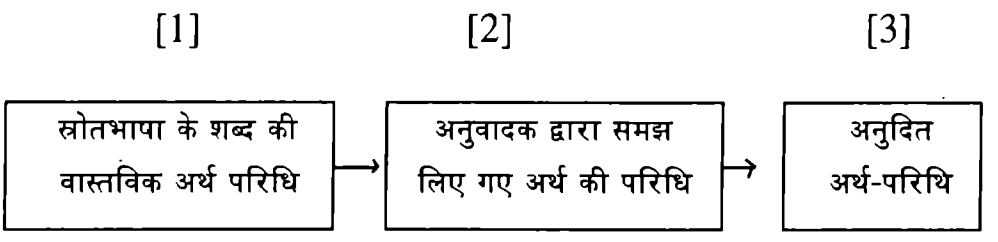

देख लीजिए कि यहाँ [1] का अनुवाद [3] के रूप में हुआ है तो कितना अंतर आ गया है। इससे यह स्पष्ट है कि अनुवाद को सार्थक बनाने के लिए शब्द के अर्थ को भली-भाँति समझना और लक्ष्यभाषा में उसके समानार्थी शब्द की तलाश करना - दोनों समानतः महत्वपूर्ण है। अर्थ-निर्धारण की विविध प्रणालियों का महत्व इस अवसर पर है।

अर्थ-निर्धारण की विविध प्रणालियाँ

स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में किया जानेवाला अर्थ पर अधिष्ठित भावों, आशयों का संप्रेषण अनुवाद कहा जाता है। यों तो किसी बात को पढते सुनते समय उसका मतलब हमारी समझ में आ जाता है लेकिन उसकी गहराइयों में उतरकर, दूसरी भाषा में उसे अनुदित करने की बात जब आती है, तब यह समझ में आता है अनुवाद कितना दुष्कर कार्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद के माध्यम से जिन आशयों का संप्रेषण किया जाता है, उनका संबंध हमारी सामान्य बुद्धि से रहने के बावजूद भी उन आशयों में जो अर्थ छिपे रहते हैं, उनको जानने के लिए हमें मस्तिष्क पर ज़ोर देना पडता है, बुद्धि को सूक्ष्म बनाना पडता है। इस बात पर गौर करते हुए अनेक विद्वानों ने अनुवाद में, अर्थ-निर्धारण में सहायक कुछ तथ्य का उल्लेख किया है जिनकी जानकारी यहाँ अपेक्षित है।

1. स्थान

'स्थान' से मतलब है 'किसी शब्द के किसी विशेष अर्थ का प्रयोग होनेवाला कोई विशेष स्थान। उदाहरणतः हिन्दी अंग्रेज़ी शब्दों का, अर्थ की दृष्टि से अपना अपना स्थान निर्धारित किया गया है। अंग्रेज़ी एवं हिन्दी जनता की चित्तवृत्तियों एवं चिंतन-प्रणलियों के आधार पर ही वहाँ के शब्दों के अर्थ और उनके विविध आयाम विकसित हुए हैं। वैसे तो अग्रेज़ी शब्दों के हिन्दी प्रतिशब्द और हिन्दी शब्दों के अग्रेज़ी प्रतिशब्द तो मिल सकते हैं, लेकिन इन शब्दों, प्रतिशब्दों की छानबीन करने पर पता चलता है कि इनमें भिन्नता भी रहती है। इसका कारण यह है कि अग्रेज़ी में प्रयुक्त शब्दों और वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों के बीच यो संबंध रहता है, वह संबंध, हिन्दी में प्रयुक्त शब्दों, और वहाँ की जनता की मनोवृत्तियों के बीच के संबंध से अलग रहता है। दृष्टांतत: कोई अग्रेज़ जब 'Festival' की बात करता है, तब हमारे मन में उत्सव, त्योहार पर्व आदी शब्दों की याद आती है जो वस्तुत: Festival शब्द से कुछ अंशों में भिन्न है। यह 'स्थान' का प्रभाव है।

2. समय

समय की स्फतार में धारणाएँ बदल जाती हैं तो शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन आता है। अनुवादक अगर इससे परिचित न हो तो, उसके मार्ग में इससे समस्या भी पैदा हो सकती है। उदाहरणतः 'खादी' शब्द। पहले खादी पहननेवाले इज्ज़त की दृष्टि

से देखे जाते थे, और वह शब्द भी सकारात्मक दृष्टि से स्वीकृत था। लेकिन फिललाल तो 'खादी' के प्रति आदर की भावना थोडी कम हो गई है और शब्दार्थ में भी इस आधार पर परिवर्तन आ गया है। अनुवादक को इसकी जानकारी अपेक्षित है।

3. संदर्भ

अर्थ निर्धारण में 'संदर्भ' का विशेष स्थान है. वस्तुत: संदर्भ शब्दों को नया अर्थ प्रदान करता है। सामान्य शब्दों को व्यंग्यात्मक अर्थ देने में, भावात्मक प्रसंगों में, भावों को और तीव्र करने में संदर्भ की विशेष भूमिका रहती है। पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से भी संदर्भ का विशेष महत्व है।

अंग्रेज़ी	हिन्दी
Home Government	- गृह सरकार
Home Guard	- रक्षक दल
Home signal	- निमट चिह्न

देख लिजिए कि 'संदर्भ' के अनुसार 'Home' शब्द का प्रत्येक शब्द में किस तरह से अनुवाद हुआ है।

4. लिंग

लिंग के मुताविक-अर्थ-परिवर्तन तो अग्रेज़ी - हिन्दी अनुवाद के प्रसंग में

सामान्यत: नहीं आता क्योंकि दोनों भाषाओं में दो दो लिंग प्रचलित हैं, यही नहीं लिंग परिवर्तन के कारण अर्थ- परिवर्तन की गुंजाइंश दोनों भाषाओं में नहीं है। हाँ। सर्वनामों के संदर्भ में 'मौखिक अनुवाद' के प्रसंग में लिंग-परिवर्तन से अर्थ-परिवर्तन तो आ सकता है, लेकिन यह उतना सामान्य नहीं है।

इस अवसर पर शोधार्थी ऐसे शब्दों को नहीं भूलता कि जिनके वस्तुत: पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप होते हैं और सामान्य संदर्भ में इनमें से किसी एक रूप का प्रयोग सामान्य अर्थ द्योतन की दृष्टि से किया जाता है।

कौआ बहुत सयाना होता है - यहाँ 'कौआ' शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थ - द्योतन के लिए किया गया है जबकि इसके 'नर कौआ, मादा कौआ' दोनों रूप प्रचलित हैं। लेकिन शोधार्थी यह मानता है कि ऐसे शब्दों का प्रयोग अनुवादक के मार्ग में कठिनाई नहीं पैदा करता क्योंकि यहाँ अर्थ - परिवर्तन की गुंजाइश कही भी नहीं है। जो भी है कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अग्रेज़ी - हिन्दी अनुवाद के प्रसंग में लिंग - परिवर्तन अर्थ - परिवर्तन का आधार नहीं है। प्रकारंतर से यह भी कहा जा सकता है कि अग्रेज़ी में लिग तार्किक है तो हिन्द में वह व्यावहारिक है।

5. वचन

अग्रेज़ी - हिन्दी अनुवाद के प्रसंग में वचन कभी कभी अर्थ - परिवर्तन का कारण बन जाता है। यथा -

Good - Good

(अच्छा) (माल)

हिन्दी में उत्तम पुरुष का प्रयोग कभी कभी अहंकार सूचक माना जाता है। इसलिए "मैं' के बदले 'हम' का भी प्रयोग उपलब्ध होता है।

'मेरा विश्वास है' के स्थान पर 'हमारा विश्वास है' का प्रयोग।

इसका अनुवाद करते समय अगर 'we believe' का प्रयोग किया जाय तो निश्चय ही वह गलत होगा क्योंकि वह अग्रेज़ी भाषा के अनुकूल नहीं है।

किसी व्यक्ति को आदर देने की दृष्टि से कभी कभी हिन्दी में एकवचन के स्थान पर वहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने मेरी मदद की - यहाँ सही अनुवाद 'He / She helped me' होगा। 'They helped me' के रूप में अगर अनुवाद किया जाय तो वह गलत होगा क्योंकि वह अग्रेज़ी की शैली के प्रतिकूल है।

हिन्दी एवं अग्रेज़ी में हमेशा एकवचन या बहुवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों की जानकारी भी अनुवादक के लिए यहाँ आवश्यक है। यथा-

Information (ए. व)

News (ब. व)

Spectacles (ब. व)

वाल (ब. व)

प्राण (ब. व)

6. समास

स्वतंत्र अर्थवाले दो शब्द जब मिल जाते हैं, तब कभी कभी वे एक स्वतंत्र शब्द बन जाते हैं और वह शब्द स्वतंत्र अर्थ भी देने लगता है जिसे समास कहते हैं। ऐसे शब्दों के अर्थ-निर्धारण में अनुवादक को सतर्कता बरतनी पडती है क्योंकि जिन शब्दों के मेल से वह समस्त शब्द बनता है, उन शब्दों के अर्थों की पृष्ठभूमि में, अगर उस समस्त शब्द का अर्थ निर्धारित किया जाय तो अवश्य वह अर्थ, अनर्थ होगा।

जल - water

वायु - air

जलवायु - atmosphere (water air नहीं)

गो - Cow

धूलि - dust

गोधूलि - dusk (Cow dust नहीं)

पीत - yellow

अंबर - dress

पीतांबर - Lord Krishna (इसका अर्थ Yellow dress भी हो सकता है, लेकिन प्रचलित नहीं)

7. उपसर्ग, प्रत्यय

मूल शब्दों के साथ जब उपसर्ग, प्रत्यय लगते हैं तब अर्थ कभी सीमित, कभी परिवर्तित या कभी विशेष हो जाता है।

जैसे गीत

प्रगति

अगति

निगति

गतिशील

इनका अनुवाद करते समय अनुवादक को अर्थ भेद भली - भाँति समझना पडता है और ऐसे शब्दों के प्रयोग की जानकारी भी उसके लिए आवश्यक है।

8. शब्द - शक्ति

शब्द - अर्थ विज्ञान के संदर्भ में शब्द शक्ति का जो विशेष महत्व है, उसे नकार नहीं किया जा सकता। शब्द-शक्ति तीन प्रकार की होती है।

1. अभिधा
2. लक्षणा

3. व्यंजना

अभिधार्थ कोशार्थ होता है, अत: इसके अनुवाद के संदर्भ में कोई कठिनाई नहीं होती। लक्षण, व्यंजना की यह खासियत रहती है कि उनका संबंध मानसिकता से रहता है। सुनानेवाले और सुननेवाले की मानसिक स्थिति, या उनके मानसिक तल के आधार पर ही यहाँ अर्थायाम विकसित होते हैं। शब्द शक्ति संबंधी धारणाएँ भी प्रत्येक भाषा मे अलग रहती हैं। उदाहरणार्थ 'राम उल्लू है' इस वाक्य में 'उल्लू' शब्द कहीं 'बुद्धि' का सूचक होता है तो क्हीं वह 'मूढता' का सूचक होता है, ऐसे प्रयोगों से अनुवादक को भली-भाँति परिचित होना चाहिए।

पूरा परिवार उसके खिलाफ है - यहाँ 'परिवार' शब्द का प्रयोग 'परिवार के सभी सदस्यों के लिए किया गया है जिसकी जानकारी अनुवादक के लिए अनिवार्यत: अपेक्षिति है।

कुल करके कहा जाय तो शब्द-शक्ति अनुवादक के मार्ग में अवश्य बाधा उपस्थिति करती है जिससे बचने के लिए अनुवादक की इच्चा-शक्ति, अनुभव ही काम आ सकते हैं।

अनुवाद में शब्दार्थ विज्ञान के संदर्भ में विशेपत: दिखाई देनेवाले दोषों को "भिन्नार्थता, भिन्नाशयता, पदाग्रह, काव्यत्व, न्यूनार्थता, अधिकार्थता' के अंतर्गत रखा

जा सकता है [1] और यथासाध्य इन दोषों से बचने के लिए 'अर्थबोध के कुछ साधनों की व्यवस्था भी की गई है जिनकी संप्तिज जानकारी हासिल करना यहाँ उचित रहेगा।

व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्य-शेष (संदर्भ), प्रसिद्ध पद का सान्निध्य, व्याख्या - ये मुख्य साधन हैं और सुरलहर, अनुवाद, बलाघात को भी इनके साथ रखा गया है। पाश्चात्य विद्वानों ने प्रदर्शन, विवरण, अनुवाद के अंतर्गत इन सारे साधनों को रखा है। इन साधनों का वैशिष्ट्य यह है कि इनके सहारे अनुवादक अर्थ के आयामों को सही ढ़ग से पहचान पाता है और उनका प्रयोग भी सही ढंग से कर पाता है।

अर्थ-निर्धारण की विविध पद्धतियों एवं अर्थ बोध के विभिन्न साधनों को जानने के पश्चात् अब हम अर्थ के विविध प्रकारों की तरफ दृष्टिनिक्षेप करेंगे और देखेंगे कि अनुवाद के साथ इनका क्या संबध है?

अर्थ के विभिन्न प्रकार

प्रयोग, संदर्भ, संप्रेषण, अभिव्यक्ति - क्षमता आदि अनेक आधारों पर अर्थ के कई भेद निर्धारित किए जा सकते हैं। यहां एक एक पक्ष को चुनकर अनुवाद के संदर्भ में विचार करने की हम कोशिश करेंगे।

1. अनुवाद - मई 96 अंक 4 - अनुवाद में भाषा व शैली की समस्या - भीष्म साहनी (मूल लेखक), कृष्णगोपाल अग्रवाल (अनुवादक)

हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति - क्षमता को दृष्टि में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस भाषा में मुख्यत: आठ प्रकार के अर्थों का प्रयोग किया जाता है।

1. कोशार्थ

जिन शब्दों का अर्थ सिर्फ कोश पर निर्भर रहता है, उनके अनुवाद के संदर्भ में उतनी कठिनाई नहीं होती क्योंकि कोशार्थ काफी विस्तृत होता है और पर्यायवाची शब्दों में प्रयोग होने से भी यहाँ कोई परिवर्तन नहीं आता।

His eyes are very beautiful - उसकी आँखें बहुत सुन्दर हैं।

नेत्र, नयन का भी प्रयोग किया जाय तो कोई अंतर भाव में नहीं आता, बात तो सिर्फ इतनी है कि लिंग, वचन पर ध्यान देना चाहिए। इस सदर्भों में उल्लेख्य एक बात यह भी है कि जिन शब्दों का सिर्फ कोशार्थ रहता है, इनके समानार्थी शब्द सभी भाषाओं में मिल जाऐंगे।

2. लक्ष्यार्थ

लक्ष्यार्थ अनुवाद के मार्ग में कठिनाई उत्पन्न करता है क्योंकि लक्ष्यार्थ से स्पष्ट हो जाननेवाला अर्थ प्रत्येक भाषा में अलग अलग रहता है। 'उल्लू' से लाक्षित अर्थ के संदर्भ में यह बात पहले व्यक्त की गई थी। यही नहीं एक भाषा में प्रचलित लक्ष्यार्थ के लिए, दूसरी भाषा में समानार्थी शब्द मिलना की काफी मुश्किल है क्योंकि लक्ष्यार्थ को

स्पष्ट करने की, प्रत्येक भाषा की प्रणालियाँ अलग अलग रहती हैं।

3. व्यंगयार्थ

संस्कृति, पंरपरा, संदर्भ आदि से संबद्ध व्यंजनार्थ अनुवाद के प्रसंग में काफी कठिनाई उसस्थित करता है क्योंकि प्रत्येक भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है, परंपरा होती है और संदर्भ होता है।

हिन्द प्रदेश में गंगा नदी बडी पवित्र मानी जाती है और गंगा का जल भी काफी निर्मल समझा जाता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि अनुवादक इस बात को पूर्णत: समझे।

वह गंगा के समान पवित्र है - यहाँ अनुवादक पवित्रता को किस तरह से व्यक्त करे? 'गंगा' के समान कोई 'पवित्र' व्यजनार्थ देनेवाला शब्द लक्ष्यभाषा में हो, सभी वह ऐसा कर सकता है। बात यह भी है कि 'गंगा' स्त्रीलिंग मानी जाती है और स्त्रियों के संदर्भ में इसका प्रयोग होता है। इन विशेषताओं से युक्त एक शब्द को ढूँढना मुश्किल ही है।

लक्ष्यार्थ और व्यंजनार्थ के बीच का अंतर यह है कि लक्ष्यार्थ से स्पष्ट हो जानेवाला अर्थ हमेशा सूक्ष्म या अर्मूत होता है तो व्यंजना के माध्यम से स्पष्ट हो जानेवाला अर्थ सूक्ष्म या स्थूल भी हो सकता है।

4. सामाजिक अर्थ

सामाजिक अर्थ को अनुवाद में लाना काफी कठिन होता है क्योंकि प्रत्येक समाज के रस्म-रिवाज़ अलग होते हैं, रीतियाँ अलग होती हैं और प्रत्येक समाज में जीनेवाले व्यक्तियों की भाषा की भी अपनी विशेषताएँ होती हैं। उदाहरणार्थ उत्तर भारत में आम तौर पर हिन्दी बोलनेवाले हिन्दुओं, मुसलमानों की भाषा में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। हिन्दुओं की भाषा में अरबी-फारसी के शब्द काफी मिल जाते हैं। अगर किसी साहित्यिक रचना में हिन्दु-मुसलमान के बीच का वार्तालाप चित्रित किया गया है, और अनुवादक को इसे अग्रेज़ी में अनुदित करना है तो ज़रूर उसे मुसीबत झेलनी पडेगी क्योंकि अग्रेज़ी में इस अंतर को लाना असाध्य ही है।

अग्रेज़ी 'you' शब्द के लिए हिन्दी में प्राप्त होनेवाला 'तू, तुम, आप' अनुवाद भी सामाजिक संदर्भ से संबंध रखते हैं।

5. बलात्मक अर्थ

बलात्मक अर्थ से तात्पर्य है किसी शब्द में, किसी विशेष ध्वनि पर या किसी वाक्य में किसी विशेष शब्द पर बल देने से उपजनेवाला अर्थ। उदा: conduct, present अग्रेज़ी में संज्ञा एवं क्रिया के रूप में बल के आधार पर प्रयुक्त किए जानेवाले शब्द हैं। 'राम जाएगा' के स्थान पर 'जाएगा राम' का प्रयोग अगर किया

जाय तो अर्थ में भिन्नता होती है। संदर्भ एवं अनुभव के आधार पर अनुवादक ऐसी बातों को पहचान पाता है और सही ढंग से अनुवाद भी कर पाता है। वाक्य-विज्ञान के प्रकरण में इसपर और भी चर्चा हो जाएगी।

6. शैलीपरक अर्थ

शैलीपरक अर्थ का सामाजिक अर्थ से संबंध होता है। वास्तव में यहाँ अर्थ की दृष्टि से कोई परिवर्तन नहीं होता, बल्कि अर्थ में भावों की जो गरिमा होती हैं, उसे तीव्र या कम करने की बात होती है। शिक्षित-अल्पशिक्षित-अशिक्षित लोगों की बातचीत के संदर्भ में शैली के इस अंतर को सही ढ़ग से समझ लिया जा सकता है।

मेरी वाइफ अच्छी है।

मेरी बीबी अच्छी है।

मेरी धर्मपत्नी अच्छी है।

वाइफ, धर्मपत्नी, बीबी का अर्थ एक होते हुए भी शैली की दृष्टि से, इनमें अंतर रहता है। इस अंतर को अनुवाद में लाना असाध्य नहीं तो प्रयत्नसाध्य अवश्य है। प्रकारांतर से यहाँ पर यह भी कहा जा सकता है कि अग्रेज़ी की शैली ने हिन्दी की शैली को एक हद तक प्रभावित भी किया है।

उदा What's your good name के स्थान पर तुम्हारा नाम क्या है का प्रयोग।

7. व्यंग्यार्थ

व्यंग्यार्थ - किसी शब्द का कोई वास्तविक अर्थ नहीं है, बल्कि उसपर आरोपित अर्थ है। अगर यह भी कहा जाय कि प्रत्येक शब्द का व्यंग्यार्थ होता है, तो उसमें उतने अतिशय की बात नहीं है। स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की व्यंग्यार्थ संबंधी मान्यताओं को 'संदर्भ' के धरातल पर समझना ही इस संदर्भ में अनुवादक के लिए सहायक हो सकता है।

8. व्याकरणिक अर्थ

व्याकरणिक अर्थ का मतलब है व्याकरण के संदर्भ में स्पष्ट हो जानेवाला अर्थ। 'राजु ने' इस शब्द का स्पष्टत: कोई अर्थ नज़र नहीं आता है, लेकिन 'ने' प्रत्यय के जुड जाने के कारण इससे हमें 'भुतकाल' का भी आभास प्राप्त होता है। ऐसे संदर्भ में अनुवादक को सावधानी बरतनी पडती है।

'प्रयोग' के आधार पर अर्थ के तीन प्रकार हो सकते हैं।

1. सामान्य अर्थ
2. विशिष्ट अर्थ
3. अर्ध सामान्य शब्द (अर्ध)

सामान्य अर्थ का मतलब है, किसी शब्द का आम प्रचलित अर्थ। बातचीत के

अवसर पर प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों के अर्थों को इसके अंतर्गत रखा जा सकता है।

विशिष्ट अर्थ से तात्पर्य है, किसी ज्ञान विशेप के संदर्भ में प्रयुक्त किये जानेवाले शब्दों के अर्थ। पारिभाषिक शब्दों को इसके अंतर्गत रखा जा सकता है। इनकी विशेषता यह होती है कि इनका अर्थ निश्चित रहता है।

उदा Parliament - संसद

इनके अतिरिक्त एक और प्रकार के शब्द होते हैं जिनका साधारण संदर्भ में साधारण अर्थ होता है, और विशिष्ट संदर्भ में विशिष्ट अर्थ। शब्दों के वर्गीकरण के प्रसंग में इसपर विचार प्रस्तुत किया जा चुका है, जैसे 'Root' शब्द। सामान्यत इसका अर्थ है 'जड'। लेकिन, व्याकरण के संदर्भ में यह 'धातु का अर्थ देने लगता है।

इनमें से सामान्य अर्थ एवं विशिष्ट अर्थ के अनुवाद के प्रसंग में अनुवाद को कठिनाई नहीं होती क्योंकि आवश्यकतानुसार कोश का वह सहारा ले सकता है। सामान्य किंतु विशिष्ट अर्थ भी देनेवाले शब्दों के संदर्भ में कठिनाई यह होती है कि अर्थ की सामान्यता एवं विशिष्टता से उतना परिचित न होने के कारण अनुवाद के दिल में दुविधा पैदा हो सकती है।

अनुवाद के प्रसंग में अर्थ के दो भेद किए जा सकते हैं।

1. स्वतंत्र अर्थ

2. आश्रित अर्थ

किसी आशय को द्योतित करने में सक्षम शब्दों को स्वतंत्र अर्थवाले या स्वतंत्र अर्थ देनेवाले शब्दों के अंतर्गत रखा गया है। इन शब्दों की अपनी एक अर्थपरक इकाई होती है, दूसरे शब्दों के साथ जुडे जाने पर उस परिधि में अंतर तो आ सकता है, लेकिन मूल रूप में उनकी अपनी इकाई बनी रहती है।

उदा ; किताब, लडका।

आश्रित अर्थवाले शब्दों का मतलब है, किसी आशय को स्पष्टतः द्योदित करने में असमर्थ शब्द। ऐसे शब्दों की अपनी स्वतंत्र अर्थ परिधि नहीं होती। यहाँ धातव्य बात यह है कि स्वतंत्र अर्थ के साथ जुड जाने पर अश्रित अर्थ का भी स्पष्ट आशय निकलता है।

उदा : लेकिन, किंतु, परंतु, यद्यपि, तो आदि

यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि अनुवादक को इन दोनों प्रकार के अर्थों से कोई कठिनाई नहीं होती।

'अनुभव' के आधार पर अर्थ के तीन भेद हो सकते हैं।

1. स्वांतसुखाय

2. परार्थ

3. क्तव्य

'स्वांतसुखाय' अर्थ से तात्पर्य है आत्मतुष्टि के लिए प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों का अर्थ। 'परार्थ अर्थ' किसी व्यक्ति द्वारा, दूसरे व्यक्ति के हित या अहित में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों का अर्थ होता है। 'वक्तव्य' तो किसी उपदेश एहसास छोडता है। सावधानी बरत ली जाय, तो इनके अनुवाद में अनुवादक को कोई परेशानी नहीं उठानी पडती।

संप्रेषण की विशिष्टताओं के आधार पर अर्थ के तीन प्रकारों को निर्धारित किया जा सकता है।

1. श्रोत्वान्वित

2. आशयान्वित

3. भावान्वित

श्रत्वान्वित अर्थ में अर्थ का संबंध किसी श्रोता से रहता है। आशर्यान्वित अर्थ तो किसी आशय से संवद्ध होता है। भावान्वित अर्थ में भाव के संप्रेपण पर बल दितया जाता है।

उदा: श्रोत्वान्वित : तू कुर्सी ला।

आशयान्वित - उस लडाई में किसीकी भी जीत न हुई।

भावान्वित - हाय! लुट गया।

यहाँ भी अनुवादक के लिए समस्या की कोई गुंजाइश नहीं है।

शब्दों के सूचित एवं नियत अर्थ के वारे में जान लेना भी इस प्रसंग में उचित रहेगा। 'सूचित अर्थ' का मतलब है, किसी शब्द द्वारा सूचित किया जानेवाला अर्थ और 'नियत अर्थ' किसी शब्द के लिए निश्चित किया गया अर्थ होता है।

श्रीकृष्ण यशोदानन्दन है। - इस वाक्य में 'श्रीकृष्ण' और 'यशोदानन्दन', दोनों का सूचित अर्थ श्रीकृष्ण ही है। मगर नियत अर्थ के बारे में कह दिया जाय तो वह भिन्न है। 'यशोदनन्दन' का नियत अर्थ यहाँ 'यशोदा का नन्दन' है। अर्थ के ये दो पक्ष अनुवादक के मार्ग में अंतराल पैदा करते हैं क्योंकि 'श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण है' या यशोदानन्दन यशोदानन्दन है' कह देने से भाव वहाँ स्पष्ट नहीं हो पाएगा।

संदर्भ के आधार पर अर्थ के और भी कुछ भेद किए जा सकते हैं।

1. ध्वनिपरक अर्थ
2. शब्दपरक अर्थ
3. वाक्यपरक अर्थ
4. परिच्छेदगत अर्थ

5. अध्यायगत अर्थ

6. पुस्तकीय अर्थ

ध्वनिपरक अर्थ का मतलब है ध्वनियों से स्पष्ट हो जानेवाला अर्थ। बारीश के गिरने की आवाज़ को या सिंह के गर्जन को व्यक्त करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उनमें ध्वनियों का काफी महत्व रहता है। ध्वनियों के उस महत्व को समझने की कोशिश अनुवादक अगर नहीं करेगा तो निश्चय ही अनुवाद अटपटा लग सकता है। 'लिप्यंतरण' के संदर्भ में भी ध्वनिपरक अर्थ का विशेष महत्व रहता है।

शब्दपरक अर्थ के विविध आयामों के विषय में बात की जा चुकी है। अत: इसपर विस्तार से चर्चा की आवश्यकता नहीं रह जाती।

वाक्यपरक अर्थ का महत्व कार्यालयी संदर्भ में विशिष्ट रूप से होता है और अर्थ को सही ढंग से जानना यहाँ सर्वथा अनिवार्य है।

परिच्छेदगत, अध्यायगत एवं पुस्तकीय अर्थ की अहमियत अध्ययन- अध्यापन के क्षेत्र में है। परिच्छेद, अध्याय या पुस्तक में लिखी गई बातों को सही ढंग से समझकर उन्हें दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने के लिए अनुवादक के पास प्रतिभा तो होनी चाहिए, इस अवसर पर वह 'भावानुवाद' का सहारा ले सकता है।

अर्थ के सभी प्रकारों पर इस तरह भावों के संप्रेषण के विशेष परिप्रेक्ष्य में विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भावों के संप्रेषण की दृष्टि से अनुवाद कई हद तक प्रयन्त साध्य है, लेकिन भावों से आबद्ध शैल्पिक विशिष्टताओं को, जो कभी कभी अर्थ-निर्णय में भी अपनी भूमिका अदा करती है, अनुवाद में लाना काफी कठिन होता है। अनुवाद-प्रक्रिया के प्रति सजग, सतर्क अनुभवी व्यक्ति ही अनुवाद-कर्म में सफल हो सकता है। अन्दाज़ा लगा दीजिए कि एक ही भाषा में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ-निर्धारण में भी कठिनाई होती है तो दो भाषाओं से आबद्ध अनुवाद के प्रसंग में यह कठिनाई कितनी सख्त हो सकती है। कहनेवाले और सुननेवाले या पढनेवाले के बीच किसी और की उपस्थिति अनुवाद को काफी दुष्कर बना देता है और यहाँ आकर अनुवादक को अर्थ-संप्रेषण के लिए दर्शन, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र पर भी जाने अनजाने विचार करना पडता है। जो भी हो, यह जानना अनुवादक के लिए सर्वथा अनिवार्य है कि अर्थ संप्रेषण उसका प्रथम कर्तव्य है, और शौलीपरकं विशिष्टताओं को बचाना द्वितीय कर्तव्य।

शब्दविज्ञान एवं अर्थविज्ञान के परिपार्श्व में अनुवाद संबंधी कुछ विशिष्ट बातें

अनुवाद के आलोक में शब्द एवं अर्थ पर विचार करते समय हमारे सामने कुछ बातें आती हैं जिनपर विचार करना भी इस संदर्भ में संगत लगता है।

वात्सल्य को सूचित करनेवाले शब्द जहँ हमें हिन्दी में मिल जाते हैं, वहाँ अंग्रेज़ी में ऐसे शब्द नहीं प्राप्त होते। वात्सल्य के संदर्भ में ही नहीं बल्कि कई भावों के प्रसंग में यह बात सही साबित हो सकती है।

उदाहरणार्थ, 'मामु' शब्द को ले लीजिए। 'मामा' शब्द का प्यार के साथ यहाँ 'मामु' के रूप में प्रयोग किया गया है। लेकिन अग्रेज़ी में इन दोनों के लिए एक ही प्रतिशब्द मिलेगा, 'uncle' चायु, नानु' आदि शब्दों की भी यही स्थिति है।

इस अवसर पर यह भी कहा जा सकता है कि 'तत्सम' शब्दों में जो गंभीरता है और उर्दु के शब्दों में जो माधुर्य है, उनको अनुवाद में लाना भी काफी मुश्किल होता है। 'पत्नी' और 'बीबी' 'हृदय' और 'दिल', 'प्रेम' और 'इष्क' आदि शब्दों के परिदृश्य में यह बात समझी जा सकती है।

भावों की तीव्रता बढाने के लिए या किए हुए कार्य पर ज़ार देने के लिए कभी कभी शब्दों की आवृत्ति की जाती है जिसे उसी रूप में अनुवाद में लाना एक असफल प्रयास रह जाता है। मान लीजिए कि 'ढूँढने' की क्रिया पर ज़ोर देने के लिए कहीं 'घर-घर दूँढा' का प्रयोग किया गया है। अग्रेज़ी में इसका उसी रूप में अनुवाद करना कठिन है। वहाँ अग्रेज़ी की शैली के अनुसार 'Searched everywhere' का प्रयोग हो सकता है।

'साफ-साफ कहा' 'ज़ोर-ज़ोर से बोलो' -आदि प्रयोगों के संदर्भ में भी यह बात संगत हो सकती है।

'भला-बुरा कहना, खरी-खोटी सुनाना' आदि प्रयोगों के प्रसंग में भी ऐसी परेशानी पैदा हो सकती है।

अनुवाद करते वक्त संक्षिप्तीकरण पर ध्यान देना पडता है क्योंकि संक्षिप्तीकरण के माध्यम से कभी कभी नए शब्द भाषा में विकसित हो जाते हैं। जैसे, IPTA के लिए 'इप्टा' का प्रयोग ISRO के लिए 'इसरो' का प्रयोग और CUSAT के लिए 'कुसाट' का प्रयोग। अवश्यक नहीं कि दोनों भाषाओं में ये शब्द एक ही प्रकार से पढे जा रहे हो। आवश्यकता यह कि इन शब्दों के प्रचलित रूप को जानकर उसके संदर्भ में अनुवाद करने की कोशिश की जाय। बात समझने में इस दृष्टि से कहीं भी कोई कठिनाई उपस्थिति नहीं होनी चाहिए। NATO (नाटो) नॉर्थ अटलान्टिक ट्रीटी ओरगनैसेशन शब्द की भी यही स्थिति है।

निष्कर्ष

भाषा की संप्रेषणीयता शब्द एवं अर्थ पर निर्भर करती है, अत: यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुवाद के संदर्भ में यो कितने महत्वपूर्ण हैं। शब्द एवं अर्थ पर एकसाथ विचार करना इसलिए शोधार्थी ने उचित समझा कि अर्थ की प्रतीति शब्द के आधार पर ही होती है। शब्दार्थ विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की सबसे बडी

कठिनाई यही है सकती हो कि किसी भाषा के शब्द एवं अर्थ के बीच जो तालमेल रहता है, उसे उसी रूप में दूसरी भाषा में लाना काफी दुष्कर होता है। यह बात अलग है कि शब्दों के अर्थ-निर्धारण की प्रणालियाँ प्रत्येक भाषा की अपनी होती हैं। सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक रस्म, रिवाज़ आदि कई पक्षों से अनुप्राणित होने के कारण शब्द एवं अर्थ से संबद्ध समस्याएँ और भी गंभीर रूप धारण करती हैं। भावों की संप्रेषणीयता के परिपार्श्व में शब्द एवं अर्थ पर सूक्ष्मता से विचार करने की कोशिश की जाय तो इनसे संबद्ध समस्याओं का समाधान हो सकता है।

चतुर्थ अध्याय

अनुवाद की रूपवैज्ञानिक समस्याएँ

'रूप' से तात्पर्य है 'भाषा की व्यवस्था' और रूपविज्ञान 'भाषा की व्यवस्था का अध्ययन' है। ब्लूमफील्ड ने बताया है कि 'By the Morphology of a language we mean the construction in which sound form appear among the constituents.[1] भाषिक विकास के संदर्भ में रूपविज्ञान का विशेष महत्व है। डॉ 'भोलानाथ तिवारी' ने 'भाषाविज्ञान' में 'रूपविज्ञान' के तीन भेद बताए हैं।[2]

1. वर्णनात्मक रूपविज्ञान जिसमें किसी भाषा या बोली के किसी एक समय के रूप या पद का अध्ययन होता है।

2. ऐतिहासिक रूपविज्ञान जिसमें किसी भाषा के विभिन्न कालों के रूपों का अध्ययन कर उसकी रूप-रचना का इतिहास या विकास प्रस्तुत किया जाता है।

3. तुलनात्मक रूपविज्ञान जिसमें दो या अधिक भाषाओं के रूपों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

रूपविज्ञान के इन तीनों प्रकारों से अनुवाद का संबंध तो ठहरता है, फिर भी सर्वाधिक निकटता तुलनात्मक रूपविज्ञान से हे क्योंकि अनुवाद दो भाषाओं के बीच होनेवाली एक प्रक्रिया है। दो विभिन्न भाषाओं की इकाइयों के बीच समन्यय स्थापित करके 'संप्रेषण' को साध्य बनाना अनुवाद का कार्य है। यहाँ ध्यातव्य तथ्य यह है कि

1. ब्लूमफील्ड Language पृ 207
2. डॉ भोलानाथ तिवारी - भाषाविज्ञान - पृ 228

अनुवाद करते समय सिर्फ अर्थ तत्व अनुदित नहीं होता बल्कि संबंधतत्व भी इसके साथ अनुदित किए जाते हैं, बात यह सही है अर्थतत्व के साथ संयोग से ही संबंधतत्व की अर्थछवियाँ निकल आती हैं। यह संयोग पूर्ण भी हो सकता है अपूर्ण भी हो सकता है, या एकदम स्वतंत्र भी।

(अंग्रज़ी) Sing - Sang (पू. सं)

(अंग्रेज़ी) Kill - Killed (अपू सं)

(अंग्रेज़ी) to, in, on

(हिन्दी) ने, को, से

यहाँ कहने का मतलब यह है कि अनुवादक की सफलता का आधार शब्दों या धातुओं के आधार पर स्रोत एवं लक्ष्यभाषाओं में प्रयुक्त होनेवाले रूपों की रचना की जानकारी भी है क्योंकि स्रोतभाषा के रूपों या रूप-समुच्चयों के स्थान पर लक्ष्यभाषा के रूपों, रूपसमुच्चयों को रखना अनुवाद का अनिवार्य पक्ष है। काल, लिंग, पुरुष, वचन, कारक की अभिव्यक्ति में सूक्ष्मता लानेवाले संबंधतत्वों पर ध्यान देना अनुवादक को इसलिए भी आवश्यक है कि ये सारे तत्व अनुवाद के संदर्भ में सर्वथा महत्वपूर्ण हैं।

संबंधतत्वों के अनुवाद के संदर्भ में पुरुष

पुरुप तीन प्रकार के होते हैं।

1. उत्तमपुरुप	First Person
2. मध्यम पुरुप	Second Person
3. अन्य पुरुप	Third Person

हिन्दी में उत्तम पुरुष के लिए 'मैं' शब्द मिल जाता है तो मध्यमपुरुष के लिए 'तू, तुम, आप' का प्रयोग किया जाता है और अन्य पुरुष के संदर्भ में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्द 'वह, वे, यह, ये' हैं।

हिन्दी

उत्तम पुरुष मैं

मध्यम पुरुष तू, तुम, आप

अन्य पुरुष - वह, वे, यह, ये

अग्रेज़ी में उत्तम पुरुष के लिए 'I' का प्रयोग है तो मध्यम पुरुष के लिए 'You' का प्रयोग है। अन्य पुरुष के संदर्भ में 'He, she, they' का प्रयोग होता है।

अग्रेज़ी

उत्तम पुरुष - I

मध्यम पुरुष - you

अन्य पुरुष - He, she, they

अब यह देख लें कि इनके प्रयोग के ख्याल से अनुवाद में किस तरह की समस्याएँ होती है ?

	अग्रेजी	हिन्दी
उत्तम पुरुप	I drink	1. मैं पीता हूं
		2. मैं पीती हूँ।
मध्यम पुरुप	You drink	1. तू पीता है।
		2. तू पीती है।
		3. तुम पीती हो।
		4. तुम पीती हो।
		5. आप पीते है।
		6. आप पीती हैं।
अन्यपुरुप	They drink	1. वे पीते हैं।
		2. वे पीती हैं।
	He drinks -	वह पीता है।
	She drinks -	वह पीती है।

यहाँ 'I' केलिए हिन्दी में 'मैं' प्रतिशब्द मिलता है तो 'You' केलिए तीन शब्द मिल जाते हैं। 'तू' तुम, आप'। 'They' केलिए 'वे' शब्द है तो 'He, She, के लिए सिर्फ एक 'वह' शब्द ही प्राप्त होता है।

समस्या यहाँ एक और भी है कि 'you drink' का ऊपर बताए गए अनुवादों से अलग एक और अनुवाद भी प्राप्त होता है।

you drink - तू पी।

तुम पिओ।

आप पीजिए।

इससे यह सिद्ध होता है कि समस्या यहाँ रूप की ही नहीं बल्कि अर्थ की भी है।

हाँ, He, she, को छोडकर यहाँ लिंग निर्णय की समस्या बाकी सभी संदर्भों में होती है। यहाँ 'drink' शब्द के लिए (पीता हूँ, पीती हूँ, पीते हो, पीती हो, पीते हैं, पीती हैं) छः अनुवाद मिल जाते हैं। 'drinks' के लिए केवल दो ही अनुवाद (पीता है, पीता है) मिल जाते हैं। हिन्दी से अग्रेज़ी में अनुवाद करते समय यह उतनी वडी समस्या नहीं है क्योंकि यहाँ छः रूपों केलिए अग्रेज़ी में एक ही रूप है। मगर अनुवाद अगर अग्रेज़ी से हिन्दी में करना हो तो समस्या गंभीर हो जाती है, क्योंकि एक रूप के लिये यहाँ छः प्रतिरूप मिल जाते हैं। 'They' के संदर्भ में और 'I' के संदर्भ में भी यही समस्या पैदा होती है।

अग्रेज़ी में अन्यपुरुष के सन्दर्भ में हमें 'He' और 'She' शब्द मिलते हैं, लेकिन हिन्दी में इसके लिए केवल एक प्रतिशब्द है 'वह'।

He reads - वह पढ़ता है।

She reads - वह पढती है।

मगर, क्रिया के संदर्भ में लिंग को स्पष्ट करने की प्रणाली हिन्दी में रहने के कारण यह उतनी बडी समस्या नहीं वन जाती।

कुल मिलाकर कहा जाय तो अग्रेज़ी एवं हिन्दी के उत्तम एवं मध्यम पुरुष में लिंग को स्पष्ट करने की कोई प्रत्यक्ष विधि नहीं है जबकि अग्रेज़ी के अन्य पुरुप में यह प्रत्यक्षत: स्पष्ट हो जाता है। प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी में लिंग का पता चलता है तो अग्रेज़ी में वह संदर्भ के आधार पर समझा जा सकता है। यहाँ एक और बात ध्यातव्य है कि उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुप जब एकसाथ प्रयुक्त होते हैं तब अग्रेज़ी एवं हिन्दी में उनके अनुवाद के क्रम में भिन्नता होती है।

You are coming with me - हम आप के साथ चलेंगे।
(1) (2) (2) (1)

विनय के सदंर्भ में प्रयुक्त किया जानेवाला 'मैं' का हम के रूप में प्रयोग भी समस्या पैदा करती है क्योंकि कभी कभी पता नहीं चलता कि हम द्वारा द्योतित व्यक्ति एक है या एकाधिक।

वर्तामान काल में ही नही, भूत एवं भविष्यतकाल में भी इस तरह की समस्याएँ आती हैं। भूतकाल के ख्याल से यह समस्या और भी जटिल है क्योंकि हिन्दी में भूतकाल में प्रयुक्त किया जानेवाला (ने) गडबडी पैदा कर देता है।

I ate - मैं ने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)

You ate - तू ने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)
तुमने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)
आपने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)

They ate - उन्होंने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)

She ate - उसने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)

He ate - उसने खाया। (पु: स्त्री: दोनों में)

यहाँ 'ate' शब्द का अनुवाद तो खाया ही मिलता है, लेकिन अग्रेज़ी एवं हिन्दी, दोनों में लिंग निर्णय कठिन वन गया है। क्रिया के साथ अगर कर्म को भी जोड दिया जाय तब हिन्दी की गडवडी और भी वढ जाती है।

I ate bread - मैं ने रोटी खायी। (पु, स्त्री)

I ate mango - मैं ने आम खाया (पु, स्त्री)

I ate two mangoes मैं ने दो आम खाए (पु, स्त्री)

I ate two pieces of bread - मैं ने दो रोटियाँ खायीं (पु, स्त्री)

लेकिन यहाँ याद रखनी चाहिए कि अपूर्ण एवं हेतुहेतुमत्भूतकाल में इस तरह से 'ने' का प्रयोग नहीं होता और वहाँ समस्याएँ भी वर्तामानकाल की समस्याओं की तरह हो जाती हैं।

I was eating - मैं खा रहा था।

मैं खा रही थी

Had I gone, he would have - अगर मैं जाता तो

come here वह यहाँ आता।

भविष्यत्काल में 'पुरुष' के संदर्भ में, उनके अनुवाद में उठनेवाली कठिनाइयाँ, वर्तामानकाल की कठिनाइयों की तरह ही हैं।

I'll go - मैं जाऊँगा।

मैं जाऊँगी।

You'll go -	तू जाएगा। तू जाएगी।
	तुम जाओगे। तुम जाओगी।
	आप जाएँगे। आप जाएँगी।
They'll go	वे जाएँगे। वे जाएँगी।
He'll go	वह जाएगा।
She'll go	वह जाएगी।

संबंधतत्वों के अनुवाद के संदर्भ में 'वचन'

वचन का प्रयोग मुख्यत: तीन दृष्टियों से किया जाता है।

1. एकवचन शब्दों का बहुवचन रूप और बहुवचन शब्दों का एकवचन रूप।

2. क्रिया के संदर्भ में प्रयुक्त किए जानेवाले वचन के रूप।

3. वहुवचन शब्दों के बहुवचन रूप (लाख - लाखों आदि)

एकवचन शब्दों का बहुवचन रूप और बहुवचन शब्दों का एकवचन रूप

यहाँ पर एकवचन से बहुवचन बनाने की विधियों पर बल दिया जाता है और अग्रेज़ी में एकवचन से बहुवचन बनाने की प्रमुख विधियाँ निम्निलिखित हैं।

अग्रेज़ी की विधियाँ	उनका अनुवाद
Boy - Boys (s)	लडका - लडके
Cloth - Clothes (es)	कपडा - कपडे

Child - Children (ren)	बच्चा - बच्चे
Story Storeis (ies)	कहानी कहानियाँ
Man Men (e)	पुरुष - पुरुष
Dear - Dear (ø)	प्रिय - प्रिय
ox - Oxen (en)	बैल - बैलें

हिन्दी में एकवचन से वहुवचन बनाने की प्रमुख विधियाँ न्मिलिखित हैं।

<u>हिन्दी की विधियाँ</u>	<u>उनका अनुवाद</u>
घर - घर (Ø)	House - Houses
लडका - लडके (ए)	Boy - Boys
पुस्तक - पुस्तकें (ऐं)	Book - Books
लडकी - लडकियाँ (याँ)	Girl - Girls
चिडिया - चिडियाँ (आँ)	Bird - Birds
लता - लताएँ (एँ)	Creeper - Creepers

उर्दु

साहब - साहबान (आन)	Gentleman - Gentlemen
कागज़ - कागज़ात (आत)	Paper - Papers

यहाँ समस्या यह है कि अग्रेज़ी की एकवचन से वहुवचन बनाने की प्रणाली से, हिन्दी की, एकवचन, वहुवचन प्रणाली का कोई तालमेल नहीं है अर्थात् अग्रेज़ी एवं हिन्दी की प्रत्येक प्रणाली के अनुरूप दोनों भापाओं में कोई प्रणाली नहीं मिलती। फलत: अग्रेज़ी एवं हिन्दी की वचन-निर्माण या वचन - परिवर्तन विधियों को जानने

के बावजूद भी अनुवादक को आवश्यकतानुसार अग्रेजी एवं हिन्दी के बहुवचन शब्दों को ढूँढना ही पडता है। इसे थोडा और स्पष्ट कर दिया जाय तो,

अग्रेज़ी में

Boy के लिए Boys

(?) Cat के लिए Cats

Rule के लिए Rules जैसे ब. व मिलते हैं। कोई यह सोचकर अनुवाद के लिए बैठ जाए कि boys के लिए हिन्दी में प्राप्त ब. व शब्द लडके है तो Cats के लिए बिल्ले, Rules के लिए नियमे ही होंगे तो यह अवश्य गडबडी पैदा करेगा। हिन्दी - अंग्रेज़ी वचन निर्माण की पद्धतियों की सही जानकारी के साथ ही साथ प्रयत्न करने की क्षमता भी होने से ही अनुवादक का काम सफल बन सकता है।

क्रिया के संदर्भ में प्रयुक्त किए जानेवाले वचन के रूप

इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि वचन क्रिया के प्रयेगा पर असर डालता है। यह असर भूतकाल के संदर्भ में सर्वथा देखा जा सकता है और भूतकाल में वचन की दृष्टि से कई कठिनाइयाँ भी होती हैं।

हिंदी में भूतकाल के मुख्यत : छ: भेद मिल जाते हैं।

1. सामान्य भूत (Indefinite past)
2. आसन्न भूत (Present perfect)
3. पूर्ण भूत (Past perfect)
4. संदिग्ध भूत (Doubtful past)

5. अपूर्ण भूत (Imperfect past)

6. हेतुहेतुमह भूत (Conditional past)

इनमें अग्रेज़ी के (Imperfect past) के हिन्दी में दो रूप मिल जाते हैं।

He was eating - वह खाता था।

वह खा रहा था।

अनुवाद में इस अंतर को लाना काफी मुश्किल है।

अब हम वचन की दृष्टि से भूतकाल में उपस्थित होनेवाली कठिनाइयों पर, विशेषताओं पर नज़र डालें।

सामान्य भूत

I came - मैं आया, (आई) - हम आए। (आईं) We came

You came - तू आया (आई) - तुम आए (आईं) - You came

He came - वह आया। (आयी) - वे आये (आईं) - They came

आसन्न भूत

He has come - वह आया है - वे आए हैं।

पूर्ण भूत

He has come - वह आया था - वे आए थे।

संदिग्ध भूत

He might have come - वह आया होगा - वे आए होंगे

अपूर्ण भूत

He was writting - वह लिखता था। - वे लिखते थे।

वह लिख रहा था। वे लिख रहे थे।

हेतुहेतुमद् भूत

Had I met him, he - अगर उससे मिला होता,

would have come here - तो वह यहाँ आता।

इन छः भेदों में से अपूर्ण एवं हेतुहेतुमदभूतकाल में 'ने' का प्रयोग नहीं होता और सकर्मक अकर्मक का, प्रयोग की दृष्टि से कोई भेद भी वहाँ नहीं है। इस कारण से इन दोनों के संदर्भ में अनुवाद की दृष्टि से कठिनाइयाँ कुछ कम हैं। काल के शेष सभी प्रकारों में 'ने' की यह समस्या काफी गहरी हो जाती हैं क्योंकि लिंग, वचन निर्धारण की प्रणालियाँ यहाँ एक दूसरे से मिल गई हैं।

सामान्य भूतकाल में देखिए।

हिन्दी

	सकर्मक (स्तीलिंग कर्म)		**अकर्मक**	
	एक. व	ब. व	ए.व	ब.व
(पु)	राम ने रोटी खायी।	राम ने रोटियाँ खाई।	राम सोया।	राम और रहीम सोए।
(स्त्री)	सीता ने रोटी खायी।	सीता ने रोटियाँ खाई।	सीता सोयी।	सीता एवं लीला सोई।

(पुल्लिंग कर्म)

	एक. व	ब व
(पु)	राम ने आम खाया।	राम ने दो आम खाए।
(स्त्री)	सीता ने आम खाया।	सीता ने दो आम खाए।

अग्रेज़ी

	Singular	Plural	Singular	Plural
Masculian	Ram ate bread -	Ram ate two pieces of bread	Ram slept -	Ram and Rahim slept
Femenian	Sita ate bread -	Sita ate two pices of bread	Sita slept -	Sita and Leela Slept

यहाँ देखने पर पता चलता है कि हिन्दी में सामान्य भूतकाल में सकर्मक क्रिया के संदर्भ में कर्ता का क्रिया के साथ कोई संबंध नहीं है। अकर्मक क्रिया के खयाल से कहें तो क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है। लेकिन अग्रेज़ी में सकर्मक, अकर्मक क्रियाओं में कोई अंतर नहीं है, अतः अनुवाद अगर अग्रेज़ी से हिन्दी में करना हो तो कठिनाई निश्चयत: होती है।

आसन्न पूर्ण एवं संदिग्ध भूतकाल में भी इस तरह की समस्याएँ होती हैं। हिन्दी में, भूतकाल में क्रिया अगर सकर्मक है तो कर्ता के साथ 'ने' जोडने की पद्धति और 'ने' को जोड दिए जाने पर क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार करने की प्रणाली अनुवाद के मार्ग में अवश्य मुश्किलें पैदा करती हैं। क्रिया के सकर्मकत्व, अकर्मकत्व का निर्णय करना और उसके अनुसार क्रिया का प्रयोग करना निश्चय ही कठिन है जबकि

सकर्मक, अकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्द हिन्दी में मिल जाते हैं। यही नहीं अकर्मकों की प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग सकर्मक की तरह होता है।

राजेश सोया माँ ने राजेश को सुलाया।

रीमा सोई। - लता ने रीमा को सुलाया।

संज्ञा या सर्वनाम के साथ 'ने' या अन्य कोई विभक्ति जुड जाने पर उनमें जो परिवर्तन होता है, वह भी रूपविज्ञान की दृष्टि से अनुवादक के लिए एक समस्या है।

सकर्मक		अकर्मक
1. उसने खाया।		वह सोया
2. उसको यह मिला।		He got it
उनको यह मिला	-	They got it
हमें यह मिला।	-	We got it
तुम्हें यह मिला।		You got it

यहाँ देखने पर हमें मालूम पडता है कि प्रयोग की दृष्टि से थोडी कठिनाई होने पर भी, हिन्दी में क्रिया को देखते ही हमें एकवचन, बहुवचन का बोध होता है, और लिंग निर्धारण भी आसान हो जाता है।

वर्तमान और भविश्यत्काल के संदर्भ में यह समस्या उतनी जटिल नहीं देखी जाती क्योंकि वहाँ कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

बहुवचन शब्दों के बहुवचन रूप

बहुवचन शब्दों के बहुवचन रूपों से मतलब किसी बात पर बल देने के लिए, किसी बात को सख्त साबित करने के लिए प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों से है।

उदा ; लाखों, हज़ारों, सैकडों आदि

लाखों ने यह घटना देखी है। - Thousands have seen this incident - यहाँ वक्ता अपनी बात को पुष्ट करना चाहता है या बल देना चाहता है। 'लाखों' शब्द यहाँ 'लाख' का बहुवचन बनकर हमारे सामने आया है, अर्थात् जाने अनजाने 'लाख' शब्द हमारे समक्ष एकवचन जैसा हो जाता है। ऐसे शब्दों के अनुवाद में हिन्दी अंग्रेज़ी में कठिनाई नहीं होती क्योंकि दोनों में एकरूपता पाई जाती है।

Thousand - Thousands	हज़ार - हज़ारों
hundred - hundreds -	सौ - सैकडों.
lakh - lakhs	लाख - लाखों.

यहाँ हिन्दी (ओं) के स्थान पर अग्रेज़ी (s) आया है।

लेकिन संबोधन के संदर्भ में ऐसे शब्द, ऐसा प्रयोग भ्रम पैदा कर देते हैं। हिन्दी में संवोधन के प्रसंग में अक्सर प्रिय साथियों, सज्जनों, देवियों का प्रयोग प्राप्त होता है जो भीड को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। लेकिन अग्रेज़ी में इस तरह का प्रयोग नहीं होता। वहाँ Dear friends, ladies and gentlemen ऐसे प्रयोगों का सहारा लेना पड जाता है।

यहाँ एक और बात उल्लेख्य है कि हिन्दी में बहुत कम संदर्भों में वहुवचन शब्दों के बहुवचन रूप पारिभाषिक शब्द वन जाते हैं। उदाहरण के लिए 'कागज़' शब्द के वहुवचन के रूप में हमें 'कागज़ों' शब्द के साथ साथ 'कागज़ात' शब्द का भी प्रयोग प्राप्त होता है। यह 'कागज़ान' एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है 'document' मगर 'कागज़ों' शब्द 'कागज़ात' का समानार्थी होने के बाबजूद भी पारिभाषिक नहीं बन सकता।

संबंधतत्वों के अनुवाद के संदर्भ में लिंग

आम तौर पर कहा जाय तो लिंग पुरुषत्व स्त्रीत्व का बोध जगाता है। अग्रेज़ी एवं हिन्दी के परिदृश्य में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी में लिंग व्याकरणिक है तो अग्रेज़ी में वह तार्किक है। अर्थात् हिन्दी में लिंग का व्याकरणिक प्रत्यय है तो अग्रेज़ी में वह भौतिक अनुभव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

साधारणत: पुल्लिंग, स्त्रीलिंग समझने के लिए प्रत्येक भाषा में इसके कुछ अपने ढंग होते हैं, लेकिन हिन्दी के क्षेत्र में इन नियमों के साथ ही साथ उतने अपवाद भी प्राप्त हो जाने के कारण विशेषत: कोई इनका सहारा नहीं लेता। दृष्टातत: हिन्दी में ऐसा बताया गया है कि 'आ' में समाप्त होनेवाले सारे शब्द पुल्लिंग हैं, लेकिन दवा, हवा, दुनिया आदि ऐसे अनेक शब्द हैं जो स्त्रीलिंग के रूप में स्वीकृत हैं। ऐसे उदाहरण प्रत्येक भाषा में काफी मिल जाएँगे। इतना कहने का मतलब यह कि अनुवाद के संदर्भ में अनुवादक को विशेष लाभ इन नियमों से प्राप्त नहीं होता और ये अपवाद शब्द अनुवादक के लिए समस्या बन जाते हैं।

यह कहा जा चुका है कि अग्रेज़ी में लिंग तार्किक[1] है और वाक्य-रचना के संदर्भ में इसकी कोई विशेष महत्ता नहीं रहती लेकिन हिन्दी में लिंग काफी प्रमुख है और लिंग के आधार पर वाक्य- रचना में भी यहाँ परिवर्तन होता है।

Mohan goes - मोहन जाता है।

Sheela goes - शीला जाती है।

अब हम अग्रेज़ी एवं हिन्दी के पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के नियमों पर ज़रा दृष्टिनिक्षेप करें।

अग्रेज़ी	अनुवाद
(ine) Hero - Heroine	नायक - नायिका
(ess) God - Goddess	देव - देवी

लिंगवाची सर्वनाम जोडकर

He goat - She goat	बकरा - बकरी
Male servant - maid servant	दास - दासी

एकदम अलग शब्द

Boy - girl	लडका - लडकी
हिन्दी	
बूढा - बूढी (ई)	Old man - old woman
वन्दर - बन्दरिया (इया)	Monkey - She monkey
वाघ - बाघिन (इन)	Tiger - Tigers
शेर शेरनी (नी)	Lion - Lioness

जेठ - जेठानी (आनी)	Husband's elder brother - Husband's elder brother's wife
दुल्हा - दुल्हन (अन)	Bridegroom Bride
पंडा -पंडाइन (आइन)	Temple priest - Pada's wife
शिक्षक - शिक्षिका (इका)	Master - Mistress
कवि - कवयित्री (यित्री)	Poet - Poetess.

उपर्युक्त शब्दों का निरिक्षण करें तो पता चलता है कि अग्रेज़ी एवं हिन्दी के इस प्रकार के लिंग- परिवर्तन के नियमों में कोई तालमेल नहीं है। अग्रेज़ी में रचना की दृष्टि से लिंग अप्रमुख रहने के कारण हिन्दी से अग्रेज़ी के अनुवाद में लिंग एक समस्या नहीं बन जाता, लेकिन अग्रेज़ी शब्दों का हिन्दी में अनुवाद करते समय लिंग संबधी कठिनाइयाँ होती हैं क्योंकि यहाँ लिंग रचना का एक आधार भी है।

इस संदर्भ में अनुवादक की अगली समस्या लिंग - निर्धारण से संबंधित है। अपने सामने आए शब्दों में से कौन-कौन से शब्द पुल्लिंग हैं और कौन-कौन से शब्द स्त्रीलिंग है - यह जानना अनुवादक के लिए कठिन है और अग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करते समय बडी समस्या भी होती है। मुश्किल की बात यह भी है कि एक ही अर्थ में प्रयुक्त होनेवाले दो भिन्न शब्द कभी भिन्न लिंग के भी होते हैं।

I wrote a letter to my father

1. मैं ने अपने पिताजी को एक खत लिखा।

2. मैं ने अपने पिताजी को एक चिट्ठी लिखी।

वाक्य(1) में letter का अनुवाद 'खत' के रूप में किया गया है जो पुल्लिंग है और वाक्य (2) में इसका अनुवाद चिट्ठी है जो स्त्रीलिंग है।

जो भी हो, लिंग-निर्धारण, लिंग-परिवर्तन और लिंग-संबंधी प्रयोग-सभी अनुवादक के मार्ग में बाधाएँ डालते हैं। अनुभव के आधार पर ही इसका समाधान ढूँढा जा सकता है।

संबंधतत्वों के अनुवाद के संदर्भ में विभक्तियाँ (कारक)

विभक्तियाँ, जो अग्रेज़ी में case-endings कही जाती है, हिन्दी में आठ प्रकार के है। इनके कुछ प्रत्यय भी निर्धारित किए गए हैं।

1. कर्ता (कारक) Nominative case	ने
2. कर्म (Accusative)	को
3. करण (Instrumental)	से
4. संप्रदान (Dative)	को, के लिए, के वास्ते
5. अपादान (Ablative)	से
6. संबंध (possessive)	का, के, की
7. अधिकरण (Locative)	में, पर
8. संबोधन (vocative)	है, अजी, अरे

साधारणत : इन विभक्तियों के अनुवाद में तो उतनी कठिनाई नहीं पायी जाती। लेकिन इनकी कुछ विशिष्टताएँ भी होती है। जिनकी जानकारी अनुवादक के लिए सहायक सिद्ध हो सकती है।

कभी कभी हिन्दी में विभक्तियों का प्रयोग नहीं होता इनके बिना ही अर्थ समझ में आ जाता है।

I'm going to my home - मैं अपना घर जा रहा हूँ।

कभी कभी तो अग्रेज़ी के किसी prepostion के लिए हिन्दी में एकाधिक अनुवाद प्राप्त हो जाते हैं। यथा-

(1) He belongs to that state - वह उस राज्य का है।

(2)You'll get to and fro ticket free - तुम्हें आने जाने की टिकट मुफ्त मिलेगा।

(3) Upto that extent - उस सीमा तक

(4) I'm going to my home - मैं अपना घर जा रहा हूँ।

(5) Mind to mind - दिल से दिल

यहाँ देखिए कि 'to' का अनुवाद अलग अलग संदर्भ में किस तरह से अलग अलग हो गया है।

(1) में वह 'का' का समानार्थी है तो (2) में वह 'तक' का समानार्थी है। (4) में वह (उस ओर) का अर्थ देता है तो (5) में वह 'से' का समानार्थी है। (3) में उसका विशेष अर्थ निकल आया है। ऐसा होने के बावजूद भी एक अनुभवी अनुवादक के लिए ऐसी बातें परेशानी पैदा नहीं करेंगी।

संबंधतत्व के अनुवाद के प्रसंग में काल से संबंधित जितनी भी समस्याएँ है, उनका विवेचन, पुरुष, लिंग, वचन एवं कारक - विभक्तियों के संदर्भ में किया गया है। यहाँ पर यह भी कहा जा सकता है कि हिन्दी की काल-रचना अग्रेज़ी की काल-रचना

से काफी संकीर्ण होती है और उस संकीर्णता को सही ढंग से समझना ही इस संदर्भ में अनुवादक का प्रथम दायित्व है।

रूपविज्ञान के संदर्भ में शब्दों के प्रकार एवं अनुवाद

अनुवाद के संदर्भ में रूपविज्ञान पर विचार करते समय हमें यह मानना पडेगा कि इस संदर्भ में उठनेवाली समस्याओं का संबंध शब्द, अर्थ एवं वाक्य से भी है क्योंकि शब्दों के आधार पर ही रूप-परिवर्तन होता है और रूपों का अस्तित्व वाक्य के संदर्भ में ही निर्धारित किया जाता है।

अव हम वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के विभिन्न भेदों पर रूपविज्ञान के परिदृश्य में विचार करेंगे और देखेंगे कि अनुवाद कहाँ तक इससे प्रभावित है।

संज्ञा

संज्ञा मुख्यत : तीन प्रकार के होते हैं।

1. व्यक्तिवाचक (Proper noun) - राजू, कलकत्ता
2. जातिवाचक (Common noun) जानवर, घोडा
3. भाववाचक (Abstract noun) गुस्सा, मिठास

इनमें से व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ संबंधतत्व जोड दिए जाने पर संज्ञाओं में कोई परिवर्तन नहीं होता।

राम ने देखा - Ram Saw

राम को मिला - Ram got it

राम की बेटी - Daughter of Ram

जातिवाचक, भाववाचक संज्ञाओं के साथ संबंधतत्व जब जोड दिए जाते हैं, तब उनमें परिवर्तन आता है। अग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करते समय अनुवादक को इसकी जानकारी हानी चाहिए।

I have seen the horse

(1) मैं ने घोडे को देखा है।

'घोडा' इस संज्ञा के वहुवचन अर्थात् 'घोडे' के साथ संबंधतत्व जोड दिए जाने पर भी उसमें परिवर्तन होता है।

I have seen the horses

(2) मैं ने घोडों को देखा है।

यहाँ एक बात ध्यातव्य है कि (1) में से अगर 'को' निष्कासित किया जाए तो व्याकरणिक दृष्टि से कोई समस्या नहीं है।

(3) मैं ने घोडा देखा है। लेकिन (1) में इशारा किसी विशेष घोडे की तरफ है तो (2) में घोडा सामान्य हो जाता है। मतलब यह कि अर्थ-परिधि में शंका की गुंजाइश रहती है।

क्रियार्थक संज्ञा के साथ संबंधतत्व जोडे नहीं जाते, वाक्य में वह स्वतंत्र रूप से रहता है।

टहलना अच्छा है - walking is good

उसका चलना ठीक नहीं - His behaviour is not good

संज्ञा और रूपविज्ञान पर अनुवाद की दृष्टि से विचार करते समय इस बात पर ध्यान देना है कि हिन्दी में कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं जिनके साथ संबंधतत्व जोड दिए जाने पर उसमें परिवर्तन होता है और संबंधतत्व जोड देना ऐसी संज्ञाओं के संदर्भ में सर्वथा अनिवार्य भी है।

लडके ने फूल को तोडा है।

Boy has plucked the flower

यहाँ लडके ने इसका प्रयोग किसी भी हालत में अनिवार्य है, लेकिन फूल को - इसे अगर 'फूल' में भी परिणत कर दिया जाए तो उतनी समस्या नहीं होती।

लडके ने फूल तोडा है।

Boy has plucked the flower

लेकिन यहाँ एक बात उल्लेख्य है कि कुछ क्रियाओं में कर्म के साथ प्रयत्न जोड देना अनिवार्य - सा हो जाता है, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा सकता है।

संबोधन के लिए हिन्दी में हमेशा बहुवचन का प्रयोग होता है, लेकिन अग्रेज़ी में इसके लिए हमेशा बहुवचन का प्रयोग नहीं चलता। इस कारण से अनुवाद में समस्या पैदा होती है। उदाहरण स्वरूप लडका अगर एक है तो भी उसको जब संबोधित किया जाता है तब हिन्दी में इसका प्रयोग होता है। 'ऐ लडके, सुनो' - इसका अनुवाद Yeh, Listen 'boy' के रूप में होता है। अर्थात् हिन्दी में इसका प्रयोग बहुवचन जैसा होता है तो अग्रेज़ी में वह एकवचन के समान ही है।

सर्वनाम

सर्वनाम के प्रमुखत छ प्रकार माने जाते हैं।

1. पुरुपवाचक (Personal) - मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे
2. निश्चयवाचक (Demonstrative) - यह , ये, वह, वे, सो
3. अनिचयवाचक (Intdefinite) - कोई, कुछ
4. संबंधवाचक (Relative) - जो
5. प्रश्नवाचक (Interrogative) - कौन, क्या
6. निजवाचक (Reflexive) - आप, खुद, स्वयं, अपना

इनमें से प्रत्येक के साथ संबंधतत्व जोड दिए जाने पर उसमें परिवर्तन होता है जो जानना अनुवादक के लिए अनिवार्य है। अर्थ - ग्रहण से संबद्ध कठिनाइयाँ तो इस संदर्भ में उतनी नहीं होती, लेकिन इसकी जानकारी न होने पर अनुवाद व्याकरणिक दृष्टि से अधूरा ही रह जाता है। मान लीजिए कि कोई 'He wrote a book' का अनुवाद करता है और वह सर्वनामों में होनेवाले रूपपरिवर्तन से अनजान है, तो निश्चय ही वह अनुवाद करेगा। 'वह एक किताब लिखा'। अर्थ को समझने में यहाँ कोई बाधा नहीं है, लेकिन अनुवाद सर्वथा अटपटा ही लगता है।

यहाँ अर्थ के संदर्भ में उतनी कठिनाई न होने का कारण यह है कि सर्वनाम का प्रयोग वाक्य में संज्ञा के बदले होता है। इसलिए व्याकरणिक दृष्टि से गलत अनुवाद किए जाने पर भी प्रसंग के आधार पर अर्थ जानना एक हद तक यहाँ संभव हो सकता है।

विशेषण

विशेषण के प्रमुखत चार भेद होते हैं।

1. गुणवाचक (Adjectives of quality) - अच्छा, लाल, बुरा

2. संख्यावाचक (Adjectives of Number) - एक, चार, पहला

3. परिमाणवाचक (Adjectives of quality) - कुछ, दो गज

4. सार्वनामिक (Demonstrative or pronominal)

- कैसा, कितना, जैसा, जितना

इनके अलावा संबंधवाचक' विशेषण के रूप में विशेषण का एक और भेद भी हो सकता है। 'राम का बेटा' इसमें 'राम का' और 'अपना घर' में 'अपना' इसके उदाहरण हैं।

अग्रेज़ी से हिन्दी या हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय इन विशेषणों का प्रयोग कठिनाई पैदा कर देता है क्योंकि अग्रेज़ी में लिंग के आधार पर विशेषताओं में बदलाव आने की प्रणाली नहीं है जबकि हिन्दी में दोनों प्रणालियाँ चलती हैं अर्थात् कभी कभी यहाँ लिंगानुसार विशेषण में परिवर्तन होता है तो कभी कभी ऐसा नहीं होता। आकारांत विशेषणों में देखिए।

वह अच्छा लडका है He is a good boy

वह अच्छी लडकी है - She is a good girl

कभी कभी यह प्रयोग दो प्रकार का हो सकता है।

वह लाल रंग का फूल है That's a red flower

वह लाल रंग की साडी है - That's red saree

यहाँ बिना अर्थांतर के वह लाल फूल हैं, वह लाल साडी है के रूप में भी इनका प्रयोग हो सकता है। लेकिन रंगों को सूचित करनेवाला यह विशेषण शब्द जब आकारांत हो जाता है तब उसमें लिंगानुसार परिवर्तन उपस्थित होता है।

जैसे

वह पीला पत्ता है।	That's a yellow leaf
वह पीली कलम है।	That's a yellow pen
वह पीले रंग का पत्ता है।	That's a yellow leaf
वह पीले रंग की कलम है।	That's a yellow pen

इस संदर्भ में तीसरा एक प्रकार भी मिलता है जिसमें कुछ इस तरह से देखा जाता है।

राम एक सुन्दर पुरुष है	- Ram is a handsom boy
सती एक सुन्दर नारी है	Sati is a beautiful lady

यहाँ हिन्दी में 'सुन्दर' शब्द पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में विशेषण के रूप में प्रात होता है तो अग्रेज़ी अनुवाद में 'handsom, beautiful' दो अलग शब्द इसके लिए उपलब्ध होते हैं।

संख्यावाचक सार्वनामिक, संबंधवाचक विशेषण के संदर्भ में भी ऐसी समस्या जो लिंग से संबंधित है, मिल जाती है। लेकिन परिमाणवाचक विपेशण के संदर्भ में यह नहीं होती।

कुछ रुपया दो	give some money
कुछ साडियाँ दो	give some sarees
वह पाँच मीटर की साडी है	That is a five meter long saree.

यहाँ पर जिन विशेषणों के संदर्भ में हमने लिंग के अनुसार परिवर्तन देखा, उन विशेषणों में वचन के अनुसार भी परिवर्तन होता है। इसे विस्तार से समझानें की आवश्याकता शोधार्थी महसूस नहीं करता।

यहाँ पर उल्लेख्य एक बात यह है कि संख्यावाचक विशेषणों के अंतर्गत आनेवाले जो शब्द सिर्फ संख्या को सूचित करते हैं, उनमें लिंग, वचन आदि के अनुसार परिवर्तन नहीं आता।

जैसे - एक, दो, तीन जैसे शब्द

इस कक्षा में चालीस विद्यार्थी हैं	There are forty students in this class
इस कक्षा में एक विद्यार्थी है	There is only one student in this class
इस कक्षा में चालीस छात्राएँ है	- There are forty girl students in this class

लेकिन जो शब्द स्थान को सूचित करने के लिये या तुलना के लिए प्रयुक्त होते हैं, उनमें परिवर्तन होता है।

तुम्हारे दूसरे लडके से मेरी मुलाकात हुई	- I met your second son
तुम्हारी दूसरी लडकी से मेरी मुलाकात हुई	- I met your second daughter

क्रिया

यह तो विदित है कि क्रिया के वहुत सारे भेद होते हैं और उसकी बनावट की कई प्रणालियाँ होती हैं। मगर अनुवाद के संदर्भ में ये सारी प्रणालियाँ और ये सारी बातें उतनी महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती। यहँ तो वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के अनुवाद में होनेवाली समस्याओं पर विचार करने का प्रयास किया जा रहा है। क्रिया की परिभाषा इस प्रकार दी गई है।

'क्रिया वह पद अथवा पदों का समूह है जिससे किसी कार्य, घटना अथवा अस्तित्व आदि का बोध हो।'[1]

अग्रेज़ी एवं हिन्दी के संदर्भ में कहा जाय तो अग्रेज़ी में क्रिया हमेशा कर्ता के साथ आती है जबकि हिन्दी में वह वाक्य के अंत में आती है। अग्रेज़ी में क्रिया हमेशा कर्ता का अनुसरण करती है तो हिन्दी में 'कर्म' भी क्रिया के प्रयोग का आधार बन जाता है।

क्रिया धातुओं से बनती है या क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते हैं। हिन्दी में आज्ञा के अर्थ में 'तू' के साथ क्रिया के धातु रूप का प्रयोग होता है।

तू पढ़ - You read - लेकिन अग्रेज़ी में अनुवाद करते समय इस धातु-रूप का अस्तित्व नष्ट हो जाता है। वहाँ तो 'तुम पढो' आप पढिए' के रूप में भी 'you read' का अनुवाद होता है।

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी - हिन्दी भाषा की संरचना - पृ 157

You read - तू पढ

तुम पढो

आप पढिए

क्रियाधातु से जब काल के अन्य रूप बना दिए जाते हैं, तब वर्तमान काल में दो रूप प्राप्त होते हैं।

पढता, पढ रहा

जीवन पढता है - Jeevan reads

जीवन पढ रहा है - Jeevan is reading

पता चलता है कि 'पढता' इस रूप के लिए 'reads' और 'पढ रहा' इसके लिए 'reading' का प्रयोग हैं।

क्रियाधातु से भूतकाल के रूपों को बनाते समय 'आ' और 'या' इसके साथ जोड दिए जाते हैं।

पढ़ - पढा, पी - पिया आदी - लेकिन अग्रेज़ी में इसके दो रूप मिल जाते हैं।

Read	- Read
(रेड)	(रेड)

प्रथम 'रेड' (Read) का प्रयोग 'सामान्य भूत' में होता है तो द्वितीय 'Read' रेड का प्रयोग 'आसन्न, पूर्ण संदिग्ध एवं हेतुहेतुमत भूत में किया जाता है। 'अपूर्ण भूतकाल' में क्रिया के वर्तमान काल के ' पढ रहा' और 'पढता' का प्रयोग ही किया जाता है।

'भविष्यदकाल' में धातु के साथ 'ऊँगा, एगा, एँगे' जैसे शब्द हिन्दी में जोड दिए जाते हैं।

पढ पढूँगा will read

कर - करूँगा - will do आदि। अग्रेज़ी में इसके लिए 'read, do' शब्दों का ही प्रयोग होता है।

यहाँ इस बात पर बल देना है कि हिन्दी में काल के इन रूपों में लिंग एवं वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। यहीं नहीं अग्रेज़ी में प्राप्त होनेवाले क्रिया के रूपों के तीन भेद भी होते हैं।

1. Read - Read - Read- यहाँ तीनों रूप एक समान रहते हैं, लेकिन उच्चारण में भिन्नता है। प्रथम में इसका उदारण 'रीड' है तो द्वितीय एवं तृतीय में वह 'रेड' है

2. Catch - catched - catched - यहाँ द्वितीय और द्वितीय रूप समान रहते हैं और इन दोनों के उच्चारण में समानता है। अर्थात् प्रथम में इसका उच्चारण "कैच" है द्वितीय और तृतीय में इसका उचारण है 'कैच्ड'।

3. Eat - ate - eaten - यहाँ तो तीनों रूप भिन्न रहते हैं। प्रथम में उच्चारण ईट है तो द्वितीय में वह एट है और तृतीय में एटन

यहाँ इसपर भी ध्यान देना संगत होगा कि प्रथम शब्द से ही वर्तमान और भविष्यकाल के रूप वना दिए जाते हैं।

I catch - the catcher - They will catch

यहाँ इस संदर्भ में सहायक क्रियाओं, संयुक्त क्रियाओं तथा प्रेरणार्थक क्रियाओं पर भी विचार करना उचित रहेगा।

सक, चुक, लग, दे, पा, चाह, पड, हो, कर, रह, जा -ये हिन्दी की मुख्य सहायक क्रियाएँ हैं जिनके प्रयोग के संदर्भ में कुछ अपने नियम भी होते हैं। अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में देखें तो ये क्रियाएँ समस्याएँ पैदा नहीं करतीं क्योंकि इनके प्रयोग से संबद्ध जो नियम हैं जिनको जानने पर आसानी से अनुवाद किया जा सकता है। प्रेरणार्थक क्रियाओं के संदर्भ में भी बात इस तरह की है। लेकिन यहाँ इसपर ध्यान देना होगा कि अकर्मक क्रियाएँ भी प्रेरणार्थक होने पर सकर्मक धे जाती हैं अर्थात् सकर्मक क्रिया की तरह उनका प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए 'सोना' अकर्मक क्रिया है।

'राम सो गया' या 'राम सोया'

इससे जब प्रेरणार्थक क्रिया बना ली जाती है तब वह अकर्मक क्रिया, सकर्मक जैसी हो जाती है।

उषा ने राम को सुलाया। अनुवादक को इसपर ध्यान देना होगा।

संयुक्त क्रियाओं के ख्याल से कहें तो हिन्दी कि कई संयुक्त क्रियाओं का अनुवाद अग्रेज़ी में उसी तरह से होता है। बस अनुवादक को उनके प्रयोग की जानकारी चाहिए।

उदा Fell down - गिर पडा।

Went away - चला गया

to speak out - बोल उठना।

लेकिन हाँ, दे, ले, पड, उठ, डाल आदि हिन्दी में प्रयुक्त की जानेवाली संयुक्त क्रियाओं का अनुवाद करते समय अनुवादक को कुछ और बातों पर नज़र डालनी होगी। दृष्टातंत: हिन्दी में 'दे' अपने लिए की जानेवाली किसी बात का बोध जगाता है तो 'ले' किसी दूसरे के लिए किए जानेवाले कार्य का बोध देता है।

वह खत पढ़ लो - Read that letter (for yourself)

वह खत पढ़ दो Read that letter (for me)

तुम देख लो - you just see

तुम दिखा दो - you show (me)

इसी तहर 'पड' अचानक हो जानेवाले किसी कार्य को स्पष्ट करता है तो 'उठ' किसी अप्रतीक्षित कार्य की सूचना देता है। जैसे,

गिर पडना - to fall suddenly

से पडना- to best into tears

जाग उठना - to wake up

बोल उठना - to sepak out

यहाँ पर संक्षेपत: यह कहा जा सकता है कि ऐसी क्रियाओं के प्रयोग की जानकारी अनुवादक को अनुभव द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण वह है जो क्रिया की विशेषता बताता है। इसके मुख्यतः चार भेद होते हैं।

सचमुच, ठीक	1. रीतिवाचक (Adverbs of manner)
जब, तब आज	2. कालवाचक (Adverbs of time)
अन्दर, बाहर, यहाँ	3. स्थानवाचंक (Adverbs of place or direction)
बहुत, कम, कुछ	4. परिमाणवाचक (Adverbs of degree or measure)

इनके अतिरिक्त 'विविध' (Miscellaneous adverbs) के रूप में एक पाँचवाँ भेद भी हो सकता है।

उदा आनन्दपूर्वक, जहाँ का तहाँ आदि।

क्रियाविशेषणों के अनुवाद के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि इस दृष्टि से अनुवादक को उतनी कठिनाइयों का सामना करना नहीं पडता है। इनके प्रयोग में हिन्दी एवं अंग्रेज़ी में बहुत समानताएँ प्राप्त हो जाती हैं। उदाहरण के तौर पर,

1. वह यहाँ ठीक चार बजे आया - He came here exactly at 4 0' clock

2. जब कभी वह मेरे घर आता है मैं उसे चाय पिलाता हूँ

Whenever he comes to my house, I give him tea.

3. रती बाहर गयी है, भीतर नहीं। - Rati has gone out, not inside.

4. वीमार आदमी को कम खाना चाहिए। - A sick man should eat less

5. उनका काम जहाँ का यहाँ रह गया - Their work remained where it was

'न' का प्रयोग निषेध के आदर के और आदेश के अर्थ में किया जाता है, जो अनुवादक के लिए कठिनाई पैदा करता है।

मैं नहीं जाऊँगा I won't go (निषेध)

यहाँ आइए न - Please come here (आदर) (अनुनय)

न जा वहाँ - Don't go there (आदेश)

अग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करते समय 'आदर या अनुनय' के प्रसंग में 'न' के नष्ट होने की संभावना काफी रहती है। Neither - nor के प्रसंग में भी 'न' का प्रयोग होता है।

संबंधसूचक

संबंधसूचक शब्द वैसे प्रत्येक भाषा में होते हैं और अग्रेज़ी संबंधसूचक शब्दों से हिन्दी के संबंधसूचक शब्दो का मुख्य अंतर यह है कि अग्रेज़ी में जहाँ संबंधसूचक शब्द संज्ञा के पहले आते हैं, वहाँ हिन्दी में वे संज्ञा के बाद आता हैं।

उदा on the table

in the box

राम की तरह

छत के ऊपर

साधारणत संबधसूचक शब्दों के अनुवाद के प्रसंग में उतनी दिक्कत तो नहीं होती है, लेकिन इन शब्दों के पहले प्रयुक्त की जानेवाली 'का, के, की' जैसे कारक - विभक्तियों के कारण कभी कभी इनके प्रयोग में थोडी दुरूहता आती है।

आम तौर पर हिन्दी में प्रयुक्त किए जानेवाले संबंधसूचक शब्दों के पहले 'के, की' का प्रयोग होता है।

के बाद After

के पहले - Before

के साथ - along with

की तरह - like

की और towards

की अपेक्षा - than

लेकिन कठिनाई यहीं पर आती है कि इनमें से अगर 'ओर' के साथ सख्यावाचक विशेषण का प्रयोग किया जाय, तब इसके साथ प्रयुक्त की जानेवाली विभक्ति 'की' के बदले 'के' हो जाती है।

उदा नगर के चारों और on the four sides of the town

नगर की ओर towards the town

ऐसे प्रयोगों की जानकारी अनुवादक को होनी चाहिए।

संबंधसूचक शब्दों का प्रयोग जब क्रियाविशेषण के रूप में किया जाता है तब इसके साथ कोई विभक्ति प्रयुक्त नहीं होती।

संबंधसूचक	क्रियाविशेषण
कौआ पेड के नीचे गिर पडा।	कौआ नीचे गिर पडा।
गोपाल श्याम के पीछे आया।	गोपाल बहुत पीछे आया।

कभी कभी संबंधसूचक शब्दों के संदर्भ में 'के' इसके स्थान पर 'से' का प्रयोग होता है, जिससे अनुवादक को भ्रम भी हो सकता है।

'समय के पहले' के स्थान पर 'समय से पहले' का प्रयोग

'समाज के बाहर' के स्थान पर 'समाज से बाहर'

विभिक्तियों के साथ और बिना विभक्तियों के भी प्रयुक्त क्रिए जानेवाले संबंधसूचक शब्दों से भी अनुवादक को परिचय स्थापित कर लेना चाहिए।

उदा : द्वारा - के द्वारा (दोनों सही)

बिना - के बिना (दोनों सही)

राम द्वारा मुझे यह चिट्ठी मिली (के द्वारा) - I got this letter through Ram

पानी विना हम जी नहीं सकते (के बिना) - We can't live without water

संबधसूचक शब्दों के संदर्भ में एक और बात ध्यातव्य यह भी है कि एक ही संबंधतत्व का अलग अलग अर्थ होता है, before, in front of आदि।

There's a garden in front of my house मेरे घर के सामने एक बगीचा है। 'सामने' का दूसरा अर्थ है, When compared to

मोहन के सामने सतीश कौन है - इसका मतलब है Mohan is efficient when compared to Satheesh.

इस तरह के उदाहरण और भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

समुच्चय बोधक और विस्मयादिबोधक के संदर्भ में समस्या उतनी गंभीर नहीं है, अत: उनपर विस्तार से विचार नहीं किया जा रहा है।

रूपविज्ञान के परिदृश्य में अनुवाद के कुछ विशिष्ट पक्ष

रूपविज्ञान के साथ अनुवाद का जो घनिष्ट संबंध है, इसपर विचार प्रस्तुत किया जा चुका है, अब हम रूपविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद के कुछ विशिष्ट पक्षों पर विचार करेंगे।

'a, an' का प्रयोग जिन्हें हम 'एर्टिकिल्स कहते हैं, अंग्रेज़ी में होता है, लेकिन हिन्दी में नहीं होता। हिन्दी से अग्रेज़ी में अनुवाद करते समय इनके प्रयोग पर विशेष ध्यान देना पडता है क्योंकि अग्रेज़ी में a, e, i, o, u जिन्हें 'ववल्स' कहते हैं, उनसे शुरु होनेवाले शब्दों के साथ 'an' का प्रयोग करना पडता है जो अनिवार्य है। यथा -

वह एक गेंद है। That is a ball

वह एक छतरी है। That is an umbrella

'a, the' इनेक प्रयोग पर भी ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि 'a' सामान्यता की और इंगित करता है तो 'the' विशिष्टता का बोध जगाता है।

यथा That is a pen - वह एक कलम है। (सामान्यता)

That is the pen - वही कलम है। (विशिष्टता)

यहाँ प्रथम वाक्य में 'कलम' का सामान्य बोध होता है तो द्वितीय में हमें एहसास होता है किसी 'विशिष्ट कलम' का। अनुवादक को ऐसे प्रयोगों की जानकारी रखनी चाहिए।

हिन्दी में संज्ञा और सर्वनाम विभक्तियों के साथ जब जुड जाते हैं, तब उनके तीन रूप हमारे सामने आते हैं।

लडका - लडके ने - लडकों ने

जो - जिसने - जिन्होंने

लेकिन अग्रेज़ी में ऐसा नहीं होता।

King - Kings

That king has done this work - उस राजा ने यह काम किया है।

Those kings have done this work - उन राजाओं ने यह काम किया है।

हिन्दी और अग्रेजी में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो हमेशा एकवचन या बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शव्दों के प्रयोग के संदर्भ में अनुवादक को सतर्क रहना चाहिए। उदाहरण के लिए हिन्दी में 'दर्शन' प्राण, बाल' आदी हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त शब्द हैं। और अग्रेज़ी में हमेशा वहुवचन में प्रयुक्त शब्दों के उदाहरण हैं। Spectacles, Scissors, आदि

समय को सूचित करने के लिए हिन्दी और अग्रेज़ी में कुछ शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनका प्रयोग भाषा के अनुकूल ही करना चाहिए। यहाँ विभक्तियों की चिंता न करनी चाहिए।

शाम को in the evening

रात में - at night

दिन में - during day time

अग्रेज़ी की कुछ क्रियाओं की विशेषता यह होती है कि उसके सकर्मक, अकर्मक रूप एक जैसे ही होते हैं।

यथा - Open

That door opens - वह दरवाज़ा खुलता है।

He opens the door - वह दरवाज़ा खोलता है।

हिन्दी में वस्तुओं को पुल्लिंग, स्त्रीलिंग बनाने की पद्धति प्रचलित है तो अग्रेज़ी में ऐसी बात दिखाई नहीं देती। यथा -

डिव्वा - डिविया

(पु) (स्त्री)

इनके अलावा प्रत्येक भाषा के कुछ अपने नियम होते हैं जिनका अनुवाद करते समय अनुवादक को कठिनाइयों का सामना करना पडता है। उदाहरण के लिए, 'लडका (वह) अच्छी तरह से गाता है' और 'लडकी (वह) अच्छी तरह से गाती है' के लिए अग्रेज़ी में 'He sings well' तथा 'She sings well' का प्रयोग मिल जाता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में इनका, दूसरे ढंग से भी अनुवाद हो सकता है।

He sings well - वह अच्छा गाता है।

She sings well - वह अच्छा गाती है।

इसे हिन्दी की एक विशेषता मानने के सिवाय और कोई चारा नज़र नहीं आता। इस तरह का एक और उदाहरण दिया जा रहा है।

He read the letter and placed it on the table - हिन्दी में इसके दो अनुवाद संभव है।

1. उसने चिट्ठी को पढा और उसे मेज़ पर रख दिया।

2. उसने चिट्ढी पढी और वह मेज़ पर रख दी।

हिन्दी और अंग्रेज़ी के संख्यावाचक शब्दों की कुछ विशेषताएँ होती है जिनपर विचार करना भी इस अवसर पर संगत लगता है।

हिन्दी

एक	- दस	- ग्यारह
दो	बीस	इक्कीस
तीन	- तीस	- इक्तीस
चार	- चालीस	- इक्तालीस
पाँच	- पचास	इकावन
छह	- साढ	- इकसढ़
सात	- सत्तर	- इकहत्तर
आठ	- अस्सी	- इकासी
नौ	- नब्बे	- इकानबे
दस	- सौ	- एक सौ एक

अग्रेज़ी

One	- ten	- eleven
Two	- Twenty	- Twenty one
Three	- Thirty	Thirty one
Four	- Forty	- Forty one
Five	- Fifty	- Fifty one
Six	- Sixty	- Sixty one
Seven	- Seventy	- Seventy one

Eight	Eighty	- Eighty one
Nine	Ninenty	- Ninenty one
Ten	- Hundred	- One hundred and one

यहाँ इन दोनों की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेज़ी में संख्यावाचक शब्दों की रचना आसान है। हिन्दी में संख्यावाचक शब्दों के बीच जो संबंध है उससे ज्यादा घनिष्ट संबंध अग्रेज़ी में संख्यावाचक शब्दों के बीच रहता है।

यथा -	पाँच -	पचास -	इकावन
	Five -	Fifty -	Fifty one

हिन्दी की तरह अग्रेज़ी में भी एक से बीस तक (one से Twenty तक) स्वतंत्र शब्द मिल जाते हैं लेकिन बीस के बाद संख्यावाचक शब्दों की रचना अग्रेज़ी में एकदम आसान हैं।

जैसे

Twenty one	इक्कीस
Twenty two -	बाईस
Twenty three-	तेईस आदि।

छोटापन दिखानेवाले 'ऊनवाचक' शब्दों का प्रयोग हिन्दी की अपनी विशेषता है, जैसे

उन्नीस - Nineteen

उनतीस - Twenty Nine

उनचालीस - Thirty

उनचास - Fourty Nine आदि।

कुल मिलाकर कहा जाय तो कहा जा सकता है कि संख्यावाचक शब्दों के अनुवादक के संदर्भ में हिन्दी से अंग्रेज़ी में उतनी कठिनाई नहीं होती जितनी अग्रेज़ी से हिन्दी में होती है।

सामसिक शब्द जैसे 'कृष्ण' के लिए (पीतांबर) शब्द का प्रयोग और हलचिह्न जैसे (अवाक्) हिन्दी की अपनी विशेषताएँ हैं।

'एपोस्ट्रफी' का प्रयोग, जैसे राम की लडकी के लिए 'Ram's daughter' का प्रयोग 'सैलन्ट लेटर' का प्रयोग जैसे 'Psychology' में 'P' को छोडकर किया जानेवाला उच्चारण - यह सब अग्रेज़ी की अपनी विशेषताएँ हैं। ऐसी विशेषताओं को रूपवैज्ञानिक संदर्भ में परखकर उस दृष्टिकोण से उनपर विचार रखना सही रहेगा।

निष्कर्ष

इसमें सन्देह नहीं कि शब्द एवं अर्थ के बीच में एक कडी के रूप में उपस्थित 'रूप' का अनुवाद के संदर्भ में विशेष महत्व होता है। रूपों का अध्ययन भाषिक शुद्धता की तरफ प्रकाश डालता है और भाषा की शुद्धता अनुवाद के संदर्भ में अनिवार्य मानी जाती है। रूपविद्धज्ञान की दृष्टि से अनुवाद की सबसे बडी कठिनाई यह होती है कि

'रूपों' के प्रयोग की जो दिशाएँ हैं वे प्रत्येक भाषा की अपनी होती हैं। शब्दों के विभिन्न प्रकारों में संबंधतत्व के कारण जो परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन को समझना और उसे दूसरी भाषा में उतारना काफी कठिन कार्य होता है।

पंचम अध्याय

अनुवाद की वाक्यवैज्ञानिक समस्याएँ

वाक्यविज्ञान अनुवाद का महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि भाषाविज्ञान के जितने भी अन्य पक्ष हैं, उनका सीधा संबंध वाक्य विज्ञान से रहा है। दूसरे शब्दों में कह दिया जाय तो भाषा के जितने भी तत्व हैं, उन सबका विलयन वाक्य से हो जाता है। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि दूसरे अध्यायों में जितने भी तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है, उनका संबंध वाक्य से रहता है। अतः वाक्य के संदर्भ में उन सारी बातों को दुहराने की कोई आवश्यकता, यहाँ पर शोधार्थी सहस्स् महसूस नही करता। वाक्य विज्ञान के विविध मुद्दों पर रोशनी फेरकर, वाक्य के विशिष्ट प्रयोगों पर विचार करना ही शोधार्थी का इस अध्याय में उद्देश्य हैं।

वाक्यविज्ञान के संदर्भ में उल्लेख्य एक बात यह है कि अनुवाद मुख्यत : अग्रेज़ी से हिन्दी में हो रहा है। अग्रेज़ी को स्रोतभाषा एवं हिन्दी को लक्ष्यभाषा के रूप में देखने के लोगे आदी हो चुके हैं। कार्यालयी अनुवाद के संदर्भ में तो हिन्दी से अग्रेज़ी में अनुवाद कार्य चल रहा है, लेकिन कहना पडेगा कि अनुवाद का आधार मुख्यतः यहँ भी अग्रेज़ी की शैली ही है। वाक्य-रचना एवं वाक्य के प्रकारो पर प्रकाश डाल पश्चात् हम इस बात पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

वाक्यविज्ञान अनुवाद का महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि भाषाविज्ञान के जितने भी अन्य पक्ष हैं, उनका सीधा संबंध वाक्य विज्ञान से रहा है। दूसरे शब्दों में कह दिया जाय तो भाषा के जितने भी तत्व हैं, उन सबका विलयन वाक्य से हो जाता है। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि दूसरे अध्यायों में जितने भी तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है, उनका संबंध वाक्य से रहता है। अतः वाक्य के संदर्भ में उन सारी बातों को दुहराने की कोई आवश्यकता, यहाँ पर शोधार्थी सहस्स् महसूस नही करता। वाक्य विज्ञान के विविध मुद्दों पर रोशनी फेरकर, वाक्य के विशिष्ट प्रयोगों पर विचार करना ही शोधार्थी का इस अध्याय में उद्देश्य हैं।

वाक्यविज्ञान के संदर्भ में उल्लेख्य एक बात यह है कि अनुवाद मुख्यत : अग्रेज़ी से हिन्दी में हो रहा है। अग्रेज़ी को स्रोतभाषा एवं हिन्दी को लक्ष्यभाषा के रूप में देखने के लोगे आदी हो चुके हैं। कार्यालयी अनुवाद के संदर्भ में तो हिन्दी से अग्रेज़ी में अनुवाद कार्य चल रहा है, लेकिन कहना पडेगा कि अनुवाद का आधार मुख्यतः यहाँ भी अग्रेज़ी की शैली ही है। वाक्य-रचना एवं वाक्य के प्रकारों पर प्रकाश डालने के पश्चात् हम इस बात पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

वाक्य की परिभाषा एवं विशिष्टताएँ

"वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द (पद) होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम-से-कम एक समापिका क्रिया अवश्य होती है।"[1]

प्रस्तुत परिभाषा से तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वाक्य भाषा की एक ऐसी इकाई है जो सहज होता है और अर्थ की दृष्टि से पूर्ण या अपूर्ण रहने के बावजूद भी व्याकरणिक दृष्टि से वह पूर्ण होता है। इसकी व्याकरणिक पूर्णता कभी संदर्भ पर निर्भर करती है तो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक समापिका क्रिया का भाव भी इसमें निहित रहता है। इस अवसर पर यह भी जोड दिया जा सकता है कि वाक्य की प्रतीति व्याकरणिक होने के साथ ही साथ मानसिक भी है। संप्रेषण की संभावनाओं को लेकर वाक्य चलता है और बीच अगर बाधा आ जाय तो वाक्य का अस्तित्व नष्ट भी हो सकता है।

आचार्यों ने वाक्य की आवश्यकताओं के संदर्भ में कुछ तत्वों का उल्लेख किया है जिनकें अंतर्गत सार्थकता, योग्यता आकांक्षा, सन्निधि या आसक्ति और अन्विति

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी - भाषा विज्ञान - पृ 209

आती है।[1] सार्थकता में वाक्य में शब्दों की सार्थकता पर बल दिया गया है। योग्यता इस और इशारा करती है कि वाक्य कें शब्दों में प्रसंगानुकूल भाव का वोध कराने की क्षमता होनी चाहिए। श्रोताओं के मन की उत्कंठा को शांत करने की बात 'आकांक्षा' के अन्तर की जाती है। 'आसक्ति' का तात्पर्य यह लगा दिया जा सकता है कि वाक्य में शब्द एक दूसरे के निकट होने चाहिए। 'अन्विति' व्याकरीणिट दृष्टि से एकरूपता को सूचित करती है।

वाक्य के दो अंग हो सकते हैं जिनके उद्देश्य (subject) और विधेय (Predicate), दो नाम भी रखे गए हैं। उद्देश्य वाक्य का वह अंश है जिसके बारे में वाक्य के शेष भाग में कुछ कहा गया है। उस केन्द्रीय अंश का विस्तार भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए

अम्बिका खूबसूरत है - इस वाक्य में 'अम्बिका' उद्देश्य है जिसके बारे में वाक्य के शेष पक्ष में यह कहा गया है कि वह खूबसूरत है। यहाँ 'अम्बिका' केन्द्रीय शब्द का विस्तार भी किया जा सकता है, जैसे,

उषा की बहन अम्बिका खूबसूरत है।

उद्देश्य के विषय में बतानेवाला वाक्य का पक्ष 'विधेय' कहलाता है। इस में भी विस्तार आ सकता है। जैसे,

1. डॉ नारायण दास समाधिया - भाषाविज्ञान और हिन्दी भाषा - पृ 179

अम्बिका खूबसूरत है - इस वाक्य में 'खूबसूरत है' विधेय है जिसका विस्तार इस तरह से हो सकता है कि 'अम्बिका अप्सरा सी खूबसूरत है। 'अप्सरा सी खूबसूरत है' - यह विधेय का काम करता है।

वाक्य - भेद एवं संरचना

छोटे - मोटे अनेक आधारों पर वाक्य के कई प्रकार तो निर्धारित किए जा सकते हैं, लेकिन इस संदर्भ में यह उतना बांछनीय नहीं समझा जाता। अतः प्रमुख भेदों का परिचय ही यहाँ दिया जा रहा है।

रचना के परिदृश्य में वाक्य के तीन भेद निर्धारित किए जा सकते हैं।

1. सरल वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय, जिस वाक्य में हो, वह सरल वाक्य कहा जाता है।

यथा - सजीव जाता है।

शीला नाचती है।

मिश्र वाक्य में दो या अधिक सरल वाक्य होते हैं जिनमें से एक प्रधान होता है और बाकी सब आश्रित।

उदा - जो गुणी होते हैं, उनका सभी जगह आदर किया जाता है।

'उनका सभी जगह आदर किया जाता है' - प्रधान है और 'जो गुणी होते हैं, अश्रित।

संयुक्त वाक्यों की रचना तब होती है जब दो स्वतंत्र सरल वाक्य योजकों के माध्यम से जुटते हैं। सरंचना के आधार पर इसके दो प्रकार हो सकते हैं जिनमें से प्रथम प्रकार में एक वाक्य पूर्ण होता है और दूसरा अपूर्ण।

यथा : वह मंदिर जा रहा है, सीता घर।

द्वितीय प्रकार में दोनों वाक्य पूर्ण होते हैं।

यथा : वह तो मंदिर जा रहा था, लेकिन सीता ने रोक लिया।

इनके अलावा उपवाक्य के रूप में भी वाक्य एक प्रकार हो सकता है। दो या अधिक सरल वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाते समय, उस एक वाक्य में जो वाक्य मिले होते हैं, उन्हें हम उपवाक्य कह सकते हैं।

मेरा नाम मोहन है और उसका नाम रवि है।

इस वाक्य में 'मेरा नाम मोहन है' और 'उसका नाम रवि है' दो उपवाक्य हैं।

इस संदर्भ में यह भी जानना उचित रहेगा कि सरल वाक्य के अकर्मकीय, एककर्मकीय, द्विकर्मकीय, कर्तृपूरकीय, कर्मपूरकीय के रूप में उपवाक्य के आश्रित उपवाक्य और प्रधान उपवाक्य के रूप में, संयुक्त वाक्य के एकसमुच्चयबोधकीय और द्विसमुच्चयबोधकीय के रूप में वर्गीकरण संभव है। आश्रित उपवाक्य के संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य, क्रियाविशेषण उपवाक्य के रूप में भी विद्वानों ने कुछ भेद निर्धारित किए हैं।

अनुवाद की दृष्टि से इन वाक्यों में ऐसी कोई कठिनाई दिखाई नहीं देती, लेकिन मिश्र वाक्यों का अग्रेज़ी से अनुवाद करते समय अग्रेज़ी की छाया उनमें होने की काफी गुंजाइश रहती है।

यथा: The person who came yesterday, arrested by the police.

वह व्यक्ति जो कल आया था, पुलिस से गिरफ्तार हो गया। स्पष्ट है कि इसमें अग्रेज़ी की छाया है, हिन्दी की प्रकृति के अनुसार 'जो व्यक्ति कल आया था वह पुलिस से गिरफ्तार हो गया' - यही सही अनुवाद होगा। लेकिन अग्रेज़ी का प्रभाव इतना ज्यादा हो गया है कि अब प्रथम अनुवाद में भी कोई गलती नज़र न आने लगी है।

अर्थ के आधार पर भी वाक्य के कई भेद निर्धारित किये गए हैं।

1. कार्यसूचक

जिस वाक्य से किसी कार्य का बोध हो, उसे हम कार्यसूचक वाक्य कहते हैं।

उदा उसे जाने दो।

2. निषेधसूचक

जो वाक्य निषेध को सूचित करता है, उसे निषेधसूचक कहते हैं।

उदा मैं नहीं जाऊँगा।

3. आज्ञार्थक

आज्ञा का बोध जिस वाक्य से होता है, वही आज्ञार्थक वाक्य है।

उदा : तू वहाँ जा।

4. प्रश्नबोधक :

किसी प्रश्न को सूचित करने वाले वाक्य को प्रश्नबोधक वाक्य कहते हैं।

उदा : तुम कहाँ जा रहे हो?

5. भावसूचक :

जिस वाक्य से किसी मानसिक भाव की अभिव्यक्ति हो, उसे भावसूचक वाक्य

कहते हैं।

उदा अरे! गज़ब हो गया।

6. इच्छार्थक ;

आशीर्वाद, शुभकामना, इच्छा आदि का बोध जिस वाक्य से होता है, वही इच्छार्थक वाक्य है।

उदा : भगवान हमेशा तुम्हारा साथ रहे।

7. संभावनासूचक :

जिस वाक्य से संभावना का बोध होता है या जिस वाक्य में सन्देह की स्थिति होती है उसे संभावनासूचक वाक्य कह सकते हैं।

उदा : ऐसा लगता है कि वह नहीं आएगा।

8. शर्तबोधक ;

शर्त की स्थिति जिस वाक्य से व्यक्त हो, उसे शर्तबोधक वाक्य कह सकते हैं।

उदा तू इधर आएगा तो मैं ज़रूर जाऊँगा।

इनसे संबद्ध समस्याओं पर आगे विचार किया जाएगा। अव हम वाक्य-निर्माण

की विविध पद्धतियों पर दृष्टिनिक्षेप करते हुए उनके परिपार्श्व में अनुवाद की समस्याओं को समझने की कोशिश करेंगे।

वाक्य - निर्माण की विविध पद्धतियाँ

वाक्य - रचना की विविध पद्धतियों पर विचार करने से पहले अग्रेज़ी एवं हिन्दी के सामान्य वाक्य - गठन के संबंध में थोडी जानकारी हासिल करना सहायक सिद्ध होगा। अग्रेज़ी में समान्यत: कर्ता, क्रिया कर्म का क्रम, वाक्य में होता है तो हिन्दी में वह क्रम कर्ता, कर्म एवं क्रिया के हिसाब से होता है। यथा:-

अग्रेज़ी

Mohan goes to school

कर्ता क्रिया कर्म

हिन्दी

मोहन स्कूल जाता है

कर्ता कर्म क्रिया

वाक्य रचना के संदर्भ में हिन्दी में प्रयुक्त की जानेवाली प्रमुख पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं।

1. पदक्रम
2. नियमन

3. अन्विति

4. अनुतान

पदक्रम

जैसे कि ऊपर बता दिया जा चुका है, प्रत्येक भाषा के शब्दक्रम या पदक्रम का अपना महत्व होता है। अनुवाद के संदर्भ में पदक्रम की दृष्टि से समस्या तब उद्‌भूत होती है जब प्रभाव बढाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

1. हम तो सेवक हैं।

2. हम सेवक तो हैं।

इन दो वाक्यों को ले लीजिए। शब्दों के क्रम में परिवर्तन आ जाने के कारण अर्थ में या तो भाव में थोडा अंतर आ गया है। प्रथम वाक्य में विनय की भावना ज्यादा है तो द्वितीय में शिकायत की भावना भी कहीं लक्षित होती है। इस प्रकार के अंतर को अनुवाद में लाना काफी कठिन हो जाता है क्योंकि ये तो प्रत्येक भाषा की अपनी विशेषताएँ हैं। यहाँ पर यह भी संगत है। कार्यालयी अनुवाद के प्रसंग में हिन्दी पर अग्रेज़ी के शब्दक्रम या पदक्रम का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए अग्रेज़ी में किसी बात पर बल देने के लिए शब्दों के क्रम में परिवर्तन लाने की प्रणाली प्रचलित हैं।

जैसे कि

1. within seven days the copies of the certificate should reach at the main office.

2. The copies of the certificates should reach at the main office within seven days.

कार्यालयी हिन्दी में इन दोनों वाक्यों के अनुवाद हमें इस तरह से मिल जाते हैं।

1. एक सप्ताह के भीतर, प्रमाण - पत्रों की प्रतिलिपियाँ मुख्य कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।

2. प्रमाण - पत्रों की प्रतिलिपियाँ मुख्य कार्यालय में एक सप्ताह के भीतर पहुँच जानी चाहिए।

इन वाक्यों में से पहले में 'एक सप्ताह के भीतर' इसपर बल देने के लिए प्रथमत: इसका प्रयोग किया गया है और दूसरे वाक्य में 'प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ' प्रथमत: इसका प्रयोग इसलिए हुआ है कि बल इसपर ज्यादा देना है।

अग्रेज़ी के पदक्रम की यह एक खासियत है कि शब्दों के क्रम के बदलने से वहाँ सामान्य वाक्य प्रश्नवाचक बन जाता है।

उदा You are alright - आप ठीक हैं।

Are you alright ? - क्या आप ठीक हैं?

शब्दक्रम के संदर्भ में यह भी ध्यातव्य है कि अग्रेज़ी में उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष एवं अन्य पुरुष का एकसाथ प्रयोग करते समय, पहले अन्यपुरुष का प्रयोग होता है जबकि हिन्दी में प्रथमत: उत्तमपुरुष का ही प्रयोग किया जाता है।

उदा

हिन्दी - मैं और वह उस कमरें में उपस्थित थे।

अग्रेजी - He and I were present in that room

यहाँ पर यह भी कहना उचित लगता है कि प्रत्येक भाषा में शब्दों के बीच एक तरह का संबंध रहता है और वह संबंध ही भाव को स्पष्ट करने में समर्थ होता है। अनुवादक की विडंबना यह है कि उस संबंध को पकडना और अगर पकड में आ भी जाय तो दूसरी भाषा में उसी रूप में उसे उतारना - काफी मुश्किल का कार्य है। स्रोत एवं लक्ष्यभाषा के प्रयोग के विविध आयामों से अभिज्ञ एक व्यक्ति ही सफल अनुवाद कर सकता है। उदाहरण के लिए कभी कभी वाक्यों का प्रयोग करते समय उनसे एकाधिक भाव उमडनें लगते हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपनीं अपनी मानसिकता के अनुसार उन भावों में से किसी एक भाव को ग्रहण करता है। यह आवश्यक नहीं कि मूल वक्ता के उद्देश्य को श्रोता उसी अर्थ में सुने और समझे। अनुवादक भी आखिर

एक व्यक्ति होता है और ऐसी परेशानियाँ उसके साथ भी हो सकती है। 'राजनीति' 'दर्शन' आदि विषयों पर किए जानेवाले भाषणों के अनुवाद के प्रसंग में यह परेशानी सर्वाधिक हो सकती है क्योंकि मानसिकता, सामाजिकता, दृष्टिकोण आदि के परिदृश्य में यहाँ अर्थ के अनेक आयाम संप्रेषण के अनेक धरातल विकसित हो सकते हैं।

अन्विति

'अन्विति' से मतलब है 'वाक्य में शब्दों की स्थिति'। वाक्य में किसी भी शब्द का प्रयोग करते समय हमें लिंग वचन, पुरुष और कारक की दृष्टि से उसपर सोचना पडता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण आदि के परिपार्श्व में शोधार्थी, अनुवाद एवं 'रूपविज्ञान' नामक अध्याय में इसपर विस्तार से विचार प्रस्तुत किया जा चुका हैं अत: उन सबको यहाँ दोहराने की आवश्यकता नज़र नहीं आती है।

अग्रेज़ी एवं हिन्दी के अनुवाद के परिदृश्य में 'अन्विति' पर विचार करते समय ध्यातव्य एक बात यह है कि अग्रेज़ी मूलत: कर्तृप्रधान भाषा है और हिन्दी कर्मप्रधान भाषा। अत: इनके अनुवाद के संदर्भ में भाषिक दृष्टि से थोडा अंतर देखने को मिलता है।

यंथा

I think he won't come - (1) मैं सोचता हूँ कि वह नहीं आएगा।

2. मुझे लगता है कि वह नहीं अएगा।

इनमें से द्वितीय अनुवाद ही हिन्दी के ज़्यादा अनुकूल हैं।

I believe - मेरा विश्वास है

I hope - मेरी आशा है।

I am happy - मुझे खुशी है। जैसे अनेक प्रसंगों में इस तरह के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं।

नियमन

नियमन का संबंध व्याकरण से है। वाक्य में किसी शब्द को रखते समय, उसके कारण वाक्य के अन्य शब्दों में जो परिवर्तन होता है, उसे हम नियमन कहते हैं। दूसरे शब्दों में कह दिया जाय तो 'नियमन' के अन्तर्गत व्याकरणिक नियम ही आते हैं। उदाहरण के तौर पर कहा जा सकता है कि अग्रेज़ी में एक ऐसा निमय है जिसके अनुसार 'Vowels' के साथ सिर्फ 'an' का ही प्रयोग होता है। 'Everybody, Everyone' आदि का प्रयोग करते समय क्रिया का प्रयोग एकवचन में होता है। हिन्दी में भी इसके बहुत सारे उदाहरण मिल सकते हैं।

हिन्दी में ऐसा कहा गया है कि 'लड, भिड, जूझ, डर' आदि क्रियाओं के पूर्व 'से' परसर्ग का ही प्रयोग होना चाहिए।

मैं उससे डरता हूँ।

मैं उससे लडता हूँ। आदि

चाहिए के साथ 'को' का प्रयोग, भूतकाल में सकर्मक क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग - यह सब इसके दृष्टांत कहे जा सकते हैं।

'नियमन' के संदर्भ में कठिनाई यह है कि जितने भी नियम हमें प्राप्त हो जाते हैं उतने अपवाद भी, उनके साथ मिले हुए हैं। हिन्दी की तुलना में अग्रेज़ी इस दृष्टि से आगे हैं। अग्रेज़ी में, नियमों के अपवाद हमें बहुत कम ही मिल जाते हैं। अनुवाद के संदर्भ में नियमन की जानकारी प्राप्त करने से अनुवादक को उतना लाभ नहीं होता क्योंकि व्यावहारिकता की दृष्टि से नियमन का महत्व सीमित है।

अनुतान

वाक्य-रचना के संदर्भ में 'अनुतान' का अपना महत्व होता है क्योंकि इसके कारण अर्थ का स्वरूप बदल सकता है। हिन्दी में इसकी संभावनाएँ बहुत हैं।

1. राम ने वह किताब पढी हैं?

2. राम ने वह किताब पढी हैं।

3. राम ने वह किताब पढी है।

यहाँ अनुतान के कारण तीनों वाक्यों से उद्‌भूत अर्थ में परिवर्तन आ गया है। प्रथम वाक्य में किसी प्रश्न का एहसास होता है तो द्वितीय वाक्य से सामान्य कथन का बोध होता है। तृतीय कथन आश्चर्य की तरफ इशारा करता है। अग्रेज़ी में इस वाक्य का अनुवाद 'Ram has studied that book' के रूप में हो सकता है, लेकिन अनुतान (tone) पर बल देकर अर्थ में हम परिवर्तन नहीं ला सकते। यों कहने का प्रयास करना उस भाषा के प्रति अन्याय ही होगा। व्यग्य, हास्य आदि के संदर्भ में भी इस तरह अनुतान का प्रयोग होता है, तो अनुवाद में लाना काफी कठिन है।

वाक्य - रचना के अवसर पर 'चयन' नामक एक पद्धति का भी उल्लेख होता है, लेकिन शोधार्थी का ख्याल है कि इसकी चर्चा पदक्रम की चर्चा से काफी मिलती - जुलती है। हाँ! इसका विस्तार इस तरह से हो सकता है कि वाक्य में शब्दों की सुसंगति पर पर्याप्त बल दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार वाक्य-रचना की विभिन्न पद्धतियों पर दृष्टि डालने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि हिन्दी की वाक्य-रचना की प्रणालियों से अग्रेज़ी वाक्य-रचना का खास संबंध नहीं है। अनुवादक का अपने अनुभव के आधार पर, अपनी सूझबूझ के आधार पर वाक्य में शब्दों का विन्यास करना चाहिए। वाक्य रचना की दृष्टि से अनुवादक की कोशिश सर्वाधिक इस ओर होनी चाहिए कि किसी वाक्य को पढ़कर या सुनकर किसी दूसरे वाक्य का भ्रम न हो।

वाक्य-रचना के प्रकार

वाक्य -रचना के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि यह दो प्रकार से हो सकती है।

1. पूर्ण वाक्यात्मक रचना

2. अपूर्ण वाक्यात्मक रचना

पूर्ण वाक्यात्मक रचना से मतलब है व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण वाक्य की रचना।

उदा : मोहन ने आवाज़ उठायी।

अपूर्ण वाक्यात्मक रचना में व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य की पूर्णता की तरफ ज्यादा ध्यान तो नहीं दिया जाता लेकिन अर्थ की दृष्टि से तो वाक्य पूर्ण रहता है। अक्सर किसी प्रश्न के उत्तर के रूप में अपूर्ण वाक्यों का प्रयोग होता है।

उदा : क्या मोहन ने आवाज़ उठायी?

हाँ।

यहाँ 'हाँ।' अपूर्ण वाक्यात्मक रचना से संबंध रखता है।

अनुवाद के संदर्भ में वाक्य-रचना के इन प्रकारों से कोई परेशानी नहीं रहती क्योंकि अपूर्ण वाक्यात्मक रचना से उद्‌भूत आशय को समझना उतना कठिन नहीं रहता।

'अन्त: केन्द्रिक रचना और अकेन्द्रिक रचना'[1] के रूप में भी वाक्य-रचना के दो प्रकार हो सकती हैं।

व्याकरणिक रचना की दृष्टि से वाक्य के स्तर पर एक या अनेक पदों में कोई अन्तर नज़र नहीं आ रहा हो, तो उसे हम अन्त: केन्द्रीक रचना कहेंगे।

उदा : वह लडका मर गया।

अच्छी तरह से काम करनेवाला वह लडका मर गया।

व्याकरणिक दृष्टि से 'वह लडका' और अच्छी तरह से काम करनेवाला वह लडका' - इन दोनों में कोई अंतर नहीं है।

अकेन्द्रिक रचना में प्रत्येक शब्द महत्पूर्ण होता है।

उदा : वह बस से आया। इस वाक्य में 'बस से' इस पर ध्यान दीजिए। 'बस से' दोनों शब्द यहाँ आवश्यक हैं, नहीं तो अर्थ की प्रतीति सही ढंग से नहीं होती।

अन्तः केन्द्रिक रचना का विभाजन 'सवर्गी और आश्रितवर्गी के रूप में हो सकता है। 'सवर्गी' में दोनों शब्द महत्वपूर्ण होते हैं जैसे 'राम और मोहन' आश्रितवर्गी

1. डॉ भोलानाथ तिवारी भाषाविज्ञान पृ 218

में एक शब्द प्रमुख रहता है और दूसरे शब्द आश्रित।

उदा बहुत सुन्दर लडकी। इसमें लडकी शब्द प्रमुख है 'सुन्दर' लडकी का आश्रित शब्द है और "बहुत सुन्दर" का आश्रित शब्द।

इनके संदर्भ में कहा जाय तो 'सवर्गी' की अपेक्षा 'आश्रितवर्गी' के अनुवाद में अधिक कठिनाई होती है क्योंकि प्रयोग दृष्टि से उसमें उनकी सुगमता नहीं होती।

वाक्य के अवयव

भोलानाथ तिवारी ने 'भाषाविज्ञान' नामक अपने ग्रंथ में वाक्य के अवयवों की तरफ ध्यान दिया है। संरचना की दृष्टि से वाक्य के किसी शब्द का, दूसरे शब्द के साथ जो संबंध होता है, उसीके आलोक में वाक्य के अवयवों का निर्धारण किया गया है।[1] उदाहरण के लिए,

1. मैं ने राजू को देखा। - इस वाक्य में 'मैं ने' का संबंध संरचना की दृष्टि से 'देखा' के साथ है। ये दोनों निकटस्थ अवयव हैं। राम को वाक्य का एक अलग अवयव हो सकता है।

अनुवाद करते समय अनुवादक को वाक्य के अवयवों पर काफी ध्यान देना

1. डॉ भोलानाथ तिवारी - भाषाविज्ञान - पृ 222

पडता है और देखना पडता है कि वाक्य के अवयवों में संबंध किस तरह से रहता है। उदाहरण के तौर पर देख लीजिएगा।

1. उसका आदर करने से क्या फायदा होता है?

2. उसके आदर करने से क्या फायदा होता है?

इनमें से प्रथम वाक्य में अर्थ दो तरह से आ सकते हैं। एक अर्थ यह है कि अमुक व्यक्ति का आदर करने से हमें कोई फायदा नहीं होता। दूसरा अर्थ यह बताता है कि किसी व्यक्ति द्वारा हमारा आदर होने से हमें कोई फायदा नहीं।

द्वितीय वाक्य में अर्थ यह स्पष्ट है कि किसीके द्वारा हमारा आदर होने से, हमें कोई फायदा नहीं होता। कहने का मतलब यह है कि अनुवाद करते समय अनुवादक को वाक्य के अवयवों पर, उनका, एक दूसरे से संबंध पर बल देना पडता है।

निकटस्थ अवयवों के विच्छिन्न अविच्छिन्न समकालिक-तीन प्रकार निर्धारित किये गए हैं।

भीतरी एवं बाहरी संरचना

भीतरी संरचना हमारे मन में होनेवाली, वाक्य की संरचना है और बाहरी संरचना में वाक्य, व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण होकर हमारे सामने आता है। भीतरी संरचना की यह खासियत होती है कि यहाँ आकर व्यक्ति व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य के बारे में सोचता है और बाहरी संरचना में उसकी सोच, मूर्त रूप में हमारे सामने

आती है। उदाहरण के तौर पर इस बात को इस प्रकार से समझाया जा सकता है।

भीतरी संरचना - मोहन, किताब, पढ, (पुल्लिंग, एकवचन) (वर्तमान काल)

बाहरी संरचना - मोहन किताब पढता है।

यहाँ पर यह कहना संगत लगता है कि भीतरी संरचना में वाक्य हमेशा शुद्ध रहता है, या शुद्धता की तरफ इसमें हमेशा ध्यान दिया जाता है। लेकिन वाक्य जब भीतरी संरचना से बाहरी संरचना तक आता है, तब उसमें गलती आ सकती है, समझने में दिक्कत हो सकती है और प्रयोग की दृष्टि से भी तब परोशानी हो सकती है। अनुवाद का संबंध वाक्य की बाहरी संरचना से होता है। अत: बाहरी संरचना से संबद्ध जितनी भी समस्याएँ हैं वे सारी समस्याएँ अनुवाद के क्षेत्र में परेशानी पैदा करती हैं।

भीतरी, बाहरी संरचना एवं वाक्य से निकटस्थ अवयवों को जानने के साथ ही साथ हमें कुछ ऐसी बातों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए जिनका वाक्य के संदर्भ में विशेष महत्व होता है।

सहप्रयोग

स्रोतभाषा के अनुसार लक्ष्यभाषा के वाक्यों में समानार्थी शब्दों के रखने से अनुवाद सफल नहीं हो जाता। शब्दों के प्रयोग की जानकारी, किसी शब्द के साथ

प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों की जानकारी, वह सब अनुवादक के लिए अनिवार्यत अपेक्षित है। उदाहरण के लिए.

नीचे खडे लोग परेशान हो रहे हैं। इसका अनुवाद अगर under standing people are suffering के रूप में है तो कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं कि यह अनुवाद कितना हास्यास्पद है। इसी तरह 'उनकी' आँखें चार हो गईं का अनुवाद Their eyes become four' के रूप में अगर किया जाय तो वह भी मज़ाद का हेतु बन जाएगा। 'आँखें चार हो जाने का मतलब है 'प्यार हो जाना' और love के संदर्भ में भी यहाँ आशय स्पष्ट कर लेना चाहिए।

लिंग, वचन, पुरुष, कारक

स्रोत एवं लक्ष्यभाषा में व्याकरणिक दृष्टि से लिंग का जो प्रयोग होता है उसकी जानकारी अनुवादक को रखनी चाहिए। अग्रेज़ी. की अपेक्षा हिन्दी में यह समस्या काफी जटिल है क्योंकि हिन्दी में लिंग भी वाक्य-रचना का एक आधार है। 'रूपविज्ञान' नामक अध्याय में इसपर विशेष विचार हो चुका है।

लिंग के प्रसंग में जितनी भी बातें शाधार्थी ने बताईं, वे सारी बातें वचन, पुरुष एवं कारक-चिह्नों के संदर्भ में लागू हो सकती हैं क्योंकि हिन्दी में इन सबका वाक्य-रचना के संदर्भ में भी महत्व हेाता है। 'पुरुष' के प्रकरण में यह क्हा जा सकता है कि अग्रेज़ी के प्रभाव के कारण, हिन्दी में इस दृष्टि से थोडा परिवर्तन आ गया है।

- He told me that he will do this

-उसने मुझसे कहा कि मैं यह करुँगा।

हिन्दी की प्रकृति के अनुसार अनुवाद इस तरह से होता था, लेकिन फिलहाल अग्रेज़ी के प्रभाव में इस तरह के अनुवाद का भी प्रयोग किया जा रहा है।

- उसने मुझसे कहा कि वह यह करेगा। हाँलाकि ये दोनों गलत नहीं माने जाते। लेकिन ध्यातव्य बात यह कि 'He told me his own name' - इसका अनुवाद उसने मुझे अपना नाम बताया - के ही रूप में हिन्दी में होगा, न कि उसने मुझे उसका नाम बताया।

प्रकारांतर से यहाँ पर यह भी कहा जा सकता है कि अग्रेज़ी के प्रभाव के कारण आए अनुवाद में अर्थांतर की भी गुंजाइश रहती है। ये दोनों वाक्य को लीजिए।

1. उसने मुझसे कहा कि मैं जाऊँगा।

2. उसने मुझसे कहा कि वह जाएगा।

इनमें से प्रथम वाक्य में भाव स्पष्ट है कि जो यह वाक्य कह रहा है, वही जा रही है। लेकिन द्वितीय वाक्य में ऐसा भी हो सकता है वाक्य कोई कह रहा हो और जा रहा हो कोई और। अनुवादक को ऐसी बातों से सावधान रहना चाहिए।

व्याकरण

व्याकरण भापा के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण होता है और अनुवाद करते समय स्रोतभाषा के वाक्यों में व्याकरणिक दृष्टि से परिवर्तन भी करना पडता है। इसका उल्लेख तो इसी अध्याय में पहले हो चुका है, अब उस बात को थोडा स्पष्ट किया जा रहा है।

1. He is a hard-working person.

वह अच्छी तरह से मेहनत करता है। - यहाँ स्पष्ट है कि व्याकरणिक दृष्टि से थोडा परिवर्तन आ गया है।

2. She is convent - educated

उसने शिक्षा कॉन्वेन्ट से प्राप्त की है।

यहाँ भी इस तरह का परिवर्तन द्रष्टव्य है।

काल

अनुवाद के संदर्भ में यह भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है कि भाव को स्पष्ट करने के लिए कभी कभी काल की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन कर लिया जाता है।

I'm going to resign that job - यहाँ वर्तमान काल का प्रयोग हुआ है,

लेकिन इशारा भविष्य की तरफ है। हिन्दी में इसकी आभिव्यक्ति इस ढंग से हो सकती है।

मैं वह नौकरी छोडने जा रहा हूँ।

इसके अलावा एक और उदाहरण बता दिया जा सकता है। सामान्य व्यवहार में हम कहते हैं कि 'लो, श्याम आया' यहाँ प्रयोग तो भूतकाल का हुआ है, लेकिन संकेत वर्तमान काल की तरफ है।

Syam is coming - यही इसका सही अर्थ होगा।

जोड-तोड

अनुवाद के संदर्भ में यह भी एक उल्लेख्य बात है कि कभी कभी वाक्य में जोड तोड कर लेना पडता है। निषेधवाचक वाक्यों का प्रयोग करते समय हिन्दी में अक्सर ऐसा होता है कि कुछ शब्द छोड दिए जाते हैं।

-I am not going today

मैं आज न जा रहा।

He doesn't take tea

वह चाय पसन्द नहीं करता।

- Is bus available from here to Delhi?

क्या यहाँ से दिल्ली को गाडी मिलती है ?

कभी कभी अनुवाद की दृष्टि से नए शब्दों को जोड देने की भी आवश्यकता पडती है। यथा:

That's a rented home - इसका अनुवाद दो तरह से किया जा सकता है।

1. वह किराये का मकान है।

2. वह किराये पर दिया जानेवाला मकान है।

दूसरे अनुवाद में हम देख सकते हैं यहाँ कुछ शब्दों को जोड दिया गया है।

अनुवाद के परिपार्श्व में 'संदर्भ' पर भी हमें पर्याप्त ध्यान होगा क्योंकि संदर्भ का कभी कभी वाक्य-रचना में विशेष महत्व होता है। उदाहरण के तौ पर साधारणत: 'Dead' शब्द का प्रयोग 'मृत' के अर्थ में होता है, लेकिन इस वाक्य में उसका अर्थ नितांत भिन्न है।

He is dead against to this policy - वह इस नीति के बिल्कुल खिलाफ है।

वाक्य-विज्ञान के प्रसंग में अनुवाद के कुछ विशिष्ट पक्ष

अनुवाद की दृष्टि से वाक्य भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है और इस संदर्भ में वाक्य की कुछ विशिष्टताओं को समझना सर्वथा ज़रूरी भी है।

'ने' का प्रयोग वाक्य-विज्ञान के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिसे समझना

अनुवादक के लिए सर्वथा अनिवार्य भी है। भूतकाल के विभिन्न प्रकारों में 'ने' का प्रयोग कहाँ कहाँ होता है - इसपर विचार हो चुका है। अत: शोधार्थी उसे दोहराना नहीं चाहता।

संबंधसूचक शब्दों या कारकों का लोप हिन्दी में कभी कभी होता है तो अग्रेज़ी में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए,

'वह पैदल आया' के लिए, अग्रेज़ी में अनुवाद मिलता है 'He came on foot'.

यह अग्रेज़ी की एक विशेषता है कि यहाँ कारक कई बार शब्दों के क्रम से जाने जाते हैं।

The government has expelled Sri. Raj Sinha from the cabinet for three years.

सरकार ने श्री राज सिन्हा को मंत्रिमंडल से तीन वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया।

अग्रेज़ी में प्रत्यक्ष कर्म के साथ 'to' नहीं लगाया जाता जबकि अप्रत्यक्ष कर्म के साथ 'to' लगा लिया जाता है।

उदा He wrote a letter to his father

उसने अपने पिताजी को एक पत्र लिखा।

He wrote his father a letter.

उसने अपने पिताजी को एक पत्र लिखा।

अंग्रेज़ी के करण (instrumental) कारक के लिए हिन्दी में 'से' का प्रयोग होता है, अर्थात् 'with, by' के लिए 'से' का प्रयोग किया जाता है। लेकिन हिन्दी में इस 'से' के कई प्रयोग प्राप्त होते हैं।

1. He was seething with anger

वह गुस्से से उबल रहा था।

2. He come by bus

वह बस से आया।

3. We like to eat with fingers

हम ऊँगलियों से खाना पसंद करते हैं।

4. Anil is better than Ramesh

अनिल रमेश से अच्छा है।

कभी कभी वाक्यविज्ञान के संदर्भ में अनुवाद करने की कोशिश करते करते अनुवादक परेशान हो जाता है। दो वाक्यों को ले लीजिए।

1. It is a better than the best.

2. इन्दीरागाँधी भारत की कितवीं प्रधानमंत्री थी?

इन वाक्यों का भाषागत अनुवाद तो हो सकते है, लेकिन निश्चय है कि ये वाक्य अनुवाद में पूर्णत; उतर नहीं पाते।

शैली के अनुसार अग्रेज़ी में कभी कभी वाक्य भी बदल जाता है तो हिन्दी में ऐसा नहीं, देखा जाता। उदाहरण के लिए, आप कहाँ जा रहे हैं के लिए दो वाक्यों का प्रयोग।

1. Where are you going?

2. What's your destination?

अनुवाद करते समय कभी कभी शब्दों के क्रम में परिवर्तन आ जाता है, अर्थात् वाक्य में आद्यांश अंत में और अन्त्यांश आद्य में आने लगता जैसे,

There are many religions in India

(1) (2)

भारत में कई धर्म हैं।

(2) (1)

'I was reading the book' - हिन्दी में इसके दो अनुवाद संभव हैं।

1. मैं किताब पढ रहा था।

2. मैं किताब पढता था।

अनुवाद में आए इन दो वाक्यों पर नज़र डालने से पता चलता है कि इनके अर्थ में थोडा अंतर है। ऐसा लगता है कि पहला वाक्य किसी बात की तरफ संकेत कर रहा है और द्वितीय वाक्य किसी साधारण क्रिया का बोध दे रहा है। दोनों समान भाव का द्योतन नहीं करते।

अग्रेज़ी भाषा के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि यहां अकर्तृवाची स्थितियाँ हिन्दी से कम प्राप्त हो जाती है। इससे अनुवादक के मार्ग में शैलीगत कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। अग्रेजी की एक वाक्य ले लीजिए।

I cannot sing here. हिन्दी में इसके प्रमुखत: दो अनुवाद संभव हैं।

1. मैं यहाँ गा नहीं सकता।

2. मुझसे यहाँ गाया नहीं जाता।

सरसरी निगाह से देखने पर इन दोनों वाक्यों के अर्थ में अंतर तो लक्षित नहीं होता, लेकिन ध्यान से देखने पर मालूम हो जाता है कि प्रथम वाक्य का संबंध 'विवशता' से भी हो सकता है और द्वितीय का संबंध 'असहनीय स्थिति' से भी। तात्पर्य यहाँ यह है कि प्रथम में स्वयं अपनी मज़बूरी ज्यादा काम करती है तो द्वितीय में परिस्थितियाँ ही मज़बूरी पैदा करती हैं।

धारावाहिकों का अनुवाद करते समय या फिल्म 'डब्' करते समय अनुवादक को काफी कठिनाइयों का सामना करना पडता है क्योंकि वहाँ समय बहुत महत्वपूर्ण होता

है। प्रत्येक भाषा की वाक्य- रचना की अपनी विशेषताएँ होती हैं जिन्हें समयानुसार बाँधना एकदम मुश्किल है। इसी तरह से वाक्य में क्रिया, क्रियाविशेषण, विशेषण इन सबका यथास्थान प्रयोग करना चाहिए, नहीं तो अर्थ अनर्थ बन सकता है।

1. फलों का ताज़ा रस

2. ताज़ा फलों का रस देखिए कि इनमें अर्थांतर कहा तक आ गया है।

वाक्य का चरम लक्ष्य संप्रेषणीयता है और इसीको दृष्टि में रखकर अनुवाद करने की कोशिश की जानी चाहिए। प्रकारांतर से यह भी कहा जा सकता है कि मौखिक अनुवाद के संदर्भ में वाक्य विज्ञान की दृष्टि से समस्याएँ अपेक्षाकृत कम होती हैं।

निष्कर्ष

वाक्य-निर्माण के विविध-पक्षों के आलोक में अनुवाद पर विचार करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि एक तरफ भाषाविज्ञान के प्रत्येक तत्व से संबंध स्थापित करते हुए वाक्य-रचना का विकास हो रहा है तो दूसरी तरफ अंग्रेज़ी से प्रभावित होने की संभावना भी इसमें बनी रहती है। वाक्य-रचना के संदर्भ में अनुवाद पर विचार करने के उपरांत ऐसा महसूस होता है कि, इस प्रसंग में जितनी भी कठिनाइयाँ हमारे सामने आती हैं, वे सारी कठिनाइयाँ, भाषाविज्ञान के अन्य तत्वों के साथ संपृक्ति के कारण होती हैं। वाक्य-निर्माण की पद्धतियों का संबंध व्यक्तिगत

मानसिकता से भी रहने के कारण समस्याएँ इस संदर्भ में उपस्थित होती हैं। वाक्य-विश्लेषण की विभिन्न प्रणालियों का मानसिकता से जो संबंध रहता है, वह भी समस्या का एक कारण हो सकता है। किसी भी भाषा की वाक्य-रचना का, उसी भाषा की विशिष्टताओं के परिदृश्य में अध्ययन व विश्लेषण किये जाने पर, समस्याएँ एक हद तक सुलझी जा सकती हैं।

षष्ठ अध्याय

अनुवाद एवं लिपिविज्ञान

भाषा एवं उससे संबद्ध अनुवाद पर विचार करते समय लिपि की तरफ ध्यान देना भी सर्वथा अनिवार्य है क्योंकि भाषा एंव लिपि का अटूट संबंध रहता है। इस संबंध को इस तरह से व्यंक्त किया जा सकता है कि भाषा मूलत: ध्वनियों पर अधिष्ठित है तो उन ध्वनियों को रेखाओं के माध्यम से स्पष्ट करने के लिए लिपि की आवश्यकता रहती है। दो भाषाओं से आबद्ध अनुवाद के प्रंसग में लिपि की कितनी आवश्यकता हो सकती है, इसका खुद अंदाज़ा लगा दिया जा सकता है।

यह तो स्पष्ट है कि अनुवाद के मुख्यत: तीन प्रकार होते हैं।

1. लिखित अनुवाद
2. मौखिक अनुवाद
3. मशीनी अनुवाद

इनमें से लिखित एवं मशीनी अनुवाद के संदर्भ में लिपि की अपेक्षा होती है। मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में लिपि की अनिवार्यता, मशीन की गतिविधियों से ही संबद्ध है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो मशीनी अनुवाद को सार्थक करने में लिपि की भी भूमिका रहती है।

यहाँ पर अगर यह भी कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी कि अनुवाद के संदर्भ में ध्वनिविज्ञान से संपृक्त जितनी भी समस्याएँ हैं, वे सारी समस्याएँ प्रकारंतर से लिपि

से भी आबद्ध है। अग्रेज़ी एवं हिन्दी के परिदृश्य में दोनों की लिपियों की विशिष्टताओं को समझने पर यह और भी स्पष्ट हो जाएगी। अग्रेज़ी रोमन लिपि में लिखी जाती है और सर्वप्रथम हम इस लिपि की तरफ दृष्टिनिक्षेप करेंगे।

रोमन लिपि

रोमन लिपि विश्व की सबसे महत्वपूण लिपियों में से एक है जिसकी उत्पत्ति पुरानी सामी लिपि की उत्तरी शाखा से हुई है। यह लैटिन लिपि के नाम से भी जानी जाती है। यह एक वर्णात्मक लिपि है और इस कारण से ज्यादा वैज्ञानिक भी है। हिन्दी भाषा की लिपि 'नागरि' से तुलना करते समय इसकी कुछ कमियाँ भी सामने आती हैं कि हिन्दी की 'श, य, थ, द' आदि के लिए रोमन लिपि में एकाधिक अक्षरों का प्रयोग करना पडता है, जैसे 'Sh, tio, ch, th' । यही नहीं 'I, u, o, e, a' आदि कुछ स्वरों तथा 'th, ch आदि संयुक्त व्यंजनों का उच्चारण भी यहाँ निश्चित नहीं है। 'th' कहीं 'थ' का काम करते हैं तो कहीं 'द' का।

यथा thought - थॉट

the द

'i' की भी स्थिति लगभग इसके समान है। जो भी हो, अपेक्षित सुधार किया जाय तो इस लिपि की वैज्ञानिकता और भी बढ़ सकती है।

अब हम हिन्दी की लिपि देवनागरी की विशिष्टताओं को समझने की कोशिश करेंगे।

देवनागरी :

ब्राह्मी लिपि की उत्तरी शैली से चौथी सदी में गुज लिपि का विकास हुआ। गुप्तलिपि से विकसित कुटिल लिपि से प्राचीन नागरी की उत्पति हुई और प्राचीन नागरी से आधुनिक देवनागरी का विकास हुआ है।

'नागरी' लिपि के इस नाम के विषय में कई प्रकार के मत प्रचलित हैं। कुछ लोग मानते हैं कि गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा विशेषत: प्रयुक्त हो जाने के कारण इसे 'नागरी' नाम प्राप्त हुआ है। अन्य एक धारणा यह है कि प्रमुखत: नगरों में प्रयुक्त होने के कारण इसका नाम 'नागरी' पड गया। कुछ लोग 'नाग' से 'नागर' का संबंध जाडते हुए यह कहते हैं कि यह वो लिपि है जो 'ललितविस्तर' में 'नाग लिपि' के रूप में उल्लिखित है। अन्य एक मत के अनुसार 'देवनगर' याने 'काशी' में प्रचरित होने के कारण यह 'देवनागरी' कहलाई। कुछ लोगों ने ऐसा माना है कि चतुर्भुज आकृतियों पर अधिष्ठित स्थापत्य की एक शैली 'नागर' के कारण 'देवनागरी' का यह नाम प्राप्त हो गया क्योंकि 'देवनागरी' में चतुर्भुज (प, भ, म..... आदि) अक्षरों के प्रति ज्यादा झुकाव है।

जो भी हो हम यही कहेंगे कि उपर्युक्त सभी कारणों से 'देवनागरी' का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध रहता है, अत: इन सबको, इस लिपि को प्राप्त नाम के आधार मानना ही उचित होगा।

देवनागरी लिपि की विशेषताओं पर नज़र डालते समय सर्वप्रथम हमारे सामने यह बात आती है कि यह एक आक्षरिक लिपि है। इसका कारण यह है कि भाषा में प्रयुक्त सभी स्वरों एवं व्यंजनों के लिए इसमें अलग अलग लिपिचिह्न नहीं हैं। उदाहरणार्थ क, ख, ग आदि व्यंजन, जिनमें स्वर भी मिले हुए हैं। इस लिपि में भाषा-विशेष में प्रयुक्त हर ध्वनि के लिए लिपि-चिह्न नहीं है उदाहरण के लिए इसमें दंतोष्ठ्य 'व' के लिए चिह्न नहीं है। इस लिपि में एक चिह्न से सिर्फ एक ध्वनि व्यक्त नहीं होती। 'व' एक ऐसा चिह्न है जिससे एकाधिक ध्वनियाँ व्यक्त होती हैं। देवनागरी में एक ध्वनि के लिए, हमेशा एक ही लिपिचिह्न नहीं है। उदाहरण के लिए रि ऋ श, ष। इस लिपि के कुछ चिह्न ऐसे हैं जिन्हें देखकर एक दूसरे का भ्रम होता है। यथा (म, भ) (ध, घ) आदि। इस लिपि में लिपि चिह्न उस क्रम में नहीं आते, जिस क्रम से उनका उच्चारण किया जाता है। उदाहरण के लिए, इ, उ, ऊ, ए, ऐ की मात्राएँ यथाक्रम नहीं आतीं।

हिन्दी, अग्रेज़ी भाषाएँ व लिपि

हिन्दी एवं अग्रेज़ी भाषाओं के संदर्भ में दोनों की लिपियों की विशेषताओं पर दृष्टि डालते समय कुछ बातें सामने आती हैं जिनपर प्रकाश डालना भी इस संदर्भ में उचित रहेगा।

सर्वप्रथम बात तो यह है कि इन दोनों भाषाओं के सामान्य लेखन में प्रयुक्त लिपि तथा टंकण-यंत्र, संगणक आदि के संदर्भ में प्रयुक्त लिपि में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है, जिस कारण से कभी कभी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी की 'झ' और अग्रेज़ी की 'i' इन ध्वनियों को पहचानने में कभी कभी कठिनाई होती है क्योंकि संगणक में इनका रूप ही अलग है।

अंकों को सूचित करने के प्रसंग में इन लिपियों पर दृष्टिनिक्षेप किया जाय तो कहा जा सकता है कि देवनागरी में अंकों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उनमें एकरूपता नहीं है। समय समय पर परिवर्तित होते रहने के कारण इस दृष्टि से कभी भ्रम भी पैदा हो सकता है। विशेषत: आठ, नौ अंकों को सूचित करने के संदर्भ में। इस दृष्टि से रोमन लिपि 'में व्यावहारिकता का अंश ज़्यादा है और हिन्दी भाषा के संदर्भ में भी अंकों में सूचित करने के लिए रोमन लिपि के सहारा लेने का कारण भी वस्तुत: और कुछ नहीं है।

यहाँ पर यह भी संगत है कि अग्रेज़ी से प्रभावित होने के कारण देवनागरी में कुछ और लिपिचिह्न आ गए हैं जैसे कि College, office आदि के लिप्यंतरण के संदर्भ में प्रयुक्त किया जानेवाला 'ऑ'

College - कॉलिज - ऑ

Office - ऑफिस - ऑ

अग्रेज़ी के प्रभावस्वरूप पूर्णविराम को सूचित करने के लिए हिन्दी में एक पाई या दो पाइयों के स्थान पर बिन्दु का भी प्रयोग होने लगा है।

उसने कहा था।

उसने कहा था

अग्रेज़ी एवं हिन्दी की लिपियों के बीच का एक मुख्य अंतर यह भी कहा जा सकता है कि अग्रेज़ी में जहाँ मोटे एवं छोटे अक्षरों का (capital and small letters) प्रयोग किया जाता है और छोटे अक्षरों को (ध्वनियों को) मिला जुलाकर लिखने की पद्धति प्रचलित होती है वहाँ हिन्दी में ऐसा नहीं होता।

1. INDEPENDENT INDIA

2. independent india

3. Independent India

इतना होने के बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि लिपि की दृष्टि से अनुवाद को असाध्य कर देनेवाली ऐसी कोई कठिनाई इस क्षेत्र में नहीं है। थोडी सावधानी बरत ली जाय तो लिपि से आवश्य कठिनाइयाँ ऐसे ही दूर हो जाती हैं।

रोमन एवं नागरी लिपि की पारस्परिक तुलना

रोमन एवं नागरी लिपि की तुलना करते समय हम इस बात से अवगत हो जाते हैं कि प्रयोग की दृष्टि से नागरी में रोमन की अपेक्षा सुविधा का अंश ज्यादा है। सर्वप्रथम बात तो यह है कि नागरी में वर्णमाला का वर्गीकरण व्यवस्थित ढंग से किया गया है। अर्थात् स्वर और व्यंजन इसमें अलग अलग हैं। ह्रस्वता, दीर्घता, घोषत्व-अघोषत्व, प्राणत्व एवं अनुनासिकता के परिप्रेक्ष्य में भी इसमें वैज्ञानिकता का समावेश ज़्यादा रहता है।

अ, आ (ह्रस्व, दीर्घ, साथ, साथ)

इ, ई (ह्रस्व, दीर्घ साथ साथ)

व्यंजनों की दृष्टि से देखा जाय तो,

क ख ग घ ड़ - में प्रथम दो अघोष हैं अंतिम तीन घोष। यही नहीं प्रथम, तृतीय एवं पंचम अल्पप्राण हैं तो द्वितीय एवं चतुर्थ महाप्राण हैं। अनुनासिक व्यंजन अंत में रखें गए हैं।

नागरी लिपि की एक अन्य खासियत यह कही जा सकती है कि इसमें जो लिपि-चिह्न जिस ध्वनि को सूचित करता है, उसका उच्चारण भी उसीके अनुरूप होता है। जैसे कि क, म, च, का उच्चारण। 'रोमन' में स्थिति ऐसी नहीं है, वहाँ अतंर तो आता है, देखिए कि 'H' - एच का भी काम करता है और 'ह' का भी।

आम तौर पर कहा जाय तो एक ध्वनि के लिए एक लिपि-चिह्न की व्यवस्था किसी भी भाषा में ठीक तरह से न हो पाई है, लेकिन इस दृष्टि से नागरी, रोमन लिपि से कहीं ज्यादा आगे है। ऋ, रि, श, ष को छोडकर दूसरी ध्वनियों के संदर्भ में नागरी में एक तरह की व्यवस्था प्राप्त हो जाती है जबकि रोमन लिपि में इस तरह की अव्यवस्था के बहुत सारे उदाहरण हमें मिल जाते हैं।

यथा : क ध्वनि के लिए k, एवं c का प्रयोग

फ के लिए F एवं Ph का प्रयोग

प्रकारांतर से यहाँ पर यह भी कह सकते हैं कि जहाँ रोमन लिपि में एक लिपि-चिह्न से एकाधिक ध्वनियाँ व्यक्त होती हैं। जैसे

a - अ, आ, ए

c - क, ष, आदि

वहाँ नागरी में अपेक्षाकृत इस दृष्टि से कोई समस्या नहीं है, यदि ऐसा कह दें कि कोई समस्या ही नहीं है तो वह अत्युक्ति न होगी।

लिपि चिह्नों की पर्याप्तता की दृष्टि से भी नागरी रोमन लिपि के आगे है। इसे यों व्यक्त किया जा सकता है।

Sabha - इसका उच्चारण रोमन में 'सभा' भी हो सकता है और 'सब्हा' भी।

इस अवसर पर यह भी कहा जा सकता है कि नागरी में ह्रस्व, दीर्घ के लिए अलग अलग चिह्न हमें प्राप्त हो जाते हैं, जबकि रोमन में यह विशेषता नज़र नहीं आती। जैसे,

रोमन में 'saji' - सजी भी हो सकता है और साजी भी।

व्यंजनों के साथ स्वरों के मात्रा-रूपों का प्रयोग होना भी नागरी की एक खासियत कही जा सकती है।

यथा,

लाल

मधुर आदि.....

इन सबके अतिरिक्त उच्चारण के ख्याल से चिह्नों की रूपिक समानता और सुपाठ्यता भी देवनागरी की विशेषताएँ कही जा सकती हैं। समवेतत: कह दिया जाय तो वैज्ञानिकता की दृष्टि से कमियाँ होने के बावजूद भी प्रयोग की सुविधा की दृष्टि से नागरी लिपि रोमन लिपि से भी ऊँचे स्थान पर है।

परिवर्तन व परिवर्द्धन की दृष्टि से नागरी लिपि

इसमें सन्देह नहीं कि अतंर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली के लिप्यतंरण के संदर्भ में लिपि की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में लिपि का महत्व वर्तनी एवं उच्चारण की दृष्टि से स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की विशिष्टताओं को आत्मसात् करने और उनमें सामंजस्य लाने की पृष्ठभूमि में निर्धारित किया जाता है। यह सही है कि समय समय पर देवनागरि लिपि में सुधार होता रहा है और संगणक आदि में कई ऐसी ध्वनियाँ प्रयोग में आई हैं जो पहले अप्रयुक्त थी (क, र, न) समय की तेज़ रफतार में, पारिभाषिक शब्द के निर्माण के संदर्भ में लिप्यंतरण, अनुलेखन की आवश्यकता बढने के साथ ही साथ लिपि का विकास भी होता रहेगा और अनुवाद के साथ उसका संबंध भी गहरा होता चलेगा।

निष्कर्ष

लिपि भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और इस भूमिका के वैशिष्ठ्य को निर्धारित करने के कई प्रसंगों में, अनुवाद का भी एक महत्वपूर्ण प्रसंग होता है। पारिभाषिक शब्दों के लिंप्यातरण की आवश्थकता के बढने के साथ ही साथ लिपि के साथ अनुवाद का संबंध भी बढता चला जाएगा और ऐसा कहना भी गलत नहीं होगा कि अनुवाद की दृष्टि से समय समय पर लिपि का विकास भी होता रहा

है। ऐसी ध्वनियाँ फिलहाल प्रयोग में आने लगी हैं जो पहले हिन्दी से दूर थीं। यह खुशी की बात है कि मशीनी अनुवाद के प्रचार में आने के वाद इस सिलसिले में वहुत कार्य होने लगे हैं।

उपसंहार

यह तो सर्वविदित है कि अनुवाद का संबंध दो भाषाओं से है और दोनों भाषाओं की विशिष्टताओं को भाषावैज्ञानिक संदर्भ में समझना, अनुवाद को सफल बनाने के लिए सर्वथा अनिवार्य भी है। अनुप्रयुक्त, व्यतिरेकी एवं तुलनात्मक भाषाविज्ञान से आबद्ध अनुवाद की समस्याओं को ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप, वाक्य, लिपि आदि भाषाविज्ञान के प्रमुख इकाइयों के परिदृश्य में विश्लेषित करने का प्रयास शोधार्थी ने इस शोध-प्रबन्ध में किया है।

अनुवाद एवं भाषाविज्ञान के बीच की निकटता को दो आधारों पर समझा जा सकता है, पहला है स्रोत एवं लक्ष्य भाषा की विशेषताओं का आधार और दूसरा है मूल एवं अनूदित रचना की विशिष्टताओं का आधार। अनुवादक को इन दोनों आधारों से निकट संबंध स्थापित करते हुए, इन सबके बीच एक तरह का संतुलन या तालमेल बनाए रखना पडता है जो उसके कार्य को एकदम कठिन बना देता है। इस शोध प्रबंध में शोधार्थी ने व्यावहारिक दृष्टि से, भाषावैज्ञानिक धरातल पर, अनुवाद के संदर्भ में उपस्थित होनेवाली समस्याओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

षष्ठ अध्यायों में विभक्त शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में अनुवाद के स्वरूप, उसकी प्रक्रिया एवं भाषाविज्ञान के साथ उसके संबंध पर विचार करते हुए, उसकी समस्याओं पर सरसरी निगाह डालने की कोशिश की गई है। इसमें कोई तर्क नहीं कि भाषा के वैज्ञानिक तत्वों के प्रति पर्याप्त ध्यान देकर अनुवाद करने की अगर कोशिश की जाय तो निश्चय ही वह सफल हो सकता है, लेकिन यह उतना आसान नहीं जितना

कि हम सोचते हैं। कारण यह कि भाषा के वैज्ञानिक पक्ष का विकास प्रत्येक भाषा में प्रत्येक ढंग से होता है, आधारभूत तथ्य एक होने के बावजूद भी यहाँ एकरूपता का अभाव है। यथासाध्य प्रयास ही इस प्रसंग में आसरा बन सकता है।

अनुवाद के प्रसंग में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की ध्वनियों पर दृष्टि रखते हुए, ध्वनिविज्ञान के परिपार्श्व में अनुवाद की समस्याओं को समझने की कोशिश शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय में की गई है। भाषिक विशिष्टताओं के आलोक में, संप्रेषणीयता के धरातल पर ध्वनिविज्ञान पर विचार करने से इससे आबद्ध अनुवाद की समस्याओं का समाधान एक हद तक किया जा सकता है।

तृतीय अध्याय में अनुवाद की शब्दवैज्ञानिक एवं अर्थवैज्ञानिक समस्याओं पर दृष्टिनिक्षेप किया गया है। इस अध्याय में शब्द एवं अर्थ पर साथ साथ विचार किया गया है क्योंकि ये दोनों परस्पर एक दूसरे के पूरक तत्व हैं। शब्द-रचना की जितनी भी प्रणालियाँ हैं, उनकी उन्मुखता अर्थ की तरफ रहती हैं या अर्थ को केंद्र में रखकर ही शब्द बनाने की विधियाँ निर्णीत की जाती हैं। शब्द एवं अर्थ को परस्पर एक दूसरे से आबद्ध मानकर, उस संदर्भ में अनुवाद को समझने की कोशिश करने से इस क्षेत्र से संबद्ध उलझनें काफी हद तक सुलझी जा सकती हैं।

चतुर्थ अध्याय में रूपविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की समस्याओं को विश्लेषित करने की कोशिश की गई है। रूपविज्ञान के साथ व्याकरण की निकटता और इससे संपृक्त अपवाद-यह सब इस दृष्टि से अनुवाद के मार्ग में कठिनाइयाँ पैदा कर देते हैं और अनुवाद की सावधानी ही इस अवसर पर सहायक बन सकती है।

पंचम अध्याय में वाक्य-विज्ञान के परिदृश्य में अनुवाद की समस्याओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। भाषाविज्ञान के अन्य सभी तत्वों का अस्तित्व वाक्य-विज्ञान के संदर्भ में निर्धारित किए जाने के कारण, इसमें जिन मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है, उनका संबंध अन्य अध्यायों से भी रहा है। वाक्य-गठन के प्रति अनुवादक का ध्यान बराबर जाना चाहिए क्योंकि वाक्य ही वह प्रमुख अंग है जो संप्रेषण को सुगम बना देता है।

अंतिम अध्याय में लिपि की दृष्टि से अनुवाद की समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है और इस संदर्भ में जो सुधार अपेक्षित है, उस तरफ भी नज़र डाल दी गई है।

इस प्रकार ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप, वाक्य, लिपि आदि भाषा की प्रमुख इकाइयों के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद पर विचार करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि अनुवाद एक ऐसा कार्य है जिसका संबंध इन तत्वों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में रहता है। स्रोत एवं लक्ष्यभाषा की जानकारी के साथ साथ भाषावैज्ञानिक तत्वों का यथानुकूल ज्ञान भी अनुवाद की सफलता के लिए अनिवार्य है और इस प्रसंग में इस बात पर ध्यान दें कि भाषावैज्ञानिक तत्वों को उसी रूप में अनुवाद पर लागू करने के बजाय व्यावहारिक दृष्टिकोण से इसपर विचार करें।

सहायक ग्रंथ-सूची

सहायक ग्रंथ-सूची

हिन्दी ग्रथ

अर्थ विज्ञान - ब्रजमोहन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, (प्र. सं - 1989)

अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दाकार, दिल्ली सं. स. 1989

अनुवाद कला - डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - प्र.स. 1990

अनुवाद कला कुछ विचार आनन्द प्रकाश खेमाणी, एस चंद एण्ड कंपनी, दिल्ली - प्र.स. 1964

अनुवाद की व्यावहारिक समस्यायें - डॉ. भोलानाथ तिवारी , डॉ. ओमप्रकाश गावा, शब्दाकार, दिल्ली प्र.स. 1978

अनुवादः भाषाएँ एवं समास्यायें डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, ज्ञान गंगा दिल्ली, 1992

कार्यालय पद्धति - डॉ. जयरामन, चंड प्रिटिगं एवं. पैकिंग, लखनउ. प्र. स. 1988

कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग की दिशाएँ - उमा शुक्ल (संपादक) लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद, प्र.स. 1990

पारिभाषिक शाब्दावली - कुछ समष्यायें- डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. महेन्द्र चर्तुर्वेदी, शब्दाकार, दिल्ली, प्रथम गन्द

प्रयोजन मूलक हिन्दी - डॉ. डगल झाल्टे, विद्या विहार, नई दिल्ली, प्र. स. 1987.

प्रोयागिक अनुवाद विज्ञान - डॉ. मनोहर सराफ, डॉ. शिवांन्त गोस्वामी, विद्या प्रकाशन, भ्रानपूर, प्र. स. 1992.

भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताव महल, इलहाबाद, प्र.स. 1951.

सामान्य भाषा विज्ञान बावू राम, सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्र. स. 1983.

हिन्दी भाषा का रूपिमीय विश्लेषण - डॉ. लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा, अंशुकमल, प्रकाशन पाटना, प्र. स. 1983

अग्रेज़ी ग्रंथ

Scientific and technical translation - Richard. W

The art of Translation — R. Raghunath Rao, Bharadiya Anuvad Parishad

Language — Leonard Bloomlied, National Banarasidas Publication Pvt. Ltd., Delhi, प्र. स. 1990

शब्दकोश

आधुनिक हिन्दी शब्द कोश - डा. गोविंद - तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली. प्रं.स. 1986

बृहद पारिभाषिक शब्द संग्रह (विज्ञान खड) — वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली, प्र.स. 1973.

बृहद् पारिभाषिक शब्द सग्रह (मानविकी खंड) - वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली, प्र.स. 1973.

पत्रिकाएँ

अनुवाद - भारतीय अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली, अकं. 1, मार्च 1989

अनुवाद - भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, अकं 62, जनवरी-मार्च, 1990

भाषा - केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा तथा कल्याण, मत्रालय, भारत सरकार, मार्च-1978.